मांझल रात

लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन
फिल्म कॉलोनी, जयपुर-302003

संस्करण : 1984

मूल्य : तीस रुपया

मुद्रक : शीतल प्रिन्टर्स
फिल्म कॉलोनी, जयपुर-302003

समर्पण

मोड़ू दादा,

बाळपणां में थारी गोद में खेलतां थारा मूंडा सूं ख्यातां अर वातां घणी सुणीं। कदे ही थूं राजी करवा ने सुणावतो, कदे ही म्हूं जिद्द कर सुणती।

यां वातां री मेहमा तो यां वातां रा धणियां रा नाम अर काम सूं है पण यां री भासा अर भाव थारो सिखायोड़ो है।

धाभाई दादा, वातां रा ईं संग्रह ने थारी याद ने समर्पित कर री हूं।

लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

भूमिका

आंपणी राजस्थानी भासा, राजस्थान री धरती अर इतिहास री तरैं हीज सवळ नैं क्षमतावान है। आंपणां गीतड़ा अर भींतड़ा जतरा कीरत उजागर है वसीज मरम भरी ख्यातां अर वातां है।

राजस्थानी काव्य तो जगत चावो है, देस विदेस री घणी खरी भासावां में राजस्थानी काव्य रो अनुवाद व्हीयो है पण गद्य साम्हो ध्यान ही नीं दीवो, ईं वास्ते राजस्थानी गद्य रा गुण लोगां री जांण में आणां चावै जस्या आया नीं।

राजस्थानी वातां री सैली आपरा ढंग री अनोखी है। ईं पोथी में म्हूं म्हारी आधुनिक राजस्थानी में लिख्योड़ी चवदा मौलिक वातां नजर कर री हूं।

राजस्थान री जूनी परंपरा अर इतिहास ने अळगो राख नै वातां लिखणों तो एक राजस्थानी लेखक सारू नामुमकिन ही नीं पण अणखांवणो भी लागै। राजस्थान री संस्कृति अर परम्परा अतरी ओज सूं भरयोड़ी है के कोई वात लिखै अर जींमें यां रो परतवंब नीं झलकै तो वा वात राजस्थान सूं अळगी अळगी अर अपरोगी लागै।

राजस्थानी रो तो एक एक आखर इतिहास है। वात कैवा रो अर लिखवा रो म्हारो जूनो सौक है। हालतांईं जतरी वातां म्हैं लिखी है वे सगळी राजस्थानी संस्कृति अर राजस्थानी वीरता सूं रळयोड़ी है।

राजस्थान में सूरमां अर सतियां हीज नीं अठा रा तो धाड़ायतियां रो ही चरित्र रो दर्जो एक अजब रियो है।

भारत में राजस्थान रो जो महत्वपूर्ण स्यान है वस्यो ही स्यान भारतीय भासावां में राजस्थानी भासा रो है। राजस्थानी रा एक एक सबद रे लारै एक एक इणखेत बोलै, पींढ्यां रो पराकरम झांकै।

म्हारी लिख्योड़ी वातां में सूं थोड़ी सी ये वातां विदवानां रे आगे मेल री हूं। यां रा उपमान, उपमेय, विशेषण, विशेष्य, चरित्र अर वर्णन सैली वगैरा सगळी राजस्थान री आप री अर आप री परंपरा री है। म्हें यां वातां ने रात दिन आंपणै घरां मे बोला जीं भासा में लिखी है।

राजस्थानी में वातां कैवा री अर लिखवा री परंपरा घणी जूनी है। राजस्थानी गद्य में लिख्योड़ी वातां अर ख्यातां सोळवीं सताब्दी सूं मिलै। सत्तरवीं अर अट्ठारवीं सताब्दी में तो वात कैवा री अर लिखवा री कळा वराबर तरक्की करती री, घणो परचार व्हीयो। यां साढा तीनसौ चारसौ वरसां में हजारां वातां लिखी गी।

आजकाल हिन्दी में जो का'ण्यां या वातां लिखी जे वांरो लहजो बंगाळी अर अंगरेजी भासा सूं लीधो है। बंगाळी भासा में जो वातां लिखी गी वांरो ढंग सूधो अंगरेजी सूं लियोड़ो है। अंगरेजी रे देखांदेख बंगाळी मे ईं तरै सूं वातां लिखणो सरू व्हीयो, बंगाळी री नै अंगरेजी री नकल हिन्दी में कीधी गी पण राजस्थानी वातां री सैली अर ढंग बिलकुल मौलिक अर जूनो है। सुरू करवा रो ढंग, खतम करवा रो कायदो, वरणन करवा री प्रथा सगळी री सगळी आंपणी है, कोई दूजी भासा री छाप कोयनी।

राजस्थानी में तीन भांत री वातां व्हे। एक तो गद्य में, दूजी पद्य में तीजी भांत री वातां गद्य पद्य मिल्योड़ी व्हे। वातां भांत भात रा विसय माथै लिख्योड़ी है। देवी देवता, पर्व तिवार, भूत प्रेतां री, सिकार माथै घणी वातां, सूर ना'र रा झगड़ां री, सिकार कतरी भांत री व्हे, कियां करीजे यो वरणन यां वातां में घणों विस्तार सूं कह्योड़ो है। सूर ने एक सूरमा रो प्रतीक मान सूर अर भूंडण री वातचीत में एक वीर पुरस रा मन री, इच्छा री अर विचारां री तसवीर सी खैंची है। धाड़ायतियां री हिम्मत री वातां, चोर अर ठगां री चतराई री वातां घणी सुवावणी है। चोर अर ठगां कसी कसी सफाई सूं आप री कळा रा हाथ बताया, घणी रोचक है। अकेला खापरिया चोर री घणी वाता लाधै। एक सूं एक बढिया चालाकी अर चोरी री तरकीबां री।

गप्पां रो ही टोटो नीं। असी असी गप्पां हांकी है के सूझ पै अचम्भो आवै। बणजारा, कतारिया, सेठ साहूकार, पसु पंछी, डाकण्यां, जोगण्यां, सोखता, पोखता, इन्दर री परियां, टाबरां री वातां वगैरा अतरी है के जांरो पार नीं। धरम नीति री वातां ने ही असी मनोरंजक बणाय दीधी के सुणतां ओरणी नीं आवै।

सूरवीरां री अर रणखेतां रे वातां कैवतां कैवतां तो राजस्थानी कदे धाप्या ही नी। वीर रस रो लारै रो लारै शृङ्गार चालै, प्रेमी प्रेमिकावां री वातां रा तो खजाना भरया।

ये वातां जसी मनलुभावरण है वस्यो ही चित हरखावरण यां रे कँवा रो ढंग है। कँवा रो ढंग अतरो जानदार, जोरदार अर सुवावणो है के सुणवा वाळो सुणतो हीज रै जावै, ऊठवा रो जीव नीं करै। यां वातां री वरणन सक्ति तो गजब री है, वात कांई कैवे चित्तर उतार दे। कोई वात रो कैवण्यो व्हे अर वात जमावै जीं वगत सुणवा वाळा ने यूं लागै जांणै दूजा लोक में परा गिया हां। एक पल में हंसावै, दूजा पल में रोवणों आवै, तीजा पल में रीस सूं कटकटियां भींचवा लागै। वीरता रो वरणन करै तो रूंम रूंम ऊभो व्हे जावै। एक दांण तो कायर रो हाथ ही तरवार री मूंठ पै जाय पड़ै। वात रो वो छप्पर वांधै के सुणवा वाळा चतराम री फूतळ्यां व्हे ज्यूं वैठा रै जावै।

एक जणों वात कै जठे वस्यो ही लारै हूंकारो देवण्यो चावै। हूंकारा विना वात असी फीकी जसी नंगारा विना फोज।

"वात में हूंकारो, फोज में नंगारो"

वात सुरू करवा रा न्यारा न्यारा ढंग व्हे। कोई वात सुरू ही यूं करै,

वातां हंदा मामला दरिया हंदा फेर
नदियां वहै उतावळी दे दे घूमर घेर
केताक नर सोवै केताक जागै
जागतां री पागड़्या ढोल्या रे पागै
ऊंघतां री पागड़्यां जागतड़ा ले भागै

वात कैवणो ही एक पूरी कळा है। वात एक जणों कैवे पण घटना रा दृस्यां ने ईं तरै सूं मूंडागै राखै जांणै नाटक देख रिया हां। वात रा जतरा ही पात्र व्हे जांरो न्यारो न्यारो पार्ट वो अकेलो करतो जावै। एक पल पै'लां तो वो डोकरी री नांई गावड़ हिलातो, कंठ धूजातो वोल रियो हो, दूजे ही पल मूंछ मरोड़तो, कमर में वंधी कटार खैंचवा ने हाथ मेलतो दीखै। वात रा चढाव उतार रे लारै पूरो अभिनय करदे।

सींयाळा री रातां, गावां में धूणी घाल दे, धूणी रे चारूं पासै दानां वूढा, जुवान मोट्यार, छोरा छापरा सगळा भेळा व्हे जावै, तपवो करै। गांव रा दानां वूढा, ठावा मिनख डींगा माथै ऊकड़ू वैठ जावै, एक मोटा डींगा पै वात कैवण्यो ही वैठ जावै, पछै जमें वात जो रात जातां खवर नीं पड़ै।

म्हारे पिताजी देवगड़ रावतजी विजैसिंघजी रे वात कैवावा रो सोक व्हेणो ही हो, जां दिनां रो रहण सहण ईंज ढंग रो ही हो। जूनी परंपरा रे माफग म्हांके अठै

ही वात कैवा वाळा रैवता, और ही गुणी श्रावो करता। म्हांके अठै रैवा वाळा में एक तो मूळजी रावळ, दूजा जोरजी बड़वा असी ठाठदार वात जमाता के कांई कैवणो। हजारां वातां, दूहा कवित्त, पूरो पिरथीराज रासो मूंडै याद, भण्यां नीं एक खांडो आखर। वा री चाकरी वात कैवा री ही। सांझ पड़तां हीं रोसनी रो मुजरो करतां ही वात जमती, म्हां सगळा जणां भेळा व्हे वैठ जाता। एक जणो हूंकारो देतो, दाना बूढा हाथां में माळा लीधां, बीचै बीचै माथो हिलावता, "वाह भाई वाह, कांईं कैणी वात" री दाद देता, वात रा आणंद ने दूणों कर देता। सियाळा में सिगड़ी कतरी दांण भर भरनै आय जाती, वात चालती रैती। सुणवा वाळा चित्राम ज्यूं बैठा सुणता रैता। चोमासा में झरमर झरमर छांटा पड़ता, अस्या समै में म्हारे पिताजी हुकम देवो करता "आल्हा ऊदल री वात कैवो।"

आल्हा ऊदल री वात जमती, लारै लारै दूहा रा फटकारा लागता। एक तसवीर खिंच जाती, घायलां ने डोळ्यां में घाल रिया है, घोड़ा हणहणाय रिया है, हाथी चरडाय रिया है, रुण्ड बिना मुंड घूम रिया है। कटारियां आंतडियां ने फाड़ती यूं निकळ री है जांणे झरोखा में सूं में'दी रा रच्योड़ा हाथ निकळ्या है।

सुणतां सुणतां डोकरा हुक्का री नेज ने छोड़ डाढ़ी पै हाथ फेरवा लागता। श्रोता रोमांचित व्हे जाता, म्हां टाबर आंख्या फाड़्यां आप रो आप भूल जाता।

यूं तो वात कैवण्या री कोई खास जात नीं जो कैय जांणै वो ही कैवे। पण रावळ, मोतीसरा, भाट, बड़वा, राणीमंगा* ढाढी, नकारची, सरगडा जांगड़ कोम में वात कैवण्यां ज्यादा मिलै पीढ्यां सूं यांने वातां जबानी याद चाली आवै। एक नीं अनेक, छोटी नीं मोटी मोटी वातां सैंकड़ां दूहा सूधी यांने जबानी याद रै। भण्यां पढ्या नीं पण वरणन यांरो अतरो जबरदस्त के कांईं कैणो।

वात रे लारै मोका मोका पै दूहा बोलता जावै। यां दूहा रे बोलता जावा सूं वात रो आणंद और ही चोगणो व्हे जावै। परसग पै गावता ही जावै। छोटा छोटा वाक्य, एक फालतू भरती रो आखर नीं, टाळमा सबद, काळजा में जाय सूधा लागै।

वातों रा कैवण्यां मिनखां ने राजा माराजा आछी इज्जत अर रोजगार दे आप रे अठ राखता। यां री घणी पूछ ही, सभा ने रीझावाने ये आपरी कळा बताता,

---

* राणीमंगा एक जात व्हे जो सिरफ राणियां ने ही जांचै, आपरी वही में स्त्रियां रा पीढीवार नाम मांडै। राजा माराजां सूं कांईं नीं लेवै। राणियां रा जाचक व्हेवा सूं ये राणीमंगा वाजवा लाग्या।

इतिहास री शिक्षा घणी कर यांरी वातां सूं ही देवता । इतिहास अर ख्यातां री जांणकारी तो यां वातां सूं घणी चोखी व्हे जाती ।

यां वातां ने कोरी जवानी ही नीं कैवै । हजारां री गिणती में ये लिख्योडी है । वातां ने लिखाय राखवा रो पै'लां घणों सोक हो । केई वातां तो अस्या रूपाळा अक्षरां में जमाय जमायनै मांड्योड़ी है, मांयने जगां जगां चित्राम उतारयोड़ा है । वढ़िया पुट्टो मुखमल रो, छींट रो चढ़ाय घणी सावधानी सूं राखता । पींढ्यां तांईं अवेरयां राखता, पढ़नै सुणता सुणावता । ख्यातां अर वातां लिखावा रो घणों रिवाज हो । राजा माराजा आपरा घराणां रा जस री आप री सोल री, कविता, वातां लिखायनै चित्तर वणवायनै, आंपणै मित्तरां रे, सगा परसंगियां रे अठै भेजवो करता । म्हारे देखणी तक में यो रिवाज हो । डूंगरपुर दरवार विजैसिंघजी, सलाणे दरवार जसवंतसिंघजी अर म्हारे पिताजी रे आपस में मित्तरता ही जो एक दूजारे यूं कविता, वातां आपरे पसन्द री नकलां कराय भेजवो करता । जनाना सरदारां रे कविता अर वातां भेळी करवा रो, वांचणै रो अर भेंट करवा रो सोक घणों हो । म्हारे कने एक जलाल गहाणी री वात रो गुटको है । म्हारे नानी की भुवा को व्याव झालावाड़ दरवार सूं व्हीयो । वां जलाल गहाणी री वात रो यो गुटको लिखायो । वी गुटका ने वां आपरी भोजाई गोड़च (मेवाड़) ठुकराणीसा ने दीधो । गोड़च वाळा, आपरी वेटी अर म्हारा नानीसा (देलवाड़ा) ने दीधो । वा वी गुटका ने म्हने वक्स्यो ईं तरह सूं वातां री पोथियां एक जणां सूं दूजां जणा तक घणा चाव सूं भेट कीधी जाती । वीं गुटका री कथावस्तु रा आधार पै ईं संग्रह मांयली जलाल री म्हें वात लिखी है ।

यां ख्यातां वातां री भासा प्राचीन राजस्थानी है । पाड़ोसी राज्यां री भासा रो ही यां वाता पै असर है । पंजावी, सिंधी, गुजराती भासा रा सव्दां ने काम में लीधा है ।

यूं तो अठ्ठारवी सताव्दी तक गुजराती अर राजस्थानी मामूली फरक सूं एक ही भासा री है । वीं भासा ने आजरा गुजराती "प्राचीन गुजराती" रा नाम सूं वोलै, राजस्थानी ईं ने डिंगल या प्राचीन राजस्थानी कैवे । राजस्थान रा जालोर रा कान्हडदेव री ख्यात जको जालोर रा हीज एक कवि री रच्योड़ी है, वा गुजरात में वी० ए० रा कोर्स में पढाई जावै । गुजरात वाळा वीं भासा ने आपरी प्राचीन गुजराती माने ।

वास्तव में अट्ठारवीं सदी मूं पै'लां राजस्थान अर गुजरात रो सामाजिक अर सांस्कृतिक सम्वन्ध एकाकार हो । अंगरेजां रे आयां राजनैतिक ढंग सूं यां ने अलग करवा मूं ये आज न्यारा न्यारा व्हीया । सिंध अर पंजाव सूं ही राजस्थान री सीमा

अड़ै। रात दिन रो आवणो जावणो हो। आज सिंध रो थरपारकर रो जिलो सदिया सूं जोधपुर राज रो हीज हिस्सो हो। वठै अवै ही राजस्थानी बोली जावै। जैसलमेर कानी सिंधी भासा रा घणां ही सब्दा ने काम में लावै। उत्तरी बीकानेर रा नै पंजावी रा सबद घणां मिलै। सीमा मिलै जठै यूं सबदां रो मिलणो कायदा री वात है। ये सब व्हेतां थका ही यां वातां में ठेठ राजस्थानी भासा है। आखा राजस्थान में ईं खूणां सूं वीं खूणां तक यां रो प्रचार है। लिख्योड़ी मिले, कही जावे। विसेस विसेस जगां री-बोली रो कैवा में लिखवा में थोड़ो घणों फरक पड़ै बाकी यां री आतमा अर सरीर में कोई फरक नीं।

म्हारी कलम सूं लिख्योड़ी ये वातां जो पोथी में छप री है, थां री गुणगरिमा है वा तो राजस्थान री धरती री उपज है; भासा अर भाव विभूति मातृभासा राजस्थानी री संपदा है। म्हारी कलम अर म्हूं तो विदवानां रे मूंडागै यांने राखवा ने निमित्त मात्र हूं।

लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

अनुक्रम

पाबूजी

ढोल बाजरिया, मारवाड़ रा कोळू गांव में मिनख हरख्या हरख्या फिररिया। केसरिया कसूमल पागां बांध्यां, आयांगियां री अमल री मनवारां चालरी। पाबूजी रे सात सुवागण्यां मिल पीठी कररी, लारै लारै मीठा मीठा गळा सूं पीठी रा गीत गावती जायरी।

पाबूजी री जांन अमरकोट चढरी है। पाबूजी उमंग में भरिया मूंछां पै घड़ी घड़ी रा हाथ फेररिया।

परणेतू पोसाक त्यार व्हेगी, कलंगी सिरपेच कस्यो टांगणो वो निस्चै व्हेग्यो, तरवार सोना री ना'रमुखी मूंठ री छांट लीवी, ढाल गैंडा री आछी सी देख'र टाळी। भाला ने ओप देवा ने सिकळीगर ने दे दीधो। अवै घोड़ा री बात सोचै। घोड़ो पाबूजी री जोड़ रो व्हे. अमरकोट रा सोढ़ा घोड़ा ने देखतां ही थूयकारो न्हाकवा लाग जावै जद तो बात ही है। जस्या पाबूजी बांका वीर है वस्यो ही वांरी रानां नीचै घोड़ो व्हेणो चावै। पाबूजी रे एक घोड़ो दाय नीं आवै। वांरो जीव जावै'न एक घोड़ी पै आय अटकै। केसर काळमी री तीखी कनौती! कूकड़ा री नांई खिच्योड़ी गावड़!! झीणी झीणी हींस!!! केसर काळमी घोड़ी है तो बस वा एक पाबूजी रे लायक। देवळ चारणी. आपरी घोड़ी ने पाबूजी ने देवेला के नीं? गायां रो दूध पाय पायनै मोटी करीयकी केसर ने, देवळ चारणी आपरा जीव सूं वत्ती राखै। पाबूजी सोची, चावै जो व्हो तोरण मारणो तो ईं केसर घोड़ी री पूठ पै चढनै हीज। चांदा ने कह्यो, "भाई, मानो मत मानो, म्हूं परणवानै जावूंला तो केसर काळमी मायँ हीज चढनै।"

चांदे जाय देवळ ने कह्यो, "पाबूजी रो ब्याव है, देवळ देवी! थां केसर ने चार दिनां सारू देदो, पाबूजी परणनै आवै जतरे।"

देवळ चमकी, "केसर ने दीवां, म्हारे नीं सरै। केसर विना म्हारी गायां री रुखाळी कुण करै? खीची तो गायां घेरवा ने ताखड़ो वैठ्यो है।"

"देवळ! कांई बात करो, थांरी गायां रा रुखाळा म्हे, थांरी केसर कूदणी पै भालाळो पाबू चढैला, थांरी केसर जांन रे बीचै चालैला, केसर जसी तो अलल वछेरी नै बांकड़ली मूंछां रो पाबूजी। केसर काळमी ने पाबूजी जस्यो सवार नीं

मिलेला, नीं पाबूजी ने केसर जसी घोड़ी मिलै । देवळ बाई ! नटो मती । केसर झींणी झींणी हीसती, धीमी धीमी नाचती अमरकोट रा सहर में चालैला, पाबूजी भालो भळकातो घोड़ी ने कुदातो तोरण मारैला जद सोढा थांरी केसर री कूद देखता रैजावेला । रणबंका राठौडां रा घोड़ां री अर मरदां री जो तारीफ है सोढां ने आंख्यां देखवा दो ।

घोड़ो, जोड़ो, पागड़ी, मूंछां तणीं मरोड़ ।
ये पांचूं ही राखली, रजपूती राठौड़ ।।

देवळ चारणी राजी व्हेगी घोड़ी देवानै । पाबूजी बींद बण्या, बागो पैर्यो छोगा कलंगी टांक्या, ढाल बांधी । केसर ने सिणगारी, मे'दी राच्योड़ा च्यारूं ही सूमां में घूघरा बांध्या, केसवाळी ने लच्छा घाल घाल गूंथी, गळा में सोना रो हालरो घाल्यो । पाबूजी रो सारो भायपो भेळो व्हीयो, लुगायां मंगळगीत गावा लागी, ढोल बाजवा लाग्यो, माथै सेवरो बांध्यां, केसर री लगाम पकड़्यां पाबूजी ऊभा ।

जोसी घोड़ी री पूजा कीधी, काकी हरिया मूंगां रो दुकड़्यो भर केसर रै मूंडागै राख्यो, मां कांचळी सूं बोबो काढ नै पाबूजी रे होठां रे लगायो "ईं दूध ने उजाळजे ।" भौजाई आंख मे काजळ घाल्यो । पाबूजी झट पागड़ा में पग दे केसर री पूठ पै चढ्या । लुगायां झट घोड़ी उगेरी, "वछेरी म्हारी ए रमझम करती जाय ।"

पाबूजी री बेनां घोड़ी री लगाम झाल बींद री घोड़ी आगै, मुळकती मुळकती नाची, पाबूजी मूठी भर रिपिया बेनां पै निछरावळ करनै फैंक्या । सगळां रे होठां पै आणंद री लैरां दौड़री पण साम्ही ऊभी देवळ डसूका भर रोवा लागी ।

"यो कांई ? बारेठणी जी यो काई थारो भूंडो सुभाव है । सुगण रा असुगण कररिया हो, वींद तो घोड़ी चढ्यो है नै थां साम्हा ऊभा रोयरिया हो ।"

देवळ तो आय पाबूजी री लगाम पकड़ लीधी "थां तो परणवा जायरिया हो म्हारी गायां रो रुखालो कुण ? थांरा भाइयां ने छोड़ जावो ।"

"देवळ देवी, भाइयां ने छोड्यां जान री सोभा कांई ? भाइयाँ विनां आगै सौढां रै लारै कुण जीमैला ? कुण सोढ़ां रे साथै मनवारां लेवैला ? कुण सगा परसंगियां सूं रोळ करेला ? म्हारा भाई साथै नी व्हेला तो सोढियां गाळियां किण ने गावैला ?

देवळ बोली, "भाइयां ने नीं छोड़ो तो चांदा ने छोड़ जावो ।"

"चांदो अर डामो तो म्हारा भायला भाई है, भाइयां सूं ही सवाया। यांने तो देवळ भवानी, म्हूं कणी तरै छोडूं ? ये तो म्हारा डावल्या जीमणां हाथ है। वीचै वीचै तो केसर चालैला, डावे जीमणै चांदा डामा रा अबलक घोड़ा।"

"अठी ने पावूजी, थांरी जांन चढ़ी नै वठी ने खीची म्हारी गायां घेरैला, थां सांची मानो, थांरे जातां हीं खीची म्हारी गायां तांण ले जाय।"

पावूजी भरोसो दीवो, "म्हू तीन दिन अमरकोट रैवूंला, चौथो दिन वठै नी लगावूं थां भरोसो राखो।"

"थां सासरे जाय, वीनणी में रम जावोला, साळा साळियां री रोळ में विलम जावोला। थां वठै सोढ़ीजी री सेजां में पोढ़ोला, देवळ चारणी री गायां किणने याद आवैला।" देवळ रोवती जावै नै पावूजी ने करड़ा करड़ा बोल सुणाती जावै।

"देवळ, अै म्हूं थांने बचन देवूं जो थांरी गायां ने खीची घेर ले तो थां थांरा गुवाळ ने अमरकोट दौड़ाय दीजो। म्हूं जीमतो व्हूंला तो चळू अठै आयनै करूंला। गायां घेरवा री खबर सुणतां पांण कसर घोड़ी पै काठी मेल दूंला, और तो और चंवरी पै चढ्यो फेरा खावतो व्हूंला तो फेरा रे अधबीचै ऊठ जावूंला। वारेठणीजी, थें रोवो मती, राजी राजी सीख दो, परणूंला जीं रात सिवा दूजी रात सासरै नीं रुकूंला। म्हारी बात रो भरोसो राखो।"

देवळ पाबूजी कना सूं सोगन लेवाया।

जांन चढ़ी, ऊंट घोड़ा आगै वध्या, पांच सात कोस चाल्या, मंगरी आई देखै तो एक नोहत्थी ना'रड़ी मंगरी माथा सूं उतरनै केस बिखेरियां घाटी रोकनै गैला में ऊभी रैगी।

डामै धनुष पै तीर चढायो, पाबूजी रोक्यो, "या वन रा राजा री अस्त्री है, आंपां धरती रा ना'र हां, मरद अस्त्री पै हाथ नीं उठावै।"

डामै तो ना'री रे साम्हें घोड़ा री बाग खैंची, रान दबाई, ना'री पूंछ दबाय, मंगरा पाछी चढ़गी पै पाछी चढ़ती ना'रड़ी पै डामै कांकरी फैंकी "हत्थारी ! ना'री व्हेयन पाछी फिरगी थूं।"

कांकरा री लागतां ईं ना'री पूठी फिरी। दाकळ करनै हाथळ उठाय लपकी, सूधी डामा रा माथा पै आई। डामो वोल्यो, "पै'लां थूं वार करलै, मरद पै'लां नारी पै ससतर नीं उठावै।"

ना'री री हाथळ डामा रा माथा पै आई, जींनै डामो आपरी ढाल पै झेल नें पाछी फिरती ना'री रे तरवार री मारी जो ना'री रा दो ढोल व्हेग्या। जांणै सावण री काकड़ी कटी व्हे।

जांन रे साथै सुगनी हो, आय पावूजी ने अरज कीधी "सुगन अस्या खोटा व्हेता आयरिया है, पै'लां तो काळो नाग फण कर नैं जांन रो गैलो रोक्यो, पछै ना'रडी घाटो रोकनै जावा ने मना कीधो। सुगन देखतां तो आप पाछा फिरजावो, खांडो भेज नै व्याव करलो।"

पावूजी बोल्या, "अबै जांन ने पाछी मोडयां म्हारी हसी व्हेला। अमरकोट रा सोढ़ा हंसेला, एक ना'रडी सूं डरनै पावू पाछो फिरगियो, कठै पावू रो भालो गियो अ'र कठै गिया चांदा डामा रा तीर कामठा। ईं वगत तो पाछै फिरियां राठोड़ां री मरदानगी पै काळो दागो लागै, म्हारी मां कंवळादे रो दूध लाजै। अमरकोट में आंपणी कांई आछी लागैला? वठै सोढ़ा सरदार कमरबन्धा वांध्यां आंपणी अगवाणी करवानै कांकड़ पै आय ऊभा व्हेता, साळा साम्हा आवा री त्यारी कररिया व्हेला। साळ्यां डागळै ऊभी कामण गायरी व्हेला। सोढी सहेल्यां सूं वैठी पीठी करायरी व्हेला, नीम पै वैठा कागला ने उड़ाय, केसरवरणी सोढी म्हने उडीकरी व्हेला। म्हूं पाछो फिर जावूं तो वे सहेल्यां सोढ़ी ने चिढ़ावेला, "थूं तो कै'ती म्हारो पावूजी वन रो ना'र है, वो तो एक ना'रड़ी सूं डरप पाछो फिरग्यो। देख्यो थारा वीर पावूजी ने जो खांडो परणनै लेजायरियो है।"

सुगनियां कह्यो, "आपरो मन व्हे ज्यूं करो, सुगन तो अस्या है के काळ साम्हो आयरियो है।"

"वीरां ने नाम प्यारो व्हे। धड़ अ'र माथा तो कटता जुड़ता ही रै। कायरां रा माथा धड़ पै व्हेतां लगां ही मरयोड़ा है, वीर माथा कटायनै ही जीवता रै। घूंसा पै डंको पटकाय, वाजतां ढोलां जांन आगै चाली।

चांदा, डामा आपरा घोड़ा ने आगै कीधा, पावूजी केसर काळमी ने हकाळी।

देखै छै भुरजाळो पावू निजर पसार
कोई चांदे ने डामै ने बूझै पावू मुलक की
किण रा तो दीखै छै ये भूरा भूरा कोट
किण रा तो दीखै छै ये धूंधा धूंधा माळिया

चांदो बोल्यो,

आग्यां छां ओ पावू आपां धोळी धाट रे मांय
कांकड तो वड़ग्यां छां आंपां अमरकोट रा
धोळा धोळा दीसै सोढ़ां रा गढ कोट
धूंधा धूंधा दीसै सोढी रा माळिया

अमरकोट में सूरजमल सोढ़ा रे वरै नोवत घुड़री, नरणायां में मीठा सुर वाजरिया।

लुगायां छाजां पै ऊभी जांन देखवानै उडीकरी, सोढ़ा पोमाका कीवां, जांन रे साम्हा जावानै अमल पान री मनवारां करता त्यार व्हेयरिया, सोढ़ीजी री मां वांस री कामड़्यां बांधती सासू आरती जोड़वा में आपरी सारी कारीगरी लगायरी। सोढ़ीजी ने वांरी साथण्यां सिणगाररी, ललाट पै केसर री खोळ काढ़्यां, हाथ में कांकण डोरड़ा बांध्योड़ी ऊजळ दन्ती सोढ़ी साथण्यां में यूं लागरी जांणै तारामंडळ में चांद।

सोढ़ी फूलमदे रे हिया में उथळ पुथळ व्हेयरी ज्यूं ज्यूं जांन आवा री वेळां व्हे ज्यूं ज्यूं आणंद नै भय रा वेग सूं छाती धड़धड़ कररी। साथण्यां रे लारै डागळा पै जांन देखवा ने चढै अर सरमाय पाछी नीची उतर जावै।

ऊंची चढूं नीची ऊतरूं ए
सइयां जोवूं ए भालेळा री वाट
सहेल्यां ए आंबो मोड़ियो

जांन रा नगारा सुण्या, सूरज री किरणां में भाला भळक्या, घोड़ां री टापां अर हींस सुणी, लुगायां देखण ने आगती एक दूजी रे माथै पड़ती, गोखड़ां में, छाजां पै जाय चढी।

आगै आगै पावूजी रा भाई भतीजा नै परवार, छोगा कलंगी लगायां, अलल वछेरा नचावता, बांका मूंडा रा सुरंग, कुमैत, अवलक घोड़ा ने एकी वेकी कराता आया।

"जांन तो रूपाळी है। घोड़ा चोखा सिणगारियोड़ा है। वींद रूपाळो घणो वतावै, वींद ने देखवा तो दो ए।" लुगायां एक दूजी सूं वातां करै।

डावै जीमणै चांदा डामा रा घोड़ा, वीचै केसर काळमी पै पावूजी सवार। केसर रमझम रमझम करती चालरी, ढोल री ताळ माथै केसर रा नेवर झणक झणक वाजरिया। कनौती उठायां, छाती फुलायां, मरोड़ मरोड़ बांकी करती गावड़ पै केसवाळी री गूंथ्योडी लट्टयां हालती जायरी, देखवा वाळा केसर री चाल ने देखता रैग्या। सेवरो बांध्योड़ा पावूजी जांणै दूजो सूरज उग्यो व्हें। चौड़ी छाती ने ऊंची कीधां, एक हाथ सूं वाग पकड़्यां दूजा सूं मुजरो झेलता पावूजी केसर री रास धीरै धीरै हिलावता चालरिया जाणै फौजां रो मांझी घूमतो जायरियो। मोटी मोटी आंख्यां, तेज सूं दम दम करतो ललाट, कुन्दन री नांई दपदप करतो रंग। लांबी लांबी भुजा सेल ने थांम्योडी। पसवाड़े लटकती तरवार। सोढा री नजर वींद पै जमी री जमी रैगी। अमराणां रा मिनख पावूजी रो रूप देखता रा देखता रैग्या। सोढियां छाजां पर सूं थूथकारा न्हांकण लागी, सोढी री मां री छाती वींद रा वखाण सुण सवा हाथ चौड़ी व्हेगी, साथण्यां सोढी ने छाती रे लगाय लीवी "कसी भागवान है थूं।" डावड्यां दौड़ी दौड़ी वधाई दीवी "वाईसा, वाईसा, सूरज री किरण नै वींद री किरण एकसी है।"

फूलमदे रो हिवड़ो हिलोळा लेवा लाग्यो । सोढ़ां रो साथ आंपणां जवानां रो नै जांन रा जवानां रो मन ही मन मुकावलो करण लाग्यो । वाथ में बाथ घाल नै सोढा अर राठौड़ मिल्या, अमलां री गैरी गैरी मनवारां खोबा भर भर एक दूजा ने देवा लाग्या । डामो बोल्यो "आपरा खोवा सूं तो म्हारो कान ही तातो नीं व्हे, यो कटोरो ही झेलाय दो ।" एक घूंट में कसूंबा रो कटोरो खाली कर डामो, सोढ़ां रे हाथ में पाछो झेलायो । डोढी आंख सूं डामा ने जी वगत तो सोढ़ा देखनै रैग्या ।

वाग में जांन रा डेरा लाग्या । चंपा री हरी डाळ रे बंधी केसर उगाळी कर री, तंबू में पावूजी साथीड़ां लारै वैठ्या, बातां कररिया । रंगीला सोढा आप आप रा घोड़ा ने पलाण बाग मे राठौड़ां सूं मनरळी करवा ने आयग्या । आडी डोढी लाल पीळी जाजमां ढाळदीधी । राठौड़ां रे, सोढ़ां रे हंसी मसकरी री वातां व्हेवा लागी । वातां रा फटकारा लागरिया "केसर रो नाम तो कानां सुण राख्यो हो, जस्यो नाम सुण्यो वसी वींने आंख्यां सूं देखी पण वीरी दौड देखां जद पतो लागै ।" एक सोढे सरदार कह्यो ।

"म्हारी केसर तो कोस पचास चालनै आई है, आपरा घोड़ा तो ठांणां सूं खुलनै आया है. अवार दोड़ रो मुकाबलो कस्यो ?" पावूजी जवाब दीधो । पण सोढ़ा तो जिद पकड़ लीधी, "थांरा म्हारा घोड़ा री दौड़ तो व्हेला हीज, सोढा रा नै राठोड़ां रा जवानां रो जोहर पतवाणणो है"

तै व्ही जो हारे वींरो घोड़ो चारणां ने वगसीस । सोढा आपरा तेज घोड़ा पै जीण माड्यो, पावूजी केसर री पूठ पै थाम दे, "बाप बाप" कैवता चढ़्या । दोई साळा वैनोई होड़ मार घोड़ा फैंक्या ।

> ऊभा ं तो देखै छै सगळा अमराणै रा लोग ।
> कोई मे'लां पै निरखै छै सोढ़ां रे घर री कामणी ।।

पावूजी केसर ने ललकारी । केसर तो उड़ी जांणै आसमान में उड़री व्हे । दौड़ती घोड़ी यूं दीखै जांणै जमीन रे मांयनें मिलगी व्हे ।

घर घर में घुड दौड़ री वात व्हेगी, रंगीला सौढा हारग्या, पावूजी राठौड जीत्या ।

सोढ़ां ने मन मे घणी रीस आई,

"तोरण री वेळां पावूजी ने अर केसर ने खवर पटकांला ।" घणी ऊंची जगां पै लेजाय तोरण वांध्यो ।

"अवै पावूजी अर केसर कांई करैला ?"

-वनड़ा वण्यां पावूजी तोरण पै आया, देखै तो गढ़ रे कांगरै आसमान पै जातो तोरण

बांध राख्यो । पाबूजी रे मन में सोच आयो अबै केसर कांई करैला । मन ही मन केसर ने कैवै,

मत नां तो दीजै ए केसर थारो म्हारो पोत ।
मत नां तो लजाये ए राठोड़ां री जातड़ी ।।

पाबूजी केसर री पूठ पै थापी दीधी, केसर तोरण साम्ही झांक हींसी, जाणैं केयरी व्हे, 'यो कतरोक ऊंचो है कै वो तो चांद सूरज रा कांगरा ने जाय पूगूं ।'

पाबूजी तंग ने कस लीधो, पागड़ी रे अलिबंध लगायो, रान जमाय काठा पूठ पै बैठ्या ।

ढोली रा छोरा थूं मधरो ढोल बजाय ।
ढोलां के ढमाकै रे म्हारी केसर घोड़ी नाचसी ।।

मधरो मधरो ढोल बाजवा लाग्यो, रमक झमक केसर नाचवा लागी । नाचती नाचती घोड़ी रे पाबूजी थापी दीधी, थापी रे थपाकै केसर ऊछळी ।

उछळती गिराई छै सोढ़ां रे गढ़ री भींत ।
खुरिया तो रोप्या छै असमानी गढ़ रै कांगरै ।।

तोरण कने जाय केसर आगला पग रोप्या, पाबूजी तोरण मारनै नीचै उतरचा तो घोडी गढ रा कांगुरा खुरां रै लारै लेती आई । चांदे अर डामे मूंछां पै हाथ मेल्यो. राठोड़ां री छाती फूलगी, रिसाळू सोढ़ा नीचा माथा घाललीधा ।

पाबूजी री मलफ देख सोढ़ी आंख्यां में आंजस भरचां साथण्यां साम्ही झांकी तो साथण्यां बळगी, सोढ़ी फूलगी । वीर पति रे लारै एक घड़ी रैवा मे जतरो सुख है वो कायर रे लारै आखी उमर रैवा में ही नीं ।

चंवरी मंडी, पाबूजी मांढ़ा में सोढी सूं हथळेवो जोड़चां आया । वेदी रचगी, जोसी वेदी रो पाट पूररियो, सूरजमल जोड़ा सूं गठजोड़ो बांध्यो. लुगायां मंगळगीत उगेरचा, सोढ़ा रो सारो परवार भेळो व्हीयो बैठचो । वीद वींदणी पाटा पै हथळेवो जोड़चा बैठचा । लाल पोसाक पैरचां सोढी रे हाथी दांत रो नवो नवो चीरचोड़ो चूड़ो, कंकुवरणी कळायां में ओपरियो, फेरा फिरवा ने उठ्या, आगै आगै हाथ जुड्योड़ी सोढ़ी धीमा धीमा पगल्या धरती, लारै लारै पाबूजी सोढ़ी रो हाथ पकड़चा पै'लो फेरो फिरचा ।

लुगायां गायो,

पे'लै फेरै जुड़ग्या छै बनड़ा बनड़ी रा जीव।
राठोड़ां अर सोढां रा व्हाला सगपण जुड़ग्या ।।

एक फेरो व्हीयो, दूजो फेरो फिरवा लाग्या, लुगायां गायो,

दूजै फेरै दूध नीर ज्यूं मिल्या दोयनड़ा रा जीव।
सोढां अर राठोड़ां रा गाढ़ा सगपण जुडग्या ।।

सोढी री मां रा नैणां में आणंद रा नै मोह रा आंसूं छळछळायग्या। "बेटी पराई व्हेगी, परी जावैला" ईं विचार सूं मां रो काळजो हालगियो। तीजो फेरो फिररिया, केसर टापां पटकै नै मायो धूणनै हींसी, पाबूजी रा कान वठी ने लाग्या, डामो ऊठनै गियो। घोड़ी रस्सी तुडाय दीधी, टापां पटकरी, आंख्यां में आसू भर राख्या, माथो झंझोड़री। ये कांई अपसुगण? घोड़ी ने थापी दे जतरै तो देखै, देवळ चारणी, केस खिड़ायोड़ा रोवती जायरी नै आय हाको कीधो "म्हारी गायां लेग्या।" डामो पूछै पूछै जतरै तो देवळ, पाबूजी फेरा खाता अठै जाय पूगी, केस तांणती रोवा लागी, "पाबूजी, थां तो अठै सोढी रा हथळेवा में रीझ्यां बैठ्या हो वठीनै म्हारी गायां खींची ताण नै लेग्या।"

सुणतांई पाबूजी बागी झड़काय उठ्या, हथळेवो बंध्यो लगो जीने खोलतां नजर आया। खळभळाटो मचग्यो। एक पल पैं'ला अगनी ने साक्षी दे पाबूजी जीं हाथ ने आपरै हाथ में झेल्यो हो वीने छोड़ ऊभा व्हेग्या। सोढी मूरती ज्यूं बैठी री वैठी रैगी। सोढा आंख्यां फाड़ देखता रैग्या।

पाबूजी केसर साम्हा चाल्या, सोढी ने चेतो आयो वा लाज सरम भूलगी, भूलगी वींरा पीयर रो सारो परवार बैठ्यो है, जाताथका पाबूजी रा बागा री चाळ पकड़ लीधी, आंख्यां में आंसू भरग्या। कुमळायोड़ा फूल री नांई होठ सूखग्या।

तीजोड़ा फेरा में जी पाबू किस विध चाल्या छोड़।
आधी तो कुंवारी जी म्हांनें आधी ब्यायोड़ी छोड़ दी ।।

पाबूजी पल्लो छुडाणों चावे पण छुडावणी नीं आयो। एक पल सोढी साम्हा झांक्या दूजै पल कूकावती देवळ ने देखी।

गुनो तो भरियां छां ए सोढी जी म्हे खास।
वचनां रा बांध्योड़ा तीजै फेरै उठ चाल्या ।।

आंसूड़ा रळकावती सोढी रा आंसू आपरा रुमाल सूं पूछता पाबूजी कह्यो, "सोढी, म्हांने सीख दो, देवळ ने म्हारा वचन दियोड़ा है। म्हाने जावा दो, नीं जावूंला तो म्हारा नाम पै काळग लागैला।"

सोढी रोवती रोवती बोली,

भेजूं जी पावूजी बावोसा री फौज,
पकड़ तो मंगवादूं तड़कै जायळ जींद को ।
जीमो जी पावूजी बैठ्या जिनवा रा भात,
चोपड़ पासा खेलो जी म्हारे सूं रंग मे'ल में ।।

देवळ करळाई, "पावूजी म्हें पै'लां ही कह्यो हो, थां सोढी रा रंगमे'ला में रम जावोला । चारणी री गायां कुण याद करै । नीं चालता व्हो तो नट जावो । म्हंने म्हारी केसर सूंपो । पावूजी, वचन देणो सोरो है, निभावणो घणो दोरो ।" देवळ जवान रा तीर पै तीर छोड़्या ।

पावूजी ने रीस आयगी, नेहभीणां नैणां में रोस झळकवा लाग्यो, हथळेवा री में'दी सूं भरयोड़ा हाथ तरवार री मूठ पै जाय पड़्या । गठजोड़ा री गांठ खोलनै पावूजी आगै पग दीधा । सोढी गैलो रोकनै आडी ऊभी व्हेगी । आंख्यां सूं आंसूडा कायर मोरड़ी नांई ढळकायरी । हथळेवा री आधी रची में'दी रा भरिया हाथां, बंध्या मोड़, सजोग सूं पै'ला विजोगणी व्ही सोढी, आधा फेरां में सूं ऊठ्या भुरजाळा पावू रो गैलो रोकनै ऊभी रैगी । सारो परवार सण्णाटा में आयो चुप ऊभो । वाजता ढोल रुकग्या । मन्तर जोसी रा मूंडा में अधूरा रैग्या । वेदी री पावन अगनी बुझगी । सूरजमल सोढ़ा रो मूंडो स्याह पड़ग्यो । सोढ़ी री कांचळी आंसूड़ा सूं आली व्हेगी । साळियां डसूका भरवा लागी ।

पावूजी री नजर सोढी साम्ही, पग देवळ आड़ी नै ।

वारे केसर टापां मारेनै हींस री । देवळ ऊभी माथा रा केस खैंचरी । पावूजी उठी नै, करुणां करती सोढी साम्हा झांकै तो काळजो कटनै रैजावै, ब्ठी ने चारणी देवी रो रौद्ररूप देखनै रोस सूं वांरो रगत उकळवा लागै ।

"सोढी, ये आंसूड़ा पूंछलो, रोयनै सीख मत दो, एक रजपूताणी, रजपूत ने सीख दे ज्यूं म्हंने हँसनै विदा करो । थांरा आंसूड़ा में म्हूं अटक जावूंला तो जुग में म्हारी मूंछां नीची व्हेजावैला, लोग कैवैला पावू सासरिया में मौजां करै, दियोड़ा वचन भूलग्यो, थां कायर री अस्त्री वाजोला । थां भुरजाळा पावू रो हाथ पकड़ियो है, म्हंने म्हारा प्रण पूरा करवा दो, केसर पै काठी मांडवा दो, देवळ री गायां पूठी घेर लावा दो । सोढी, राजी व्हे म्हांने सीख दो ।"

सोढी, परणेतू छापल सूं आंसूं पूंछ लीधा, होठां पै मांडाणी हंसी लीयाई, काळजा

पै भाटो मेलनै वा रजपूताणी ज्यूं बोली "पधारो ।" होठां पै हंसी ही, पण नैणां में दरद रो दरियाव उलळरियो । जीभ "जावो" केयरी ही, पण हिवड़ो फाटरियो,

चढ़ोजी पाबू रणवंका भल गायां री वार ।
सैनाणी तो दै जावो जी म्हांने थांरे हाथ री ।।

सैनाणी ? कांई चीज असी है जो देता जावै ? हथळेवा री दाभी मुगधा ने, फेरां बीचै उठनै भूंभवा ने जातो वीर पति कांई सैनाणी में देवे ? रंग री रात ने रण री रात मे बदल देण्यो, परणेतू मेंदी रा रंग ने रगत रा रंग में घोळण्यो रंग दूल्हो आपरी तीन फेरा खायोड़ी लाडी ने सैनाणी में कांई देवै ? पाबूजी बोल्या,

जीवांला तो फेर मिलागा थां सूं सोढी आया ।
मर जावांला तो लादैला ओठी म्हारा मेंमद मोळिया ।।

"जीवतो रह्यो तो थां सूं आय मिलूंला । मरगियो तो सवार म्हारी पाग लाय थांने सूंपदेला । या सैनाणी है ।"

पाबूजी वागो भड़काता चाल्या । सोढी तड़ाछ खाय नीचै पड़गी । पाबूजी री सासू सािळयां आय विलूंमगी ।

पाबूजी, म्हारा बाई में ओगुण कांई देख्यो जो थां यूं छोड़ चाल्या ?

पाबूजी हाथ जोड़ता बोल्या,

दूधां सरीसी ऊजळी थांरी बाई जुग जुग रे मांय
कोई ओगणियो नहीं थांरी बाई में गुण मोकळा ।
ओगण तो कहीजै जी सासूजी म्हारे मांय
देवळ तो चारण ने मस्तक वेच्या आंपणां ।।

"चांदा, डामा, घोड़ां चढ़ो, देवळ देवी री गायां री वा'र चालो ।"

पाबूजी रो भालो उठ्यो, सोढां री अस्त्रियां पाबू रा ईं रूप ने एक टक देखती रैगी "अस्यो बींद सोढ़ां री पोळ नी तो कदे आयो नीं कदे ही आवै, लावो कागज लावो यांरो चितर उतारला, अस्यो रूप फेरूं देखण ने नी मिलेला ।"

पाबूजी सोढ़ां सूं मुजरा जुहार करिया,

"जीवांगा तो आवांगा म्हे ओजूं सुरंगै सासरै"

केसर री पूठ पै थापी दे सवार व्हीया। सोढी रा गंठजोड़ा री गांठ खोल, वचनां री गांठ में वंध, गायां छुड़ावा चाल्या। साळा साळियां रा प्याला री मनवारां छोड़ तरवारां री मनवारां लेवा चाल्या, रंगभीनो पावू रोसभीनो व्हेग्यो। जीं केसरिया वागा सूं राजकंवरी ने परणी वींज वागा सूं मत्रु री कुंवारी सेना ने परणवा चाल्या। कंवरी ने चंवरी में छोड़ भंवरी री पूठ पै चढया।

प्रथम नेह भीनो महा क्रोध भीनो पछै
लाभ चमरी समर झोक लागै,
रायकंवरी वरी जैण वागै रसिक
वरी घड़ कंवारी तैण वागै।

चोईस वरसां रा पावू सोढी री सुखसेज माथै नीं, रण सेज में पौढ गिया। गोगाजी ने खबर लागी, खीचियां रा हाथ सूं पावूजी वारां वड़ा भाई वूड़ाजी खेत रैग्या। चांदो अर डामो ही धणी रे लारै कट मरया।

गोगाजी भाग्या, आय न देखै लोहियां सूं राता व्हीया रणखेत में लोथां रो ढिगलो पड़चो है। गायां री रक्षा सारू कटकटनै पड़या झूझारां रै आगै वांरो माथो झुकग्यो "धन है या खारी खावड़ री धरती जठै अस्या वचनां साटै माथा देण्यां रतन नीपजै। धन कंवळादे माता ने, पावू जस्यो पूत जायो जो हथळेवो छोड़नै रण में झूझवा ने दौड़चो।" गोगाजी, पावूजी ने हेरै अंग अंग कटचोड़ो पावू कठै? लोथां पै लोथां रो ढिगलो पडचो, जांरे गळडव्वै तरवांरा लटक री' गैंडा री ढालां रुळती फिर री,लोहियां सूं भरचोड़ा भाला धूळा में पडचा। घोड़ा असवारां कने पड़्या, चारूं पग पसारचोड़ा, मूंडा में धूळ भर री। खावड़ री रेत लोहियां सूं लाल व्हेय री। गिरजां रो डार रो डार वैठचो, वां मूंछाळां री आंख्यां काढ काढ खाय री। एवड़ छेवट डामो चांदो पड़चो, वीच में खावड़ .री सूरमो पावू पौढ़ रियो।

परणेत री कलंगी पडी चमक री। गोगैजी किलंगी देखतां ही पावूजी ने ओळख्या। सात परकम्मा दे वांरी माथा री पागड़ी सभाळी, गठजोड़ो नै कलंगी उठाई। वियाव रा कांकडडोरड़ा खोलवा ने हाथ आगो कीधो तो गोगाजी री आंख्यां सूं आंसुवां रा चोसरा छूटग्या। चुगचुगनै पावूजी रा सैनाण भेळा कर गांठड़ी वांधी। गोगाजी भाटा री सी छाती कीवां वूड़ाजी री पचरंग पाग उतारी। आंगळी में सूं वींटी काढी। राईका ने वुलाय कह्यो "कोळू भाग जा। अठा रा समाचार दे, ये सैनाण यांरी राणियां ने जाय सूंप।"

राईके मूंगे टोड़ियो पलाण्यो। वसकसनै टोरड़ा रे कामड़्यां री मारै। टोडियो भाग्यो जावै, मूंढा सूं झाग पड़ रिया। टोरड़ियो दौड़े जो राती भरी रेत रो

भतूळियो उड़तो जावै, रेत रा रंग जिसो ऊंट रो रंग, रंग में रग मिलग्यो। राईके ऊंट ने अस्यो दबायो के वीने बोझा उड़ता लागै, पग नीचली धरती भागती दीखै।

वूड़ाजी री गैलीराणी गोखड़ा में वैठी देखै तो ओठी ऊंट भगायां आय रियो। गैलीराणी जांणगी व्हे न व्है आंपणै ही घरै कोई करड़ै काम आयो है।

अतराक मे तो आय वूड़ाजी री पोळ आगै कुरिया ने जैकायो। गैलीराणी डावड़ी ने कह्यो, "हीड़ागर ! ओठी ने पूछ कठा सूं आयो, कांई काम आयो ?"

हीड़ागर झट नीचे ऊतरी।

"ओठी ! मन री वात कै ! कठा सूं आयो ? काम कांई है वता।

राईको बोल्यो "मन री वातां दासियां सूं थोड़ी कहीजै, राणी ने नीचै भेजो।"

आडो पडदो तंणाय गैलीराणी नीचै ऊतरी।

"ओठी ! बोलो, कांई समाचार लाया ? कठा सूं आया ?"

"राणीजी ! गोगाजी रो भेज्योड़ो आयो हूं। राठोड़ां रा नै खीचियां रा झगड़ा रा समाचार लायो हूं।"

"ओठी ! कै कै झट कै, दोई दलां रा समाचार सुणां। कुण हारया, कुण जीत्या ?

"खांडां री जीत तो खीचियां री व्ही। जस री जीत थांरा देवर पाबूजी री व्ही। झूंझारां री देवळी वन में व्हेगी।"

या कैतां ही झट वींटा गी डोर खोल, वूड़ाजी पचरंग पाग गैलीराणी रे मूंडागै मेली। वीटा में हाथ घालतां ईं पाबूजी री कलगी, काकणडोरड़ा गैलीराणी ने हाथ में झेलाया।

सैनाण ओळखतां ही गैलीराणी तो पांखड़ा कटी मोरड़ी री नांई कुरळाई।

"ओठीड़ा ! थूं म्हारो धरम रो भाई है। अमरकोट जा सोढी आपरे वाप री पोळ में वैठी वाट न्हाळ री व्हेला। ओठी, एक पलक देर मत कर। ये सैनाण जाय सोढ़ी ने दे।"

राणीजी ! ईं ऊंट रे मूंडा में झाग आय रिया है। अमरकोट रो मारग ईं सूं नी कटै। यो गैला में मर जावेला। थां थांरा ओठी ने अठा सूं भेजो।"

गैलीराणी वोली, "म्हारे कस्या ओठी है अवै ? म्हारा सवार नै ओठी तो सायव रे लारै, पाबूजी रे लारै गिया। म्हारो तो ओठी एक जीवतो नी रियो। भाया ! थूं धरम रो भाई है। वेन रा अटकिया कारज ने कदे ही भाई नटै कै ?"

राईको झट अमरकोट जावा ने त्यार व्हेग्यो। गैलीराणी सोढ़ी रे कागद लिख्यो। आगती आगती रोवती गी, चार ओळां मांडी,

"थांरा अर म्हारा सूरज चांद छिपग्या। दिनड़ो छिपग्यो अंधारी रात आयगी। करमां में वेमाता आंक लिख्या जो टळै नीं। म्हूं सती व्हेयरी हूं। थां ही सती व्हेता व्हो तो झट आयजावो। नीं तो वाप रे घरै बैठ्या माळा फेरजो।"

सूरज ऊगतां ऊगतां राईको अमरकोट पूग्यो।

फूलमदे सोढ़ी ऊंट दौड़तो लगो आवतो देख्यो। सोढ़ी रो काळजो धूजग्यो।

ओठी तो आवतां ही सोढां री पोळ उतरयो। जुहार मुजरा कीधा।

"आओ, पगरखी खोलो। जाजम पै बैठो। कठा सूं आय रिया हो ?"

"कौळू सूं आय रियो हूं, सोढ़ीजी रे कनें आयो हूं।"

"दळां रा समाचार ?"

"जस तो पावूजी जीत्या, खांडे खीची जीत्या"

सोढ़ां रो सगळो साथ फीको पड़ग्यो। माथा पै सोढां चाळ ओढ़ लीधी। दासी नै बुलाय नै कह्यो, "ओठी ने फूलमदे कने लेजा।"

ओठी जायनै देखै, साथण्यां रे बीचै सोढ़ी यूं बैठी जांणै कूंजा री डार रे बीचै कूंज बच्ची बैठी व्हे। भोळो भोळो मूंडो, हाथां रे कांकण डोरड़ा बंध्योड़ा, फेरां में पैरचोड़ी पोसाक पैर राखी हाथां पगां रे वियाव री में'दी मंड्योड़ी।

ओठी आगै पग देवै नै पाछा पड़ै। काळजो वळ रियो, सोढ़ी ने जायनै कांई कैवूंला।
ओठी तो वजर री छाती कर गैलीराणी रो कागद नै पावूजी रा सैनाण सोढ़ी रे आगै कीधा। पावूजी री पाग देखी, सीस री कळंगी ओळखी। कांकणडोरड़ा ने सोढ़ी उठाय छाती रे लगावा लागी नै तिवाळो खाय नीचै जाय पड़ी।

एक घड़ी सूं सोढ़ी चेत करयो तो थरथर डील कांप रियो। डसूका भर डाड मारी। आंस्यां सावण भादवो व्हेगी। काठी छाती कर जेठाणी रो कागद वांच्यो। वांचतां ही वोली रथ जुड़ावो। गैलीराणी वाट देख री है। झट करो। पावूजी कनें झट जाय पूगूं।

मां रा गळा में वाथ घाल सोढ़ी रोवा लागी। मां री सारी कांचळी आंसुवां सूं भींजगी। मां, वेटी रे माथा पै हाथ फेरै नै दोई कुरळावै। वेटी सासरिये जाय री है। कसी आंख्यां सूं वेटी रो वो रूप देखै? कांई कैयनै आसीस देवै? सासरा री सीख वेटी ने कांई देवै?

मां रे मूंडा में तो जीभ सूखगी। पखाण री मूरती व्हे ज्यूं ऊभी। सोढ़ी रा मूंडा रो दूध ही नी सूख्यो। बेमाता ये आक मांडवा लागी जद वींरी दवात क्यूं नी फूटी।

सोढ़ी रोय री, "मां सांवण रे मी'ने थां कसी बेटी ने बुलावोला ? कुण थां सूं अवै गळा में गळो घाल मिलेला ? मां कींने अबै था हंस हस छाती रे लगावोला ? कसी बेटी ने सासरा रा समाचार पूछोला ? कीने लाड़ कर घी घाल घाल चूरघो जिमावोला ? औरां रा घर तीजणियां सूं रूपाळा लागैला, मा, थांरा आंगण मे कुण लैरियो ओढ़ फिरैला ?

सोढ़ी ने यूं रोती देखी तो सूरजमल सोढ़ा री करड़ी छाती मेंण री नांईं पिघळगी। बेटी ने छाती रे लगाय डसूका भरवा लाग्या।

सोढ़ी रोय रोय कंवा लागी, "बावाजी, म्हूं तो चाली यो थांरो डायचो म्हारे करम में नी लिख्यो। ये ढोलिया, निवार अठै ही धरचा रैगिया। म्हने था घणा लाड़ लड़ाया, रूस जाती तो हाथ सूं गिरास दे दे जिमाता, गोद मे लेनैं खेलावता। थांरी गोद री चिड़ी तो उड़ री है। थां हाथ सूं म्हने सत रो नारेळ दो। म्हूं जावूं।"

बाप, आखरी बगत माथा पै हाथ मेल्यो, नारेळ झेलायो।

सोढ़ी बाथ घाल भाई सूं मिली।

भोजाई सूं मिली, "आखरी मिलणा है अवै ईं जनम मे तो मिलांला नी।"

एक एक साथण सू भुजा पसार पसार मिली, "अवकै बिछड़यां फेर नीं मिलांला। थां म्हांरे आंगणै रमवा ने मत आवजो, नी तो म्हारी मां याद करकर ऊभी रोवैला।" सगळा सूं मिल राम राम कर सोढ़ी रथ पै चढ़ी।

डायचा में देवा ने रथ बणायो जींरी लाल झूल बैलियां ऊपर सूं उतार धोळी झूल घाली। बळदां रीं लाल रंग री सींगोटी परी उतारी गळा रा घूघरा खोल लीधा।

पूरी वीनणी नी बणी जठा पै'ली सती व्हेवा ने सोढ़ीजी सासरै चाल्या।

कोळू में आया। दोई देराणी जेठाणी गळा में गळो घाल रोई जांणै काचो माट फूटियो। गैलीराणी रोवा लागी, "आज घरै वीनणी आई। करम फूटिया नी व्हेता तो सोढ़ी रा कोड करती, चांवळ भात रांध दोई देराणी जेठाणी भेळै जीमती। वधायनैं घर में लेवती। आज म्हारा घर में जगाजोत लागगी व्हेती।"

सोढी वोली, 'म्हने पाबूजी रा मे'ल तो दिखावो।"

गैलीराणी, सोढ़ी ने ले पाबूजी रा सूना माळिया में आया।

"सोढ़ीजी, अठै थांरा स्याम रैवता या वांरी वैठवा री जगां, अठै चांदो अर डामो वैठता। यो कमवजिया रो भालो पड़्यो। वांरा हाथ में भालो रियो जतरै कोई चूं कारो नीं कीवो। यो गोखड़ो अठै पाबूजी वैठता।"

सोढी वैठक री रज लेनै माथा रे लगाई। गोखड़ा ने सलाम कीवी। भाला ने उठाय छाती रे लगायो।

"भाला, थारो खोटो भाग। थंनें वावणिया अठै खूणा में छोड़ परा गिया। गोखड़ा में अवै कवूतरा धूं वाळा घालेला।"

सोढी डसूका भर पाबूजी री एक एक चीज देखवा लागी, यां मे'लां री सोभा म्हारा मन ने वाळ दीवो, अवै तन ने अगनी वाळेला। 'पोळ्या, रंग रो डावो भट ला। पोळ पै छापो लगावूं। पोळिये संदूर में रग घोळनै लायो। सोढी संदूर में हाथ भर पोळ रे माथै हाथ रा छापा लगाया। सती व्हेवा ने त्यार व्हेगिया। देराणी जेठाणी, नेखचख सूं सिणगार कर लीला घोड़ा पै सवार व्ही।

आगै आगै ढोल वाजता जाय रिया, पाछै वसती रा लोगां रा "हर हर" रा जंकारा सूं गगन गूंज गियो। घोड़ा रोक सतियां नीचै ऊतरी। रेसम डोर लगाय कुआं सूं पाणी खैंच्यो। कपड़ा पैरियां सूवां ही खळखळ पाणी कूढनै सतियाँ सनान कीवो। सतियां माथां पै गंगाजळ री झारी रा मूंडा खोल दीधा। जो धन माल हो सगळो वामणां ने पुन्न कर दीवो। चारण पाबूजी री वीरता रो वखाण कीवो, जांने धोवा भर भर सोना रो गहणो देय दीवो।

चन्नण नै नारेळां री चिण्योड़ी चिता में दोई सतियां वैठगी।

रजपूताणी

रेत रा टीबा वळरिया। ऊनी ऊनी लू असी चाल री जो कानां रा केसां ने वाळती नीसर जावै। नीचै धरती तपरी, ऊंचो अकास वळरियो। खेजड़ा री छाया में बैठ्यो सोढो जवान भीतर सूं अर वाहर सूं दोनूं कानी सूं दाभ रियो। वारला ताप सूं वत्ती हिया में सळगती होळी री भाळां वाळ री। दुपैरी रा सूरज री सूधी मूंडा साम्हीं किरणां आंख्यां में गवोड़ा पाड़ री पण वींने ईं री सुध नीं। वो तो ऊंडा विचार में अस्यो डूबरियो के चारूं दिसा एक सी लाग री। आज वींरे होवण वाळा सासरा नूं सुसरा रो सनेसो ले आदमी आयो,

"परणणो व्हे तो पनरासौ रिपिया तीन दिनां में आय गिण जावो, नीं तो आखा तीज ने थांरी मांग रो दूजा रे सागै वियाव करदांला।"

"सुणतां ही सोढ़ा जवान री आंख्यां में भाळां उठी। अपणै आप ही हाथ तरवार री मूठ पै पड़ग्यो। दांता सूं होठां ने काट रैग्यो। वीं री मांग दूसरा री होजासी, जींरी खोळ वींरी मां रिपियो नारेळ घाल आज सूं दस बरसां पै'लां भरी अर वांरो वियाव कर देणै रा मनसूबा करतां करतां मां वाप दोई मरग्या। घर में नैनपण पड़गी। कुण खेती वरड़ी, गाय भैंस सम्हाळतो। अबै पनरासौ रिपिया कठा नूं लावै? "ए रिपिया दीधां विना वींरी मांग दूसरा री होजासी, जींरा सपना दस दस वरसां सूं वो देखतो आयो, वी मांग ईंज आखा तीज ने दूजा रे लारै कर देला।"

सोढ़ा जवान री आंख्यां में खून उतर आयो। आज तक कदे ही असी व्ही है मांग रे वास्ते तो माथा कट जावै, म्हूं जीवतो फिरूं अर म्हारी मांग ने दूजो परणै, हरगिज नीं, हरगिज नीं।

"वोहरा काका, म्हारी लाज थारे हाथां है।"

"लाज तो म्हे धणी ही राखी है। थूं वता कस्या खेतां पै पनरासौ गिण दूं? अडाणै कांई राखैला?

"म्हारे कनें है ही कांई ? रजपूत री आवरू एक तरवार रो खांपो म्हारे कने वच्यो है ।"

"तो भाई, कीं दूजा वोहरा रो वारणो देख ।"

सोढ़ो तड़फग्यो । देख काका, थें म्हारा घर री सळी सळी, म्हारा नैनपण में झूठा सांचा खत मांड मांड लेय लीवी । म्हारा घर में ठीकरो तक नीं छोड़्यो । म्हे थनें सारो दीधो, अर जो ही मांगतो व्हे देवण त्यार हूं । पण ईं वगत म्हारी, म्हारा घराणां री लाज राखलै । जींरी मांग दूजा रे लारै परी जावै वो जीवतो ही मरयां वरावर है । ईं तरवार, जगदम्बा ने माथै मेल सोगन खावूं थारो पीसो पीसो दूध सूं धोयनै चुकावूं । थारे दाय आवै जतरो व्याज मांडलै । ईं वेळां म्हंने रिपिया गिण दे ।

"रजपूत रो जायो व्हे तो ये अस्या कोल करजे । म्हूं खत पै जो माड दूं वीं पै थूं दसगत कर देवैला कै ?

"मायो चावै तो दे दूं पण अवार म्हारी लाज राखलै ।"

वाणिये खत माड'र आगो कीवो । कान पै मेली लगी कलम ने उठाय हाथ में झेलाई ।

"वांचलै खत ने, छाती व्हे अर असल रजपूत व्हे तो दसगत करजे ।"

खत वांच्यो, मांड राख्यो "ये रिपिया व्याज सूधी नीं चुकावूं जतरै म्हारी परणी लगी ने वेन ज्यूं समझूंला ।"

होठां ने दांता वीचै दवाय, राती राती झाळां निकळती आंख्यां सूं झांकतो दसगत कर दीधा ।

वरसां सूं सोढा रो सूनो घर आज वस्यो । आज वींरी मेड़ी में दीवो वळ्यो । दीमकां लाग्यो, लेवड़ा पड़्यो घर, लींप्यो चूंप्यो हंस रियो । घणा वरसां पछै आज वींरे घर में घूघरां री छम छम व्ही । पीयर सूं डायजा में आयोड़ा गाड़ो भरया असवाव सूं गिरस्थी जमाई । सोढो जींमवा वैठ्यो, वीनणी हाथ सूं पोयोड़ी चीड़ां री वींझणी ले पवन घालवा लागी । दांत रो चूड़ो पैरयां हाथां सूं परुस री । सारो घर आज कांई रो कांई सोढा ने लाग रियो । रजपूताणी री आंख्यां में नेह उभळ रियो पण सोढा री आंख्यां गम्भीर । वा परुसती री यो जीमतो रियो । सोढो वोलणो चावै पण वोलणो आवै नीं वा तो आगै व्हे वोलै ही किण तरह ? खाय, चळू करण लागो, रजपूताणी झट ऊठ लोटा सूं हाथां पै पाणी कूढवा लागी, सोढा री नजर घूंघटा में पसीना री वूंदा सूं चमकता मूंडा पै पड़ी, वींरी आंख्यां रे

आगै वाणिया रो खत भाटा री चट्टान ज्यूं आय ऊभो व्हेग्यो, वींरा हाथ कांपग्या। लोटा सूं पड़तो पाणी री धार जमीं पै पड़ बैयगी। रात पड़ी, सोणै री वेळा आई। सासरा सूं आयोड़ा ढोल्या पै सूता। झट म्यान सूं तरवार काढ़ दोय जणां रे बीच में मेल, मूंडो फेर सोयग्यो।

रजपूताणी सहमगी। "थूं क्यूं, म्हारा सूं कांई नाराज है?"

एक, दो, तीन, दस पनरा रातां बीतगी। या हीज तरवार काळी नागण ज्यूं रोज दोवां रे बीचै। दिन में बोलै, बात करै जद तो जाणै सोढा रे मूंडा सूं अमरत झरै, आंख्या सूं नेह टपकै पण रात पड़तां ही वीज मूंडा सूं एक बोल नीं निकळै वे हीज आंख्यांसाम्ही तक नी झांकै। रात भर अतरा नजीक रैवता थकां ही घणां दूरा। दिन मे घणां दूरा रैवतां थकां ही घणां नजीक।

रजपूताणी बारीकी सूं सोढ़ा रो ढंग देखै गैराई सूं सोचै। वी सूं रियो नी गियो। ज्यूं ही तरवार काढ़ ढोल्या पै सोवा लाग्यो, झुक पग पकड़ लीधा।

"म्हारो कांई दोस है? म्हारा पै नाराज क्यूं? गलती कीधी तो म्हारा मा बाप जो थांने रिपिया सारूं फोड़ा पाड़्या।" टळ टळ करता आंसू सोढा रे पगां पै जाय पड़्या।

"कुंण कै म्हूं थारा पै नाराज हूं। थूं म्हारी, म्हारा घर री धणियाणी है।" आपरा हाथ सूं वींरा हाथा ने पगां सूं दूरा करतो सोढ़ो बोल्यो।

"तो अतरा नजीक रैवतां लगां, म्हासूं अतरा दूरा क्यूं?" सोढा रे ललाट पै दो सळ पड़ग्या।

"थूं जाणणो ही चावै?"

"हां।"

"तो ले वांच ईं खत ने।"

दीवा री वाती ऊंची कर टमटम करता दीवा रा चानणां मे खत बांचवा लागी।

ज्यूं वांचती गी ज्यूं ज्यूं वी रा मूंडा पै जोत सी जागती गी। आंजस अर संतोस सूं वीरो मूंडो चमकवा लाग्यो। खत झेलाती लगी, वेफिक्री री सांस लेती बोली "ईं री कोई चिंता नी, म्हने तो डर हो थांरी नाराजगी रो। वरत पाळणो तो घणो सोरो।"

दिन ऊगतां ही आपरो छोटोमोटो गैणोगांठों, माल असबाव रो ढिगलो सोढा रे मूंडा आगै जाय कीधो,

"ई ने वेच घोड़ा लावो, करजो उतारणो सवसूं पै'लो धरम है। घरै वैठ्या तो करसा चोखा लागै। रजपूत चाकरी सूं सोभा देवै। कोई राजा री जाय चाकरी करां।"

"थनें पीयर छोड़ दूं ? थूं कठै रैवेला ?"

"पीयर क्यूं ? जठै थां वठै म्हूं, दो घोड़ा ले आवो।"

"पण, पण थूं साथे निभेला कस्यां ?"

"क्यूं नीं, म्हूं किसी रजपूत री जायोड़ी नीं कै, रजपूताणी रा चूंख्या नीं कै ? म्हंने ही थांरी नांई तरवार वांधणो आवै, म्हे ही म्हारा बाप रा घोड़ा दौड़ाया है।"

"थारो मन, सोचले।"

"सोच्योड़ो है।"

तेज सूं चमकतो मूंडो सोढो देखतो रैग्यो।

सवा हाथ सूरज आकास में ऊंचो चढ्यो व्हेगा। चित्तोड़ री तळेटी सूं कोस दो एक पै दो घोड़ा एकीवेकी करता चित्तोड़ साम्हा जाय रिया। दोई जवान सवार एक सी उमर एक सी पोसाक पैरयां, घोड़ां ने रानां नीचै दवायां दौड़ायां जाय रिया।

हाथ रा भाला, ऊगता सूरज री किरणां सूं चमक चमक कर रिया। कमर में वंधी तरवारां घोड़ा रे दौड़वा रे साथै साथै रगड़ा खाय री। वां ने देख कुण केवै के यां में एक स्त्री है। रजपूताणी ई वगत एक सूरापण भरया जवान सी लाग री। दांत रो चूड़ो पैरयां कंवळी कळायां नी री। मजवूत हाथ भाला ने गाढो पकड़्यां लगां। लाजती लाजती धीरै धीरै कोयल री सी बोली री जगां अवै मेरी रो सो कण्ठ सुर वणाय लीधो। घूंघटा में ही सरम सूं लाल लाल पड़जावा वाळा कपोल नीं रिया। सूरज री किरणां री नांई मूंडा सूं तेज फूट रियो। लाली लीधां लोयणां सूं नेहचो ऊफण रियो। जाणै साची दुरगा रो सरूप व्हे।

घोड़ा दौड़ता, एक झपाटा में चित्तोड़ री तळेटी में जाय पूग्या। वठी ने राणाजी दरवाजा वारे निकळ्या। नजर सूधी वांरा पै पड़ी, दो पल वीं जोड़ी पै नजर रुकगी घोड़ा री लगाम खैंच पूछ्यो,

"कस्या रजपूत ?"

"सोढा।"

"अठी किसतरै आया ?"

"सेर वाजरी सारूं, अन्नदाता।"

"सिकार में साथै हाजर व्हेजावो।"

मूजरो कर दोई जवानां घोड़ां री वाग मोड़, लारै घोड़ा कीधा।

सूरां रे लारै घुड़दौड़ व्ही। आगै आगै सूर भागरियो वांरे लारै हाथ में भाला लीधाँ सिरदार घोड़ां ने नटाटूट फैंकरिया। एकल सूर टूंड री मारतो विकराळ रूप करयां घोड़ां रा घेरा ने चीरतो बारै निकळ्यो। चारूं कानी हाको व्हीयो, एकल गियो, गियो, जावा नीं पावै, मारो मारो।"

सगळा ही घोड़ां री रासां एकल कानी मुड़ी, जतराक मे तो एक घोडो वीजळी री नांईं आगै आयो, सवार भाला री वार कीधो जो पेट ने फाड़तो, आंतड़ा री ढिगलो करतो आर पार जाय निकळ्यो। राणाजी दूरां सूं देखतां ही सावासी दीधी।

पसीनो पूंछतो लगो सवार नीचै उतर मुजरो कर घोड़ा री पूठ पै पाछो जाय वैठ्यो। कुण सोच सकै के भाला रा एक हाथ में एकल सूर ने धूळ भेळै करवा वाळी लुगाई है।

राणाजी राजी व्हे हुकम दीधो "थे वीर हो, आज सूं थां दोई भाई म्हारा ढोल्या रा पै'रा री चाकरी दो।"

खम्मा अन्दाता कर चाकरी झेली।

सावण रो मी'नों, खळ खळ करता खाळ बैय रिया। तळाव चादर डाक रिया। डेडका हाका कर रिया। एक तो अंधारो पख, ऊपरै चौमासा री काळी रात, काळा काळा वादळा छाय रिया। वीजां सळाका लेवै तों असी के आंख्यां मिच जावै, खोल्यां खुलै नीं। इन्दर गाजै तो अस्यो के जाणै परथी ने ही पीस दूं। अंधारी भयावणी रात हाथ सूं हाथ नी सूझै। राणाजी तो पोढ्या, दोई रजपूत पै'रो देवै।

हाथ में नांगी तरवारां लेय राखी। वीजळी चमकै जो यांरी नांगी तरवारां वीं चमक में झलमल करै। आधी रात रो वगत, राणाजी ने तो नींद आयगी पण राणी री आंख्यां में नींद नीं। सूती सूती कुदरत रा रूप रा अदभुद मेळ देख री।

दोई रजपूत तरवारां काढ्यां मे'लां रे वारणा आगै ऊभा।

उत्तर में वीजळी चमकी रजपूताणी ने याद आई म्हारा देस कानी चमक री है। ईं याद रे लारै केई वातां याद आयगी। आज कमावा खातर यो मरदानो भेस करयां विदेस में आधी रात पैरो देयरी हूं।

दूजी अस्त्रियां घरां में आडा बन्द कर सोय री है। म्हूं नांगी तरवार लीवां ऊभी ऊभी रातां काढूं। अतराक में कने ही पपैयो बोल्यो "पी पी"। नारी हिरदे री दुरबळता जागी। "पी कठै? घणोई खने है पण कांई व्हे? म्हारी गिणती नीं तो संजोगण में है, नीं विजोगण में। म्हांसूं तो चकवा चकवी चोखा जो दूरा दूरा बैठ वियोग काढै। म्हूं तो रात दिन साथै रैवती लगी ही विजोगण सूं मूंडी।" वींरो बांध टूट गियो। जाय'र सोढा रा कांधा पै हाथ मेल्यो, जाणै बीजळी पड़ी व्हे। दोई जणां कांपग्या। सोढो चेत्यो, "चेतो कर रजपूताणी।" रजपूताणी सम्हळी। एक निसासो न्हांकती बोली,

देस बिया घर पारका, पिय बांधव रे भेस।
जिण दिन जास्यां देस में, बांधव पीव करेस।।

देस छूटग्यो, परदेस में हां। पति है वो भाई रा रूप में है। कदे ही देस में जावांला जद ईं ने पति बणांवाला।

राणी सूती सूती या लीला देख री। दिन ऊगतां ही राणी राणाजी ने कह्यो, "यां सोढा भाइयां बीचै तो कोई भेद है।"

"क्यूं कांई बात है? माथो तोड़ दूं?"

"तोड़णै री नीं जोड़णै री बात है। यां में एक लुगाई है।"

"राणी भोळी बात मत करो। या सूरता, यो आंख रो तौर, या मरदानगी, लुगाई में व्हे कदी?"

"आप मानो भले ही मत मानो। यां में एक लुगाई है अर कोई आफत में है।"

"यां रो पतो कस्यां लगावां?"

"ईं री परीक्षा म्हूं करूं। आप मे'लां में बिराज जावो, जाळी, में सूं झांकता रीजो वां दोई भाइयां ने बुलावूं।"

चूल्हा पै दूध चढाय दीवो, डावड़ी ने इसारो कीवो, वा बारै निकळगी। दूध उफणतो देख्यो तो रजपूताणी हाको कर दीधो, "दूध उफणै दूध उफणै।" सोढो आंख रो इसारो करै जतरै तो राणीजी बारै निकळ पूछ्यो, "बेटी, सांच बता थूं कुण है। म्हारा सूं छिपा मती।" रजपूताणी आंख्यां आगै हाथ दे राणीजी री छाती में मूंडो घाल दीवो।

सोडे सारी बात सुणाई। राणीजी घणां राजी व्हीया।

"थांरा करजा रा रिपिया ब्याज सूधां म्हूं सांडणी सवार रे साथै थांरे गांव भेजूं। थां अठै रैवो गिरस्थी बसाओ।"

सोडे हाथ जोड़्या "अन्नदाता रो हुकम माथा पै पण जठा तांई म्हूं जाय म्हारा हाथ सूं रिण चुकाय खत फाड़ नीं न्हांकूं उतरै हुकम री तामील कियां व्हे। म्हांने सीख बगसावो।"

राणीजी करजा रा रिपिया अर गिरस्थी बसाणं रो घणो सारो सामान दे वांने सीख दीवी।

वीं पड़वा री रात रा आणंद रो विचार ही कतरो मीठो है।

पिउसंधी

"या अल्ला !" पीड़ा सूं टसकतै बूढै बिलोच करूंट फेरी ।

कनें ही बैठ्योड़ी बेटी भेलो देवा ने हाथ आगो कीधो । बाप री लांबी चोड़ी देह साम्ही देखवा लागी । बिलूचिस्तान सूं आयोड़ा बिलोचियां रो सरदार कांगड़ो माचा पै पड़्यो मौत सूं लड़ रियो, जमराज रा दूत लेजाण ने खैंच रिया । बरस चवदा पनराक री पिउसंधी सिराणै ऊभी बाप री पीड़ा देख छटपटाय री । सारी ऊमर घोड़ा री पूठ माथै घर बसावणियो बिलोच प्राणां ने कंठा में अटकाय राख्या । वा पीड़ा ही सिकारपुर रा पठाणां सूं व्हीयोड़ी हार । वीं बेइज्जती रो बदलो लेण ने पठाणां री घोड़्यां खोस ले आवा री घणी कोसीस कीधी पण जतरी दांण गियो, नाक रगड़तो, खाली हाथां पाछो फिरणो पड़्यो । पिउसंधी वीरा मन रा दुख ने देख री. बाप रा माथा पै हाथ फेरती बोली, "तुस्सांभे जीव नूं चैंण रक्ख ।"

कागड़ो बिलोच, घणी पीड़ा अर निरासा रा आंसू भर्‌यां बोल्यो,

"अस्सांभे पुत्तर नीं, पुत्तर होय तो सिकारपुर पठाणां दी घोड़ी ल्यावै ।"

बेटो नीं जो घोड़्यां लाय बाप रो वैर ले, ईं दुख सूं बाप रो जीव नी निकळ रियो है । पिउसंधी रा बिलोच रगत मे सरणाटो आयग्यो, लोही दौड़ग्यो । बाप रे साम्हे छाती ताणती बोली,

"मैंड़ा बोल सच्चा जांणै, जै तुस्सांभी पुत्तरी हूं तो घोड़ी ल्यादूं ।"

बूढा बाप रे कानां में जाणै अमरत बरस्यो ।

"तो ला पंजा दे ।" हाथ लांबो पसारियो ।

पिनसंधी हाथ पै हाथ राख वचउ दीधो । सन्तोख री सांस रे सागै बिलोच रा प्राण उड़ग्या ।

पिउसंधी माथा रा केसां रो जटाजूट बांध्यो, माथै लपेटो बांध्यो। बाप रा घोड़ा पै जीण कस्यो। बाप रो तीर कवांण संभाळ्यो। बिलोच जवानां रे लारै सस्तर विद्या सीखै। रोज घोड़ो दौड़ावै। सारो दिन कवांण पै तीर चलावै, रात पड़्या बिछाणां पै सूती र सपना देखै तो पठाणां पै तीर फैंकवा रा। खावतां, पीवतां, उठतां, बैठतां तीर अर कवांण। ग्यान ध्यान सगळो तीर कवांण! वा भूलगी के वा एक सोळा बरसां री सु दरी है। वींने चेतो ही नीं रियो के मिनख जाति रा अस्त्री अर पुरस दो भेद है। वा सोचती के वा कांगड़ा बिलोच रो बेटो है, वींरो मन कैवतो, वा बेटो है, आत्मा हूंकारो भरती वा बेटो है, दुनियां कैवती अर जांणती के या कांगड़ा बिलोच रो बेटो है।

बाप री पोसाक पैरयां, बाप रा ही सस्तर बांध्यां, बाप रा घोड़ा पै सवार व्हे निकळती जद लोगां री आंख्यां वींरा मूंडा पै एक पल तो अटक ही जाती। नित री कसरत सूं कस्योड़ो सरीर, सूरज री किरणां री नांई फूटतो मूंडा ऊपरै तेज। देखवा वाळा देखता रै जाता। बूढां रा मूंडा सूं निकळ जातो "कोई जवान है।" जवानां री नजर वीं सूं हट आपणै सरीर माथै बराबरी करण ने अपणै आप परी जाती अर दूजै ही पल पलकां झुक जाती। मांवां देखती तो एक अभलाखा मन में आय जाती, "म्हारो बेटो ही अस्यो व्हे।" जवान स्त्रियां अपणै पति रा मन में मांड्या चित्तर में ईंरो रंग घोळवा लागती।

पिउसंधी बिलोच जवानां रे सागै तीर चलाणै रो अभ्यास करती जद मजाल कांई के कोई ईं रा मुकाबला में आय तो जावै।

कान तांई खैंच'र तीर छोड़ती जद हजार पांवडा दूरो जाय निसाणो लागतो।

दाना बूढा दाद देता, "ईं रां बाप रो तीर पांचसौ पांवडा पूगतो यो हजार पांवडा दूरा री खबर ले।"

सांझ रो वगत, सूरज भगवान आपरी किरणां ने भेळी कर घरै पधार रिया। आखा दिन डाळी डाळी फदक नाच'र पंछी घरां साम्हां मूंडा कीधा। सूरज री किरणां सूं सुनैरी रंग्योड़ी पांखां पसारयां लीला आभा रे नीचै उड़ रिया। घूंसाळा में सूं छोटा छोटा मूंडा काढयां बच्चा मांवां रे आणै री "चूं चूं" करता बाट न्हाळ रिया।

रेत रा टीबां रे ढाळ में, छोटी सी तळाई पै एक जुवान बैठ्यो, पाणी में झांकतो कांई सोच रियो। कनें ही एक मोटो हिरण मरयो पड़्यो, वींरी गावड़ में धंस्योड़ा तीर कनें सूं टपकती लोही री बूंदां बताय री के अबार अबार ही सिकार कीधी

है। खेजड़ै रे गोड़ सूं वंध्यो घोड़ो हींस रियो, तीरां सूं भरचो माथो जीण रा सिंघाड़ा में लटक रियो।

टीबां रे पाछली कानी, मिनखां रे वोलणै री, घोड़ां रे टापां री आवाज सुण जवान ऊंचो माथो कीवो। टीवा रे ऊपरै ऊभो एक आदमी हाथ सूं आणै रो इसारो करतां आपरा साथ वाळां ने हेलो मारचो, "तळाई में पाणी है, आय जावो।"

थोड़ी ही देर में, कतरा ही तिसाया घोड़ां रा मूंडा पाणी सूं जाय लागा। आयोड़ा घोड़ा घोड़चा ने देख वीं जवान रो घोड़ो ऊंचो मूंडो कर जोर सूं हींसवा लाग्यो। आयोड़ा मिनख डोढी डोढी आंख्यां सूं वीं जवान साम्हां देखै, मन में केवै, रूप अर तेज रो अस्यो मेळ देखणै में नीं आयो, ईं सूरज री किरणां तो डूब री है अर ईंरा मूंडा सूं किरणां फूट री है। कुण व्हेला यो। एक सवार सूं रियो नीं गियो, जांणै कोई सगती वींने खैंच'र वठै लेजाय री व्हे। घोड़ा सूं उतर वीरे कांनी चाल्यो।

"काळेर तो ठाढो है, कठै मिल्यो?" सिकार करचोड़ा हिरण रे कांनी झांकतै, सवार पूछ्यो।

"अगला ताल में। आओ वैठो विश्राम करो।"

या ही तो चावतो वो। सवार वैठ्यो, जवान सरक'र विछयोड़ा जीण पै आधी जगां सवार ने दीधी। वातां व्हेण लागी। आपणी आपणी ओळखांण कराई।

"म्हंने भीमजी भाटी केवै, पाटण गांव रो हूं।"

"म्हूं कांगड़ा बिलोच रो वेटो।"

'आप तो सिंव रा रैवासी हो, अठी ने कियां आया?"

"सिकारपुर जाणै रो मनसूवो है।"

"सिकारपुर जाणै रा मता सूं तो म्हे ही आया हां। पठाणां री घोड्यां रो नाम तो आप ही सुण्यो व्हेला।"

"सुण्यो कांई वांरी खातर तो अतरा दूरां सूं चाल'र आयो ही हूं।"

"आछो! घणो आछो!" भीमजी राजी व्हेग्यो। आछो साथ व्हीयो। म्हारे साथै तीन सौ रतपूत है। आपरे सागै कतरोक साथ है?"

पिउसंवी भीमजी साम्ही मुळकती वोली, "म्हारा साथी तो म्हां हीज हां।"

कंथा रण में पैंसकै, कांई जोवै छै साथ।
साथी थारा तीन है, हियो, कटारी, हाथ।।

ठाकरां ! म्हारा तो ये हीज तीन साथी है। तीन सौ कोनी।"

भीमजी राजी राजी, साथ वाळां नें वठै हीज ठैर जाणै रो कह्यो। एक आदमी ने भेज्यो सिकारपुर पठाणां री घोड़ियां चरवा ने कठी ने जावै जींरो पतो लगायनै आवै ज्यूं।

खबर लाया, घोड्यां बीड में चर री है, दस बारा आदमी रुखाळी में साथै है। ये गिया जो घोड्यां ने घेरी, जो आदमी साम्हो व्हीयो वींरे माथा में मारी। रुखाळा भाग'र गांव मे जाय हाको कीधो, पठाण तीर कवांण ले घोड़ा पै सवार लारै रा ला रै भाग्या। घोड़ां रा खुरां सूं उडी खेह रो बादळो छायग्यो। भीमजी कह्यो, "पठाण आयग्या है झट भागो।"

"कोरा भाग्यां काम नी चालै, भीमजी, यां आवतां पठाणां ने रोको। एक काम थांरो, एक काम म्हारो। कै तो रुकनै पठाणां ने रोको, कै घोड़्यां घेर आगै बढो। बोलो झट।" विलोच जवान दाकल कीधी। घोड्यां घणी है, म्हां ले'र आगे बढ़ां, थां यांने रोको।"

"घणी आछी बात। यांने एक पग आगै नीं देवा दूं, थां धीरै धीरै खड़ो, पाछलो सोच ही मत करजो।"

भीमजी अर वांरा तीनसौ ही साथी घोड़्या घेर आगै वढ़्या। पिउसंधी कवांण पै तीर चढ़ाय, मारग में ऊभी व्हेगी। पठाणा रो झुण्ड, दांता सूं होठ चाबतो, झाळ मे भर्यो, घोड़ा दपटातो आयो।

"ठैर जावो, वठै रा वठै, आगै पग दीधो तो मार्या जावोला। जींरी ग्यारासौ पावडा तीर फैकवां री हिम्मत व्हे जो आगै आवजो।"

लारै रो लारै तणण करतो तीर गियो। हजार पांवडा पै ऊभा एक पठाण री छाती में जाय गड्यो। पठांणा रा आगै बढता घोड़ा धीमा पड़ग्या। पठाण ताण ताण'र तीर फैकै जो कींरो ही तीनसो पांवडा पै पड़ै तो कींरो ही साढा तीनसो पावडा पै, हद जो एक दो जणां रो चारसो पावडा तक पूग्यो। पिउसंधी पागड़ा पै पग दे ऊभी व्हे'र तीर फैकै जो हजार पांवडा दूरां ऊभा पठाणां रा जत्था में जाय जवानां ने बींधै। छाती वाळा दस वीस जणां, घोड़ा दौड़ायां आगै वढणो चाह्या पण गैला रा गैला में हीज पिउसंधी रा तीर वांने अर वारा घोड़ां ने ठिकाणै राख दाधा। एक रो ही तीर पिउसंधी तक पूग्यो नीं।

पठाण ढीला पड़ पाछा फिरया, पिउसंघी पाछै फिर फिर देखती जावै, घोड़चां रे खोजां खोजां चाली ।

"वाह ! विलोच वाह !! कमाल करग्यो भाईड़ा आज ।"

"कमाल वमाल कुछ नी, भीमजी । लाओ घोड़चां री पांती करां, आधी थांरी आधी म्हारी ।"

"या किया होवै ? आधी थांरी अर आधी म्हारी क्यूं ? थां एक म्हां अतरा ।" भीमजी रा साथ वाळा खळभळिया ।

"आधी क्यूं नीं ? आधो काम थां सगळा मिल'र कीवो, आधो काम म्हैं एकलै कीवो । थां घोड़चां घेरी, म्हैं पठाणां ने रोक्या ।"

"या नीं व्हे, जतरा मूंडका वतरी पांती ।"

पिउसंघी ने आई रीस, कवांण पै तीर चढायो "आय जावो सामने, जो जीतै वींरी घोड़चां, सणण सणण करता दो तीनेक तीर खेजड़ा रा गोड ने आर पार करता निकळग्या । एक री छाती नीं चाली आगै आवा री । भीमजी घोड़ां री आधी पांती कीधी । एक सांड घोड़ो वत्तो । भाटचां पाछो रगड़ो कीधो "यो तो म्हे ले जावांला ।"

पिउसंघी तो काढ तरवार वीं सांड घोड़ा रे कमर में झाटकी जो दो वटका । आपरी पांती री आधो आध घोड़चां घेर वढी, पांवडा पचासेक तो गी अर पाछी फिरी । "भीमजी, लो ये घोड़चां थां ही राखो । म्हांरे कांई करणो । लेणी ही जो ले लीधी, अवै थांने दीधी ।"

या कैतांई पिउसंघी तो घोड़ा रे एड लगाई, घोड़ो वायरा सूं वातां करवा लाग्यो । साथ वाळा देखता ही रैग्या ।

भीमजी साथ वाळा ने समझाया, "थां खोटी कीधी जो ईं विलोच ने नाराज कर दीधो । म्हूं जावूं ईं ने राजी करूं । अस्यो वादर आडी वगत काम आवै । अस्या सूरमा सूं वणांया राखणी चावै ।"

भीमजी लारै, खोज देखतो चल्यो जावै । एक वावड़ी गैला में आई । कांई मन में आई जो भींत री कोचर में सूं झांक्यो । देखै तो ऊपरलो सांस ऊपरै, नीचै रो नीचै रैग्यो । विलोच जवान री जगां एक सुन्दरी पाणी में डील रगड़ न्हाय री, कनें पगत्या पै विलोच रा मर्दाना कपड़ा, तीर कवांण पड़्या । अतरा दिनां सूं आज एकांत जगां देख, पिउसंघी कपड़ा उतार न्हावण वैठी । कमर कमर तांईं लटकता केसां रे मांयने सोना रो सो सरीर चमक रियो । भीमजी री छाती नी पड़ी के ईंने

बतळावै, पाछा पगां फिरयो, सौ पांवडा दूरा जाय, खैंखारा करतो खांसतो खांसनो बावड़ी कानी आयो। अतरा में तो पिउसधी कपड़ा पै'र कबांण नै हाथ में नचावती बारै निकळ ही गी। भीमजी आंख्यां में रस भरया मुळकता लगा कह्यो,

"नाराज क्यूं वैग्या ? घोड़ा ही हाजर म्हूं ही हाजर। चालो गांव चालो, थां हुकम दो म्हां चाकरी करां।" डोढी डोढी आख्यां करयां, मधरो मधरो मुळकतो, हाथ पकड़तो बोल्यो, "चालो।"

"सांच साच कैदो, भीमजी, थां थोड़ी देर पै'लां बावड़ी में आया हा कांई ?"

"चाहे मारो चाहे जिवावो, या तरवार लो यो म्हारो माथो। जीवणों तो थांरे साथै साथै, मरणो तो थांरे हाथ सूं।" भीमजी आपरी तरवार काढ पिउसंधी रे हाथ में झेलाण लाग्यो। "थांरा हाथ सूं तो मरणो ही मीठो।"

तरवार ने अळगी करती पिउसंधी कह्यो,

"म्हूं बिलोच मुसलमान, थां भाटी सिरदार थांरे घर वाळा........................"

"भीमजी मूंडा पै हाथ राख दीधो "ऊं हूं" जांत पांत तो गुंवार देखै। रजपूत री जात वीरता। जो आंपां एक जात रा हां हीज।"

मूंडा पै सूं हाथ दूरो करती पीउसंधी बोली,

"म्हूं टाबर ही जद म्हारी सगाई आंटा भील रे साथै व्ही, म्हूं वींरी मांग हूं, वो बैर लीधा बिना मानेला नीं जो सोच लीजो।"

"वीरो कांई सोच ! थांने मंजूर ?"

पिउसंधी रा गाल लाल व्हेग्या, नींची आंख्या कर मुळक दीधो। भीमजी ने लाग्यो जाणै आसमान में उड़ रियो है।

अंधारी रात, हाथ सूं हाथ दीखै नीं, झरमर झरमर छांटा पड़ रिया। पिउसंधी अर भीमजी ढोल्या पै सोय रिया। कनें ही ढोलणी माथै पिउसंधी रा दो बेटा गहरी नीद में सूता।

भीमजी तो नसा में, जो गाढा सूता पड़्या पण पिउसंधी ने नींद नीं। वीजळी रो पळको पड़्यो, पळाका में पिउसधी ने दीख्यो भींत पै चढतो दांतां में तरवार पकड्यां एक आदमी, पिउसंधी चमक गी, आंटो भील ! जरूर आंटो भील !! दूजो कोई नीं आंटै भील देख्यो वीजळी रा पळाका में, पिउसंधी ने अर भीमजी ने एक ढोल्या पै सूता थका। नस नस में वासदी लागगी। "आज दोवां रा ही एक झटका में टुकड़ा करूं। घणां दिन व्हेग्या घात घालतां ने, नींठ आज मोको मिल्यो।" धीरै धीरै पग वजायां विना वो भींत सूं नीचै उतरयो।

पिउसंधी ढोल्या सूं धीरै सी नीचै उतरी सिराणा सूं नांगी तरवार उठाय हाथ में तोल्यां ऊभी । सांस रोक राख्यो तरवार ने पूरी ऊंची हाथ में उठाय राखी । आंटो भील ज्यूं ही ढोल्या कनें आयो अर सोची के दोवां ने एक साथ ही वाढूं, जठा पै'ली तो पिउसंधी री तरवार आंटा भील पै पड़ी जो माथो टूट पगात्यां कानी गुड़ग्यो, धड़ वठै हीज ढोल्या कनें पड़ग्यो । लोह्यां सूं आंगणों आलो व्हेग्यो ।

तरवार ने सिराणै मेल पिउसंधी सोयगी ।

पाछली पो'र रा भीमजी रो नसो उतर्‌यो, नीचै उतर्‌या तो लोह्यां में पग पड़्‌यो, चप चप करता पग भरग्या, जाण्यो परनाळा रो पाणी भर्‌यो दीखै, वोल्या, "रात अंधारी चीखलो"

झट पिउसंधी वोली, "आंटो वीखरियो"

मैं पिउसंवी झाटकियो, सो भीमो ऊबरियो"

जखड़ा मुखड़ा दोई वेटा ने पिउसंधी आप तीर कवांण चलावणो सिखावै, तरवार रा हाथ वतावै ।

गांव रे वारै, साथियां रे साथै दोई भाई खेल रिया । एक गुवाळ दौड़्‌यो आयो, छाती में सांस नीं माय रियो, गांव साम्हों भाग्यो आवै । जखड़ै रोकतै लगै पूछ्‌यो,

"कांई व्हीयो ? भाग्यो क्यूं जाय रियो है ?"

"ना'र ना'र, गाय ने मार रियो है, मोटो ना'र ।"

"कठै कठै ?" जखड़ै मुखड़ै साथै साथै पूछ्‌यो ।

"यो कनें ही ।"

"चाल, चाल वता" गुवाळ रे लारै जखड़ो व्हेग्यो ।

देखै तो ना'र गाय ने पकड़, छाती नीचै दवायां वैठ्‌यो, चारूं कानी झांक रियो ।

यां ने देखतां ही ना'र झपट्‌यो, जखड़ै तो आवता ना'र रे साम्हे माथै तरवार री झापटी सो भेजो खुलग्यो । "हो, हो" करतो ना'र जमीं पै ढळग्यो । पूंछ पकड़'र घींसता लगा घरै लेग्या ।

भीमजी राजी तो व्हीया पण बोल्या, "ना'र सिंध रा धणी री सिकार है। ओलम्भो आवैला।"

सांचै ही दूजे दिन तो सिंध रा नवाब रा सवार आयग्या, ना'र मारचो व्हे जीने हाजर करो।

भीमजी जखड़ा ने ले नवाब रे कने गिया।

नवाब डपटतै लगै पूछ्यो, "ना'र कुण मारचो ?"

जखड़ो ऊभो व्हीयो, "म्हे मारचो।" नवाब मूंडो देखतो रैग्यो। ईं दस वरस रा टाबर रा निस्संक पणां पै अचंभो आयो।

"क्यूं ?" नवाब सवाल कीधो।

"ना'र गाय ने मार रियो जो वीने बचावा ने, दूजो बस्ती रे कनें आयग्यो ज्यूं, मारतो नीं तो मिनखां रो नुकसाण व्हेवा देतो ?"

नवाब चुप रैग्यो। माथा सूं लगाय एड़ी तक गौर सूं वीने देख्यो। लड़का रो डील, मूंडा रो तेवर, चेहरा रो रोब, बोलणै री हिम्मत। भीमजी कांनी देख्यो। भीमजी डील डौल सकल रो तो आछो पण जखड़ा री तो बात ही और। नवाब सोच्यो, टाबर कै तो मां पै व्हे कै बाप पै व्हे। यो जरूर ईं री मां पै है। ईं री मां ने देखणी चाहीजै, कसीक है।

भीमजी सूं कह्यो, "ईं जखड़ा रो खेत बतावो, जीं खेत में यो नीपज्यो, वींने देखण री लालसा है। थां घरां जावो पण जखड़ा रो खेत बताणो ही पड़ेला।"

भीमजी ढीला ढीला घरै आया। पिउसंधी पूछ्यो, "कांईं बात व्ही ? अतरा उदास क्यूं ?"

"उदास कांईं है, कै तो घर छूटैला कै मनख जमारा पै कळंक लागैला। और कांईं नीं व्हेणी है। नवाब जखड़ै रो खेत देखणै री जिद्द करै। म्हूं म्हारी लुगाई ने कीने बताऊं ? भीमजी उदास व्हे ढोल्या पै पड़ग्या।

पिउसंधी वीं दिन भीमजी ने अमल रो दूणो गाळमो दीधो। भीमजी ने गैरो नसो व्हेग्यो, वांने सुवा देय पिउसंधी आपरी पुराणी पोसाक काढी, आपरा घोड़ा पै जीण कीधो। सुरज ऊगतां ऊगतां, नवाब रा दरवाजा वारै आय ऊभी री।

चोबदार रे सागै अरज कराई कांगड़ा बिलोच रो बेटो आयो है, मुजरा री अरज करा वै।

नवाव बुलायो, मुजरो कर अदव सूं बैठो।

"थांरो नाम ?"

"सिकार खां। आपरै सिकार री तारीफ सुणी है, म्हारे ही सिकार रो सोक है। सिकार पधारो तो सिकार खेलां, देखां अर दिखावां। सिकार करां अर करावां।"

नवाव झट सिकार री त्यारी रो हुकम दीधो, करनाळ कराई, सिकारी कुत्ता साथै लीधा, हाथां रे बाज बांध्या, सिकार चाल्या।

जठी ने पिउसंधी निकळ जावै, वठी ने जिनावरां रो ढिगलो व्हेतो जावै। वीरा निसाणा देख देख, नवाब सावास, साबास करै। तीरां री मार देख दांता तळै आंगळी देय दीधी।

सांझ तांई सिकार रम्या, घणो आणंद आयो। ना'र सूरां रो ढिगलो कर दीधो पिउसंधी तो। सामर, हिरणां सूं गाडा भरया।

पिउसंधी घरै जाणै री सीख मांगी। नवाब कह्यो, दो दिन और ठैरो। थांरे माथै घणो आणंद रियो सिकार रो। काले और चालांला।

पिउसंधी सलाम कीधी, "फेर दो चार दिन पछै हाजर व्हूंला, आज तो जरूरी जाणो ही है। नवाव कड़ा सिरोपाव दे सीख दीधी।

पिउसंधी घरै आई जतरै भीमजी ढोल्या पै पड़्या आळस मोड़ रिया हा। दूजे दिन तो नवाव रा सिपाही भीमजी ने आय ताकीद कीधी हीज जखड़ा रा खेत ने बताणै री। पिउसंधी कड़ा सिरोपाव भीमजी रे हाथ में दीधा, ये नवाब रे मूंडागै राख दीजो पछै वो खेत ने देखवा रो नाम नीं लेवै। भीमजी ने देखतां ही नवाब आंख्यां काढी।

"एकला एकला आया ? म्हें देखवा ने कह्यो वा चीज कठै है ?"

"वा तो नजर गुजार कद की ही व्हेगी।" भीमजी हंसते हंसते कह्यो।

नवाव लाल पड़ग्यो, "भीमजी ! तमीज सूं बात करो।"

"तमीज ही सूं तो कर रियो हूं। ये कड़ा सिरोपाव म्हारै पैरवाने है जांने ओळखो। कालै सिकारखां आप सूं मिल्यो कोनीं हो के ?"

नवाब अचम्भा सूं बाको फाड़ दीधो।

"वाह रे वाह सिकारखां ! असी मां हीज अस्या पूत जणै। गावड़ हलावतो, दूहो बोल्यो,

> भुंई परक्खो हे नरां, कांई परक्खो विंद।
> भुंई बिन भला न नीपजै, कण तृण, तुरी, नरिंद॥

धरती (मां) ने देखो। विना उत्तम धरती (मां) रे, तृण, घान घोड़ा अर नर आछा पैदा नीं व्हे सकै।

हूंकार री कलंगी

"यां मरैठां तो पूरो घोड़्यो घाल राख्यो है।" उदैपुर रा मेंलां में राणाजी मूंडागै बैठ्या परधान रे साम्हां झांकता बोल्या। वांरा ललाट पै चिंता रा सळ पड़ग्या। आंख्यां में ऊंडा ऊंडा भाव भरग्या।

"घोड़्यो कांई घाल राख्यो है, अन्दाता, सारी मेवाड़ तबाह व्हेयगी। लूट मार सिवाय ये तो कांई करै ही नीं, गांवां में बासदी लगाता आगै बढै।" कनें बैठ्यो एक जणो बोल्यो।

"असी दुरदसा तो बादसावां रा अर मुसलमानां रा हमला सूं ही कोयनी व्ही जसी यां मराठां रा उतपात सूं व्हेगी है। वे लड़ता तो ढंग सूं हा, ये तो जांणै कै तो बासदी लगाणो, कै लूटणो।" दूजे जणै हूंकारो भरयो।

राणाजी रा मूंडा ऊपरला भाव और ही गंभीर व्हेग्या।

मराठां री फौज मेवाड़ ने बाळती, लूटती आगै वढ़ री ही जिण सूं मुकाबलो करणै री त्यारी रा सल्लासूत व्हेय रिया। रात आधी परी गी पण सोवा रो यो वगत थोड़ो ही हो। खास खास काम करण्यां आदमियां ने बुलाय, बन्दोबस्त री सलाह व्हेय री।

"खजाना में रिपियो नीं, रात दिन रा कस्टां अर हमला सूं लोगां में भय अस्यो जमग्यो के मराठां रो नाम सुणतां ही गांव खाली कर कर मिनख भाग जावै। रजपूत पैंलां सरीखा जोरदार रिया नीं जो छाती पै हाथी रा दांतां रा धमाका झेलै।" परधान जी सारी हालत पै गौर कर समझावता बोल्या।

कनें बैठ्यो एक सरदार तड़फ्यो, "रजपूत कांई रिया कोयनी ? कदे ही पाछा रियां व्हां तो बतावो। बेटी रा बापां ! गाजर मूळी ज्यूं माथा कटाय रियां हां। पूरा पूणा दोयसो बरसां सूं मेवाड़ पै हमला व्हेता आय रिया है। पैंलां मुसलमान अर

अवै ये मराठा। रात दिन रा जुद्धां सूं म्हांरां घरां री कांइ दसा व्ही है जो गांवा में पधार'र देखो तो खवर पड़ै। एक एक घर में दस दस रांडां वैठी है।"

राणाजी ऊंचो माथो कर ठिमरास सूं वोल्या, "धरती रा धणी वाजै जांने तौ गाजर मूळी ज्यूं माथा कटावणां ही पड़ै। धणी वणणों सोरो कोयनी। वाप दादां री पीढ्यां री पीढ्यां ईं भोम री इज्जत अर मान सारू काम आई, वीं भोम ने यां धाड़ायतियां रा हाथां सूं लूटवा देणी के? लुगायां रा माथा री ओढण्यां खेंचवा देणी के? वैठ्या वहन करणी है के काम करणों? वोलो, सारा जणां भेळा व्हीया हो, कांई कांई वन्दोवस्त करणो?

एक पल सारू सारा चुप व्हेग्या। छाती पै चढ़ी थकी विपदा रो भीसण रूप सारां री आंख्यां आगै आयग्यो। कठै कतरी तोपां लगाणी। कीनें फोज मुसाहिव वणावणों, रिपिया अर धान रो परवंध कठः सूं अर किण तरह करणों, फौज भेळी करणी, सारी वातां पै विचार व्हेण लाग्यो।

मेवाड़ रा सारा सरदारां रे नाम हुकम लिख्यो गियो।

"सारा सरदार आप री पूरी जमीन अर पूरा ससतरां सूधी उदैपुर हुकम पोंचतां ही हाजर व्हे जावै। देर नीं करै।" हुकम रे ऊपरै राणाजी आप रा दसगतां सूं दो ओळां लिखी, "जो हाजर नीं व्हेला वी री जागीर एकदम जव्त करली जावैला। कांई तरै री रियायत कोनी होसी। देस री विपद गी वेळा में हाजर नीं व्हेणों हरामखोरी मानी जासी।"

सवारां ने हुकम रा कागद दे दोड़ाय दीधा।

कोसीथळ रा कामदार रा हाथ में सवार जाय हुकम पकड़ायो, रसीद पाई कराई। वांच्यो, वांच्यो, वांचतां ही कामदार रो मूंडो उतरग्यो। कोसीथळ चूंडावतां री छोटी सी जागीर ही। वठा रा ठाकर दो तीन वरस पैलां एक झगड़ा में काम आयग्या। दो वरस रा टावर ने छोड़ग्या। ठिकाणां में नैनपण! राणाजी रो यो करड़ो हुकम!! भगवान चोखी वणाई!!!

टावर ठाकर, री मां ईं वाळक माथै आसां रा दीवा जोवती, आपरो रंडापो काट री।

कामदार जनानी डोढी पै जाय अरज कराई, "माजी सात्र ने अरज करो, जरूर वात अरज करणी है।"

डावड़ी जाय कह्यो, "ठिकाणै रा कामदार फोजदार डोढी पै ऊभा है। आप सूं मुंडामूंड वात करवा ने हाजर व्हेवा री कै है।"

"माजी री छाती धड़ धड़ करवा लागी, "फेर कोई नवो दुख तो नीं आयग्यो।"

डावड़ी ने कह्यो, "वारणा पै पड़दो बांध दे, वांने मांयने बुलाय ला।"

वेटा री आंगळी पकड़, पड़दा रे सारै मांयने ऊभी व्हेयगी। कामदार फोजदार, मुजरो कर पड़दा सूं वारै ऊभा व्हेग्या। हाथ लांवो कर राणाजी रा हुकम रो कागद पड़दा में माजी ने झेलायो।

"अवै ?" वांचतां ही माजी रा मूंडा सूं कोरा दो अक्खर ही निकळ्या। "अवै आप हुकम दो जो ही करां। ठाकरसा तो पूरा पांच वरस रा ही कोयनी व्हीया, चाकरी में लेर जावां तो किस तरै ले जावां।" माजी री नजर आंगळी पकड़नै ऊभा वेटा री काळी काळी भोळी भोळी आंख्यां सूं जाय टकराई। मां री ममता जागगी। रूं रूं ऊभो व्हेग्यो, छाती में दूध उतरवा रो सो सरणाटो आयग्यो। लारै रो लारै "जो हाजर नी व्हेला वींरी जागीर जब्त करली जासी" हुकम री ओळां वळवळना खीरा री नांई आंख्यां आगै चमकगी।

मन में एक साथै कतरा ही विचार आयग्या। "जागीर जब्त हो जासी ? म्हारो वेटो बाप दादां रा राज वाहिरो व्हे जावैलो। वीं री पांच भायां में कांई इज्जत रैवैला ? वीं रे बाप नी रिया पण म्हूं तो हूं। म्हारे जीवतां जीव वेटा रो हक छूटै, धिरकार है, म्हारे मिनख जमारा पै। म्हूं असी खोड़ली हूं कांईं जो पींढ्यां री भोम ने गमाय दूं। म्हारा वंस पै दाग नीं लागै ?"

वींरी आंख्यां रे आगै एक तसवीर सी आयगी जांणै वीरो जवान बेटो ऊभो है, सगा परसंगी रोळ में मोसो मार रिया है, "ये लड़ाई में नीं पधारया सा जो कोसीथळ ने राणाजी खोस लीवी। हें हें हें ! यां चूंडावतां ने आपरी वीरता रो घणों घमड है।" दूजे ही पल दांतां री कटकट्यां भींचता वेटा रो नीचो माथो, नीची नजर व्हेती लगी दीखी।

माजी रा माथा में चक्कर आयग्यो। जवान व्हीयां वेटो ईं मां ने जतरो धिक्कारे थोड़ो। वांने याद आयगी आपरे वाप रा मूंडा सूं सुणी जूनी कां'ण्यां, लुगायां कसी कसी वीरतां सूं झगड़ा कीधा। अरे ईंज खानदान में पत्ताजी चूण्डावत री ठुकराणी अकवर री फोज सूं लड़ी, गोळियां री रीठ वजाय दीवी। पछै म्हूं क्यूं नीं जावूं ?

ईं विचार सूं वांरा हालता मन में थिरता आयगी। नैत्र चमकग्या। जीव सोरो व्हेग्यो। घणां ठिमरास सूं पड़दा री आड में सूं बोली, "धणियां रो हुकम माथा पै। करो, जमीत री त्यारी करो। घोड़ां, आदमियां ने त्यार होण रो हुकम दो।"

"वो तो ठीक है। पण धणी बिना फोज कसी ?"

"क्यूं ? म्हूं हूं के धणी। म्हूं जावूंला।"

"आप ?" अचम्भा सूं कामदार अर फोजदार दोवां रा मूंडा सूं एक साथ ही निकळग्यो।

"हां म्हूं। अचम्भा री कांईं बात है। थांरे ईंज घराणा में कतरी ठुकराणियां लड़ाई में झूंझी है के नीं ? थां कस्या जांणो कोयनी ? म्हूं कोई अणूती बात कर री हूं के ? पत्ताजी री मां अर वांरी ठुकराणी अकबर सूं लड़ता लड़ता मरचा कै नीं ? म्हूं ही वांरा हीज घराणां में आई हूं। म्हूं क्यूं नीं जावूं ?"

जमीत सजगी। नंगारा पै कूंच रो डंको पड़चो। निसाण री फरियां खोल दीधी। पाखर घल्यो घोड़ो आय ऊभो व्हीयो। माथै टोप, जिरह बख्तर रा काळा लोह सूं ढंक्या हाथ बेटा री कंवळी कंवळी बांहां ने पकड़ गोद में उठावा ने आगै व्ही। टाबर सहमग्यो। बोली तो मां सरीखी अर यो अजब भेख रो आदमी कुण। गालां रे होठ अड़ातां अड़ातां मां री पलकां आली व्हेगी, "बेटा, यो सब थारै वास्तै, थारी इज्जत वास्तै।"

एक ठडी सांस रे साथै वांरा होठ हाल्या।

आगै आगै घोड़ा पै भालो भळकावतो फोज रो मांझी अर लारै लारै सारी जमीत उदैपुर आय हाजरी में नामों मड़ायो, "कोसीथळ रा फलाणसिंघ चूंडावत मय जमीत रे हाजर।"

हमलो व्हीयो। हड़ोल चूंडावतां री। हमलो करै तो पै'लां हड़ोल वाळा ही आगै वढै अर सत्रुवां रो हमलो झेलै तो ही हड़ोल पै ही जोर आवै। सिंधु राग गावण लाग्या। हड़ोल रे अधवीचै, चूंडावतां रा पाटवी सळूंबर रावजी ऊभा व्हे बोल्या, "मरदां! दुसमणा पै घोड़ा ऊर दो। मर जाणों पण पग पाछो नी देणों। या हड़ोल मे रैवा री इज्जत, आपां पीढचा सूं निभाय रिया हां, आज ईं आपणीं जिम्मेदारी ने पूरी निभावजो, देस सारूं मरणों अमर व्हेणो है। हां, खैंचो लगामां।"

एक हाथ सूं लगाम खैंची दूजा हाथ में तरवारां तुलगी।

ढ़ोल वाळां रा घोड़ा उड्या जांरे भेळे माजी घोड़ा ने उड़ायो। खचाखच सरु व्ही। तरवारां रा वटका व्हेण लाग्या अर माथां रा झटका।

माजी री तरवार ही पळका लेय री, एक जणां पै तरवार रो वार कीघो, वीं फुरती सूं वार ने ढाल पै झेल पाछो भालो मार्यो जो पांसळी ने पोवतो लगो वारैं निकळ्यो। माजी री रान छूटगी साथै रे साथै घोड़ा सूं नीचै ढळक्या।

सांझ पड़ी। झगड़ो वंद हुयो। खेत संभाळवा लाग्या। घायलां ने उठाय उठाय पाटा पींड करवा लाग्या। लोह री टोप सूं वारैं केस लटक रिया। पाटो बांधवा ने हाथ लगायो तो देखै लुगाई। वठै रा वठै ठवक्या रैयग्या।

"या कुण अर क्यूं ?"

राणाजी ने अरज व्ही,

"घायलां में एक लुगाई पूरा वीर भेस में मिली। नाम पतो पूछ्यां तो बतावै नीं।"

राणाजी गिया। लोह री टोप नीचै गज गज लांबा केस लटक रिया, लोयां सूं भर्या चिपक रिया।

"सांच सांच बतावो नाम ठिकाणों। छिपावो मत दुसमण व्हेला तो ही म्हूं थांरो आदर करूं। म्हारे बेन ज्यूं हो।"

"कोसीथळ ठाकर री मां हूँ अन्दाता" माजी बोल्या।

"हैं! राणाजी अचम्भा सूं कूद्या। थां लड़ाई में क्यूं आया ?"

"अन्दाता रो हुकम हो। जो लड़ाई में हाजर नीं व्हे जींरी जागीर जव्त व्हे जावेला म्हारे टावर छोटो है। हाजर नीं व्हेणो मालकां री अर मेवाड़ री हरामखोरी व्हेती।"

करुणा अर गुमान रा आंसूं राणाजी रे आंख्यां में छलक गिया। "धन्न है थूं !" राणाजी गदगद व्हेग्या। "यो मेवाड़ वरसां सूं आन राख रियो जो थां जसी देवियां रो परताप है। थां देवियां म्हारो अर मेवाड़ रो माथो ऊंचो कर राख्यो है। जठा तक असी मांवा है जतरै आपां रो देस परावीन कोनी व्हे।"

ई वीरता री एवज में, थांने इज्जत देणो चावूं, बोलो थां ही बतावो, जो थांरी इच्छा व्हे।"

माजी सोच में पड़ग्या, कांई मांगै, कोई इच्छा व्हे तो मांगै।

थांरी आंख्यां आगै बेटा री वे काळी काळी भोळी भोळी आंख्यां फिरगी। मां री ममता झटको खाय जागगी।

"अन्दाता राजी हो अर मरजी हीज है तो कोई असी चीज बगसावो जीसूं म्हारो बेटो पांचां में ऊंचो माथो करनै बैठै।"

"हूंकार री कलंगी थांने बगसी जो थांरो बेटो ही नीं पीढ़्यां लग या कलंगी पैर ऊंचो माथो कर थांरी वीरता ने याद रखावैला।"

हाड़ी राणी

रूपनगढ़ रा रावळा में अचाणचक सण्णांटो व्हेग्यो। सीळो वाजतो वायरो जांणै ताती व्हेग्यो व्हे। डावड़्यां रा छमछम वाजता घूघरा थम गिया। गादी पै वैठी राणियां रा मूंडा घोळा पड़ग्या। वायरो करती दासियां री मुट्ठी में वींभणी री डांडी यूं री यूं रैगी।

श्रीनाथजी रा मंदर में आरती रा दरसण करता राजाजी रा हाथ में वादसा ओरंगजेव रा हुकम रो कागद पकड़ायो। हुकम वांचता वांचता राजाजी री आंख्यां आगै काळा पीळा आयग्या।

हुकम कांई हो, जहर रो प्यालो हो, जीरी घूंट नीं तो गळा नीचै उतारणी आवै अर नीं थूंकणी आवै।

राजकंवरी चारूमती रे साथै ओरंगजेव रा व्याव रो पैगाम! कोरो पैगाम ही नीं हुकम अर जुलमी हुकम, तिथि समै सब निस्चै।

एक कानसूं दूजा कान में गी, दूजा सूं तीजा में। मरदां री रीस सूं मुट्ठियां वंधगी, वूढां रा सरम मूं माथा नीचा भुकग्या। कै तो ईं अपमान री कड़वी घूंट ने नीचो माथो कर गळै उतारणी कै काळ ने नूतणों। रणचंडी री तसवीर आंख्यां आगै फिरगी। कायरां री छाती धड़धड़ करवा लागी। चारूमती सुण्यो, काची केळ ज्यूं कांपगी जांणै वीजळी पड़ी। रीस सूं राती पड़गी।

"वेइज्जती री कोई हद व्हे? वादसा लुगायां ने समभ कांई राखी है? वें कोई खेलवा रो खेलकणो है? इज्जत ही लुगाई रो संसार में सब सूं अमोलक धन व्हे। मरजाणों मंजूर पण इज्जत रे साथै। वादसा रो यो जोर जुलम कदे ही मंजूर नीं! नीं!! नीं!!!

चारुमती वीफरगी। माथा री नसां तणगी। छाती में सांस नीं मावै। वाप ने साफ नां केवाय दीवो "मरजावूं पण वादसा ने नीं परणूं।"

अपमान सूं दाझ्योड़ा, नीचो माथो घाल्यां, कसक ने काळजा में दबायां, बाप गळगळा व्हे समझाण लाग्या, "बेटा, थूं केवै जो सारी सांची है पण बता ओर उपाय कांई है जो म्हूं करूं ? आलमगीर री फौजां सूं टक्कर लैण री आपां मे तागत नीं। वींरी एक पलटण आपणां सारा सैर ने उजाड़ देला। हजारां घर बरबाद व्हे जावैला। थारा जसी सैकड़ां बहू बेटयां रांडां व्हे जावैला अर वां पै जो सिपाही जुलम करैला वो तो सोचणी नीं आवै।"

हमेसां अदब सूं झुकी रैती वे आंख्यां आज पूरा जोर सूं तणगी, हाथ जोड़ नरमी सूं बात करवा वाळी चारूमती, छाती ताण साम्ही ऊभी व्हेगी।

"जुलम, बेइज्जती झेलवा सूं तो बरबाद व्हे जाणो आछो। ओरत री इज्जत सारूं थां नी मर सको तो मत मरो, म्हूं जीवते जीव कदे ही नीं मानूं।"

थां अतरा जणां हाथां मे तरवारा लीधां फिर रिया हो, क्यूं नीं एक झटको म्हारे माथा रे मारो ? सारो झगड़ो ही खत्म व्हे जावै।"

हरणी जसी आंख्यां में आंसू भरयां माथो आगो कीधो।

"थूं नीं जांणै ईं रो नतीजो कांई निकळ ही।" गलानि अर अफसोच सूं राजाजी माथो पकड़ बैठग्या।

चारूमती ने अत दीखै नीं गत। दिन पनरा रैग्या। पैरवा रा गावा बैरी व्हे रिया जांणै खीरां पै लोटै। भीत पै टंग्योड़ा दरपण साम्ही नजर पड़ी। मूंडा रा परतीबंब सूं दरपण झळमळाय उठयो। चारूमती मूंडो फेर लीधो। एक ठंडी सांस काळजो चीरती निकळगी, "यो रूप ही पापां रो फळ है। पै'ली पदमणी ने वाळी, अबै म्हारो ओसरो है।"

लारै री लारै याद आई पदमणी री इज्जत सारू माथा कटावण्यां वीरां री।

रूम रूम ऊभो व्हेग्यो। "आज वा री वा म्हारा में वीत री है पण मरवा वाळो कोई है ? वीरी आंख आगै चित्तोड़ रा सूरमा चमक गिया। लारै री लार राणा राजसिंघजी री तसवीर आंख्यां आगै नाचगी। जोतदान रा चित्तरां में राणा राजसिंघजी रो जीं दिन वीं चित्तर देख्यौ हो तो देखती रैगी। कस्यो रोबदार चेहरो, आंजस सूं भरया नेत्र। वांरी वीरता री का'ण्यां, ओरंगजेब सूं अड़वा री वातां वीं घणी दांण उछळतै काळजै सुणी ही। राजसिंघजी रा जस गीत याद आया।

पदमणी सारूं लोहृया रा खाळ वैवावा वाळा री संतान राजसिंघजी म्हारी रक्षा नी करैला ? जरूर करैला। ईं विचार सूं चारूमती री आंख्यां चमकगी।

'वे व्याव करले तो ?" मीठा विचार सूं कुंवरी रा नैण मिचग्या।

"अस्या सूरमा परतावी पति सूं वत्तो रजपूत री वेटी ने चावै कांई ? दो पल दूसरा ही जगत में चारूमती परी गी।"

झट कलम ले, राणा राजसिंघजी ने एक कागद लिख्यो, "म्हें आपने मन वचन सूं पति अंगीकार कर लीधा है। आप म्हंने ले जावो। ज्यूं क्रिसन, रूकमणी री सिसुपाल सूं रक्षा कीवी ज्यूं ही अवै म्हारी करो। म्हूं आपकी व्हे चुकी।

"वोलो, अवै कांई करणो ?" दरीखाना में कागद वांच राणाजी सारा सरदारां कानी पूछता नजर न्हांकी।

कींरा ही तो हाथ मूंछां पै पड़ग्या, कीं री ही रीस सूं आंख्यां में सूं झाळां छूटवा लागी, कींरे ही रगत रो संचार ववग्यो। घणां करां रा मूंडा उतरग्या।

"करणो कांई है ? है जो चौड़े है, वाईजी ने परण पधारो।" एक जणो आगतो वोल्यो।

"आगली पाछली सोच ने वात करो, दिल्ली रा घणी सूं लोहो लेवणो है।" दूजे थोड़ो सोच'र कह्यो।

"दिल्ली रा धणी सूं कदे ही अड़्या कोयनी हां कांई ? घणो व्हे ही मर जावां, और नवी वात कांई व्हेला ?"

वहस मुवाहिसो व्हेण लाग्यो। आप आपरी कैण लाग्या।

"यो काम जाणों जस्यो सोरो नीं है।"

"सवाल लुगाई जाति री इज्जत रो है।"

"घर री तागत देखणी पै'लां जरूरी है।"

"सरण में आया री रक्षा करणों सब सूं मोटो धरम है।"

राणाजी कह्यो, "फळ ईं रो चावै जो व्हीजो। मरणो एक दांण है, आगै कै पाछै। लुगाई री वीणती टाळ दे वो मरद ही नीं। नारी रो अपमान नजरयां देखणों ही सबसूं मोटो पाप है, जीवता जीव नरक भोगणो है। करो फोज री त्यारी करो, म्हूं परणवा ने जावूंला। थां फोज ले, दिल्ली रा गैला ने रोक्यां राख जो, व्याव नीं व्हे जावै जतरै। खवरदार, वादसा रूपनगढ री सीमा में पग नीं देण पावै। सळूंवर रावतजी ने खबर भेजो, फोज मुसाहिवी रो जिम्मो संभाळै।"

एक जणां अठीने उठीने झांक हाथ जोड़या, "अन्दाता ! सळूंबर वाळा तो परणनै कालै हीज घरै आया है । वांरा हाथ रा कांकण डोरड़ा ही नीं खुल्या ।"

"हूं" ललाट पै गैरा गैरा घणां सारा सळ पड़ग्या विचार में थोड़ी देर डूबग्या, धीरै धीरै ऊंची गावड़ कर, घणां ठिमरास सूं बोल्या "आपां जीं जोखम ने उठावा जाय रिया हां वीं ने तो देखो । करतब भाटा सूं ही ज्यादा करड़ो व्हे ।"

एक लांबी सांस खैंचता राणाजी धीरै मन ही मन में बोल्या, "आंपणां देस री मान मरजादां राखवा सारू थां कतरा कतरा बळिदान कीधा है ।" आखी उमर जुद्धां में रैण्यां राणाजी री आंख्यां में ही पाणी आयग्यो ।

सळूंबर रा गढ में राग रंग रा फुंवारा छूट रिया । सरणाई में बधावा बनड़ा गाईज रिया । लुगांयां रा झूमका रा झूमका अठीने वठीने गोटा कांगरी री ओढाणया ओढयां फिर रिया । नीचै बैठी ढोलणियां मांड में दूहा देय री । ऊपर मे'ल में मखमल री गादी पै मनसद रो सहारो लीधां रावत रतनसिंघजी बैठ्या, कनें ही नवी परणी बींनणी हाड़ीजी, लाल परणेतू पोसाक अर लाल हाथीदांत रो चूड़ो पैरयां बैठ्या । हींगळू री पोट सरीखा लाल होठां री झांई, वीं रूप री राणी रा गालां री लाली ने और ही गैरी कर री । अतर रा दीवां रा झळमळ करता चानणा में, कंचन सरीखा रंग दूणों दूणों दमक दमक जावतो । रावतजी एक टक वांरे साम्हा चोघरिया, जांणै मंतरचोड़ो सांप झोला लेवै । वांरी तिसाई आंख्यां एक ही नजर में आखो रूप पी जावा ने आगता व्हेय री । वे हाड़ीजी साम्हा झांक्या, वीं नजर रो अरथ समझनै लांबी लांबी कैरी री फांक जसी आंख्यां लाज सूं नीची व्हेगी, झीणी झीणीं पसीनां री बूंदा आयगी । रावतजी रा लुभाया नैणां रो नसो चोगणो व्हेग्यो । हुकम री बाट में हाथ जोडयां ऊभी डावड़ी चतरसाळा सूं बारै खिसकगी । बारै बैठी डावड़यां कलाळी उगेरी ।

कंवळा कंवळा कंवळ सरीखा हाथा ने हाथ मे ले नैणां रा प्याला सूं सारो रस ऊंधाता रावतजी बोल्या, "हाड़ीजी, थें म्हंने मिलग्या, तिलोक री संपत मिलगी । नो निधि मिलगी । अबै कांई नीं चावै म्हंने ।"

पडूंतर देण ने हाड़ीजी रा होठ हाल्या पण बोल निकळ्या नीं । नैण नीचा कीधां मन ही मन आणंद रा सागर में तिरवा लाग्या ।

"थां सरीखो रतन म्हंने मिल्यो देखो मिनख तो कांई देवता ही म्हारा भाग पै ईसको कर रिया है । आवो म्हारा कनें ।"

आणंद रा भार सूं हाड़ीजी री आंख्यां आधी मीचणी आयगी । अतराक में तो

डावड़ी, हाथ में परवानो लीवां मायने आई, झुक'र कागद नजर करयो ।

"यो वगत है ?" रावतजी आंख काढ़ी ।

"खम्मा परथीनाथ । उदैपुर सूं सवार आयो । जरूरी हुकम है ज्यूं तावेदार हाजर व्हो ।"

परवानो वांच्यो । जांणे आभा में चमकता चांद पै काळो बादळो आयग्यो व्हे, झळमळ करता दिवला री बाती पै गुल आयग्यो व्हे । मे'लां रा हंमता लगा थांभा धूमधुम व्हेग्या । रावतजी रो मूंडो पीळो पड़ग्यो ।

"बात कांई है ?" हाड़ीजी हाथ सूं कागद लेतां वांच्यो । काळजो कटग्यो । नैणां में कलणा री देवी जांणे सैंसरीर विराजमान व्हेयगी । यो अथाग नेह अर यो विजोग ! यो बंधण अर काचा सूत ज्यूं टूटवा वाळो !!

रावतजी बैठ्या रा बैठ्या रैग्या जांणे पाखाण री पूतळी व्हे । घणी देर पछै हाल्या ।

"लड़ाई में म्हूं नीं जावूं'ला ।"

हाड़ीजी आंख्यां फाड़यां देखता रैग्या । कांनां पै भरोसो नीं आयो ।

"नीं म्हूं नीं जावूं । थांने छोड़ कठै ही नीं जावूं ।" कांपता कंठा सूं बोल निकळ्या ।

हाड़ीजी सनकी, "म्हारो मोह थांने जावा नीं देवै ।"

नैणां री कोरां में पाणी भरग्यो । मन तो कह्यो हाथ पकड़ अठै ही राख लूं पण आतमा अंतस सूं धक्को दीवो, रजपूत अर जुद्ध सूं मूंडो फेरे ? धिक्कार !

हाड़ीजी पूछ्यो, "कांई फरमा रिया हो ?"

"सांच कैय रियो हूं । थांने छोडणी नीं आवै ।"

हाड़ीजी रो दरप जाग्यो ।

"ये सबद आप रा मूंडा सूं सुण री हूं ? आज धणियां ने, जनम भोम ने आप री जरूरत है ।"

"जनम भोम रो म्हूं एकलो बेटो नीं और घणां ही है ।"

"आप हूंडाजी रा वंसज अर या कायरता ? चूंडावतां री बादरी री बातां घणी सुणी । या हीज है नीं आप लोगां री बादरी ? देख लीधी । कुळ री मरजादा रो

ध्यान है के नीं ? आप री सारी पींढ्यां रणभूमि में सूती अर आप नट रिया हो। तवारीख में कांई नाम मंडेला ?"

"तवारीख अर मरजादा री बातां थें म्हंने कांई सुणावो हाड़ीजी, सब समझूं। कायर कोनी हूं, म्हारी बादरी री बातां सुणणी व्हे तो म्हारा ईं खांडा ने पूछो। अवार म्हारो धरम करम, मान मरजादा सब थें हो। सुरग नरक री चिन्ता नीं। म्हंने चिन्ता है थांरी, कोरी थांरी।"

हाड़ीजी सुण्यो। काले अमीज नेह री वातां अमरत सूं मीठी लाग री पण अबारू वळवळता खीरा ज्यूं लागी। वीं ने याद आयगी, वां रे हीज भूवा जोधपुर जसवन्त-सिंघजी री हाड़ीराणी री। वां भाग'र आया पति ने किला में कोनी घुसण दीधा। किला रा दरवाजा बन्द कर दीधा। "भाग्योड़ा पति रो मूंडो कोनी देखूं।"

हाड़ीजी री सांस जोर सूं चालण लागगी, रगत में उबाळो आयग्यो।

"म्हारी चिन्ता मत करो। तरवार हाथ में पकड़ो। जीत'र आया तो अठै आणंद करांला, मरग्या तो सुरग में म्हूं ही लारै री लारै आवूं।"

"कतरा कठोर हो हाड़ीजी थें।"

हाड़ीजी रो आवेग सूं मूंडो रातो व्हेग्यो, "कायर पति ने बाथ में घाल नै घर मे घाल्यां राखवा सूं तो वीर पति री रांड व्हे जाणो लाख दांण चोखो।"

रावतजी एक लाबी सास लेता लळचाया नैंणा सूं झाक्या, "म्हूं तो जुद्ध में खैर आवूं ही हूं पण पाछा सूं थारो कांई व्हेला। थारा हथळेवा री मे'दी नीं सूखी।"

हाड़ी तड़फगी, "म्हारो कांई व्हेला ? लो यो वचन। आप जो लड़ाई में काम आयग्या तो लारै री लारै म्हूं सती व्हे जावूं।"

रावतजी कूच री त्यारी पै लाग्या पण अणमणा मन सूं। त्यारी करै पण जीव हाडीजी मे। घोड़ा पै सवार व्हीया, पाछा फिर फिरनै झांकता जावै। हाड़ीजी रा गोखड़ा रे नीचै घोड़ो निकळचो। घोड़ा री वाग खैंच लीधी। ऊपर झांक्या, परणेतू पोसाक मे जींरा हथळेवा री मे'दी रो रग ही नी फीको पड़चो, वे हाड़ीजी झरोखा री जाळी मे बीजळी ज्यूं चमकता दीख्या। घोड़ो रुकग्यो। हजूरी ने हेलो पाड़चो, "जा हाड़ीजी ने अरज कर कोई सैनाणी म्हारे खातर लावै।"

रावतजी री आंख्यां गोखड़ा री जाळी सूं आगै नीं डिगै।

हाड़ीजी देख्यो, "यो मोह ! ये रण जाय कांई फते करैला ? पींढ्यां रा नाम रे काळो लागवा रा दिन है। उठी ने तो कायर पति रा उमीणां, म्हारी साथण्यां म्हने सुणावैला, वठी ने चूंडावतां रा ऊजळा इतिहास पै पै'ली दांण यो कायरता रो दाग लागैला। ईं सगळा रो कारण म्हूं। म्हारो मोह ही तो सगळा अनरथ री जड़

है।" वांनै याद आयग्या वे हीज जोधपुर वाळा सूवा, हाड़ीराणी जो आपरा हाथां सूं पेट चीर ओरंगजेब री फौज रे लारै जुद्ध कर मरया। "म्हूं ही तो वीं खानदान में जनम लीवो है।" अतराक में डावड़ी आय हाथ जोड़्यां बोली, "अन्दाता आप री सैनांणी मगावै, लारै ले जावा नै।"

"हां दूं थोड़ी वा तरवार झेलाजे।"

तरवार म्यान सूं काढ़ता बोल्या, "अन्दाता नै अरज कर दीजे, या सैनांणी तो ले पधारो जीं में आपरो जीव है वा आप सूं पै'लां जाय री है। अबै आप पाछा पग मत दीजो।"

या कैवतां ही हाड़ीजी तो तरवार नै हाथ में काठी पकड़ आपरी हीज गावड़ पै जोर रो झटको मारयो। तड़ाक देतां लोह्यां रा फुंवारा रै साथै माथो धम्म देणी को जमीं पै जाय पड़्यो। जाणै चांद धरती पै टूट पड़्यो व्हे।
राजसंमद री पाळ ऊपरला मैं'लां री चांनणी पै राजसिंघजी वांरी राणी चारुमती रे साथै ऊभा। नीचै नजर पड़ै जतरै तळाव रो पाणी पाणी दीखै। ऊपरै पूनम रो चांद चमक रियो, वींरो चलको नीचै पाणी में करोड़ करोड़ रूप धारण कर नांच रियो।

चारुमती उछाव, करुणा अर सरधा री तिरवेणी नैणां में भरयां, राणाजी नै पूछ री "हाड़ीजी आपरा हाथ सूं हीज आपरो माथो काट सैनांणी देय दीवी ? पछै ?"

"रावतजी आपो भूलग्या, वींरा कट्या माथा नै केसां री लट सूं आपरे गळा में बांध लीवो। छाती पर वांरो मुण्ड लटकतो रियो। जांणै वांरी आंख्या में खून लड़ रिया व्हे, दूजो मा'देव रणभोम में उतर आयो दुसमणां रो गैलो रोकनै ऊभा रैग्या। एक आगळ पाछा नीं सरक्या, कटकट'र वांरा बटका बटका नीं व्हीया जतरै। अस्यो दृस्य कदे देख्यो नीं, सुण्यो नीं।" भरया कंठा सूं राणाजी सुणायो।

"पछै ?"

"पछै कांई ? वांरा परताप सूं थां अठै म्हारे कनें बैठ्या हो।"

चारुमती रो सरधा सूं माथो झुकग्यो, पलकां आली व्हेगी।

ऊगो भाग्ग

रतनागर सागर हलोळा लेय रियो, गरजना कर रियो, लैरां रा टोळ रा टोळ उच्छाळा खाय रिया, पाणी रा हड़ड़ाटा लाग रिया, टापू पै बस्या, पाटण नगर रा गढ़ री भीत रे पाणी री पछांट लाग पाणी पाछो नीचै पड़ै। राजा अणतराय साखलो आपरी सभा लगायां ईं पाणी रा परकोटा ने देख देख मन में मावै नीं। आपरा लांबा चोड़ा परवार रे बीचै वैठचो वो पाटण री लंका सूं होड़ करै।

जाजम बिछ री, जाजम पै सफेदझक चांदणी लाग री, भाई भतीजा सिरदार डावा जीमणां बैठ्या, आप गादी पै छतर छांगेड़ लगायां बैठचो, साम्हा साम्ह मरदंग मजीरा बजाता कलामत बैठ्या।

बीच में सवासोक छोटा मोटा राजावां ने हाथां में हथकड़चां पैरायां ऊभा कर राख्या। वाने देख देख राजा ने भरम व्हेय रियो के वो सांचै ही लंकापुरी रा राजा सूं कम कोयनी।

कैदी राजावां ने सलाम करवा रो हुक्म व्हीयो। सारा ही झुक्या। आज ही कोई नवी बात तो ही नीं, यो तो रोज सुबै रो नेम हो। नित रा कायदा रे माफग मूंगड़ा चांदणी पै बिखेरणै री वगत व्ही धोळी धोळी चांदणी पै काळा काळा मूंगड़ा छांट दीधा। बापड़ा कैदी झुक्या, गोड्यां टेक, नीचो मूंडो कर दांता सूं होठा सूं चुगवा लाग्या. जो नी झुक्यो वी रे तीखी तीखी लोह री आरां चुभावता जाय रिया, पीड़ा सूं कळमळाय ज्यूं ही होठा में मूंगड़ा रो दाणों पकड़तो ज्यूं ही हंसी री लैर ईं कूणां सूं वी कूणां तक पूग जाती।

चुगणै वाळा री आंख्यां में रीस, लाचारी गलानि अर सरम रा भाव राजा अणतराय रा दरप ने दूणों कर देता।

"जाड़ेचा सरदार व्हेग्या है सूधा।" एक सिरदार, एक कैदी राजा साम्ही आंगळी कीधी।

"तीन दिन री मरोड़ व्हे, चोथे दिन सारा ही सूधा व्हे जावै अपणै आप।"

"सारी गुजरात ने भेळी कर नाय दीधी है आंपा । अबै वाकी रियो ही कुण है । सारा आयग्या।" कैदियां ने न्यारा न्यारा गौर सूं गिणता राजाजी फुरमायो ।

"एक वाकी रियो अबै वस गिरनार रो राजा केवाट ।"

"हां" केवाट । याद आई, वीं ने वाकी क्यूं छोड़ो । "आज ही लावो" डावा जीमणां वैठ्या सिरदारां ने हुकम मिल्यो ।

परधान सुजाण साह हंसी कीधी, "ये जदी जावै जदी हजारां आदमी अर घोड़ां रो नास करनै आवै । म्हारा जस्यो व्हे तो वातां ही वातां में पकड़ ले आवै ।"

सिरदारां हाथ जोड़्या, "परधान जी ने हीज हुकम व्हे जावा रो । म्हे ही देखां, वातां ही वातां में पकड लाणै रो चमत्कार ।"

अणतराय, परधान साम्हा फिरचा, "कह्यो जींने करलै वो मिनख व्हे ।"

"हाजर, सीख वगसाओ ।"

> वाळद भरूं मजीठ की, कोडी न देऊं डांण ।
> लावूं सरवरिया कुवाट ने, तो म्हें साह सुजाण ।।

सुजाण साह मुजरो कर विदा व्हीयो ।

"ऊगा भाणेज व्हे तो थां जस्यो । अदखी वगत में आडा आवण्या थोड़ा व्हे । थां कह्यो जो कर वतायो ।"

वादळां सूं वातां करता गिरनार पहाड़ रे गढ़ में राजा केवाट, आपरे भाणेज ऊगा राठोड़ ने वधाय रिया । वां पै व्हीया हमला में जीं चतराई सूं ऊगै खून खरावो करयां विना ही मामला ने सम्हाळ, मामा ने वचाय दीधो, वीं चतराई पै मामा मुगध व्हे, ऊगा ने आपरे कनें गिरनार में राख लीधो ।

गिरनार रो ऊंचो पहाड़, वीं पै ऊंचो गढ़ जींरा ऊंचा गोखड़ा में ऊभा मामा भाणेज वन री सोभा देख रिया । तर भंरग पहाड़ ऊंडा ऊंडा खाळचा, झर झर झरता झरणां, नाचता मोरचा, उछळता हिरण, जाणै देखवो ही करो । वांरा सरीर रे अड़ती लगी वादळी अठी सूं आई वठी ने निकळगी, कपड़ा पै नमी रा सैनाण छोड़गी ।

नीचै पहाड़ री तळेटी में लाखो वणजारो पड़चो, घणो सामान वेचवा रो लीधां । वींरा डेरा साम्हीं आंगळी करता केवाट कह्यो, "भाणेज, ईं वणजारा कनें ढाल घणी वढिया, सुणी है ।"

"मंगवो मामाजी ! बुलावो भेजूं ?"

वणजारो आयो। ढालां नजर कीवी। वां में असल गैंडा री एक ढाल। तरवारां रा वार कर परीक्षा कीवी, एक खुरड़ो पड़चो नीं, रामचंगी रो गोळो ढाल माथै वाह्यो, रंग री चटक तक नीं उतरी। ढाल मामा भाणेज रे हिया में उतरगी।

"बतावो ईं ढाल री कीमत कांई ?"

"कीमत ? जो वसत पिराणां री रक्षा करै वी रो मोल ही कांई ?" वणजारै चतराई रो उत्तर दीवो।

"वा तो खैर है ही, पण मोल बतावो।"

"मोल कांई अरज करूं ? पसन्द आयगी तो म्हारी तरफ सूं नजर है। आपरा सरीर री रक्षा करैला तो मोल वसूल व्है जावैला।"

"नां नां" करता राजा रे हाथ में वणजारै ढाल नजर कर ही दीवी।

"मामाजी या ढाल तो म्हूं राखूंला" कैता कैता ऊणै, ढाल ने आपरा हाथ मे लेय लीवी।

"यूं एक हाथ सूं तो ताळी मत बजावो, भाणेज।"

"ऊणो तो एक हाथ सूं ही ताळी बजावै आप देख ही राखी है।"

"यो तो खैर भाई बन्वां रो मामलो हो पण कदी अबखी पड़ैला जद देखां, एक हाथ हूं ताळी किस तरै बजावो" मामाजी बोल्या।

"वगत आवैला जद ऊणो बताय देला। नीं बतावै तो रजपूताणी रा नीं जूंल्या।"

ढाल री बगसीस रो मामाजी सूं मुजरो कर ऊणो नीचै उतरचो।

मोको देख वणजारै अरज कीवी, "या ढाल ही आप सिरदारां रे अतरी पसन्द आई तो आप घोड़ा देखावो तो कांई करो। एक तो जळहर घोड़ो है, पसन्द आवै तो आप रखावो।"

"मंगावो अबार रो अबार।"

वणजारै हाथ जोड़्या, "माफ करावो, अठै तो आय नीं सकै। वीं घोड़ा ने तो सदा ओढायां राखूं, खाली चार सूम सूम उघाड़ा रैवै। रोज धूप खेवीजै, लूण उतारीजै, पाणी पीवा तक ने बारै नीं काढूं, डेरा में ही पाणी पाऊं। मुलाहिजै करवा ने तो नीचै हीज पधारणो पड़ेला।

केवाट सूं घोड़ा री तारीफ सुण रियो नीं गियो, वणजारा रे लारै वींरे डेरे गियो। घोड़ा ने देखतां ही मन राजी व्हेग्यो, असली जळहर घोड़ो, पुट्ठा पै थाप देवतो, देखतो रैग्यो।

"घोड़ो कांई है चीज है, थां कह्यो जीं सूं सवायो।" केवाट रो मन वाग वाग व्हेग्यो।

"मन तो राजी व्हेला आपरो ईं री चाल देख्यां।"

"कसावो जीण।"

एक घोड़ा पै केवाट अर दूजा घोड़ा पै वणजारो।

"च्यार कोस दोड़ै नीं जतरै तो ईं री चाल ही नीं जमै। दोड़ायनै ईं री चाल तो देखावै।"

घोड़ा छकड़ी करता दोड़व। लाग्या जांणै पाणी रो रेलो जाय रियो व्हे। च्यार कोस तांई एक पट्टी भाग्यां गिया।

"ठैरो" री आवाज रे लारै पनरा वीसेक सवार ससतरां सूं सज्या केवाट रा घोड़ा रे घेरो देय दीधो।

वणजारो घोड़ा सूं नीचै कूदचो, ठळोकळी करतो मुजरो कीधो, "खम्माधणी। म्हूं पाटण रो परधान हूं। पाटण पधारो।" खणण करती केवाट रे हथकड़्यां पड़गी।

"कर सलाम"! कैदी राजांवां री ओळ में हथकड़्यां पैरयां केवाट ने अणतराय हुकम दीधो।

"कांई वात रो मुजरो करूं? मुजरो करावा रो सोक व्हे तो वेटी ने परणा, जमाई वणां जो सुसराजी ने मुजरो करूं।"

जतरा रोव सूं अणतराय हुकम दीधो, वतरा ही रोव सूं केवाट जवाव दीधो। चांदणी पै मूंगड़ा विखेरचा, केवाट रे तीखी तीखी आर चुभाई पण नीं तो सलाम कीधी नीं मूंगड़ा ही चुग्या। रोज सुवै या री या व्हे पण केवाट नमै नीं।

अणतराय हैरान व्हे, एक कठपींजरा में केवाट ने वन्द कर दीधो। तीनूं पासै तीखा तीखा खीला गडाय काढचा जो पसवाड़ो फेरयां चुभै, गैला रे माथै कठपींजरो मेलाय दीधो। आता जाता आदमी कठपींजरा माथै पग देता निकळै।

"राजा आज दरीखाना में नीं पधारचा?"

"नीं, कालै ही नीं पधारचा, रावळा में विराज रिया है।"

"तीन दिनां सूं गैर मे'लां में हीज पोढणो व्हेय रियो है के ?" एक जणों धीरेक रो बोल्यो ।

ऊगै कह्यो, "जनाना में खबर करो, मन राजी नीं है कांई, बारै क्यूं नीं पधारया ?"

पाछा आय खबर दीधी, रावळा में तो तीन दिन व्हेग्या पधारया ने ।

खळभळो मचग्यो । एक दूजा ने पूछवा लाग्या । "बणजारा रे साथै घोड़ो दोड़ाबा ने पधारया जठा पछै री म्हूं नी जाणूं" खास खवास बतायो ।

"बणजारा रो डेरो ही वी सांझ ने लदग्यो ।"

ऊगो बोल्यो "गजब व्हेगी, धोखो । वैम अणतराय रो आवै, राजावां ने पकड़ पकड़ भेळा करवा रो वी धधो कर राख्यो है ।"

मैंगळ भाट ने कह्यो, "जावो पाटण में जाय नींगै करो । औरां री तो पाटण में पूग व्हे नीं, पैंरा रो इन्तजाम घणो करड़ो, भाट तो गावतो बजावतो, मांगतो खावतो परो जाय कोई पूछै नीं ।"

अणतराय सभा जोड़यां, कैदी राजावां ने भूंगड़ा चुगाय रियो । जोम में भरयो आरां चुभाय रियो । कलामत गाणों कर रिया ।

मैंगळ भाट साम्हे ऊभो व्हे सुभराज दीधो ।

"राजावां रा मान ने मरोड़ण्यां, गढपतियां रा गरव ने गाळण्यां, छत्रपतियां ने नमावणहार, राजा अणतराय आज रा वगत में थारा जस्यो कोई व्हीयो नीं व्हे ।"

अणतराय री जोम में चढ़ी आंख्यां ओर ऊंचा चढगी, "भाटराज, कठै रैवास ?"

"गढ़ गिरनार रो हूं ।"

"घर रा धणी ने सुभराज दे आया कांई ?" अणतराय घमंड में झूमतै पूछ्यो ।

"हाल तो दीधो नी, हुकम व्हे तो दे आवूं ।"

"हां हां जरूर, देख आवो, धण्यां री सोभा ।"

कठपीजरा कनै जाय मैंगळ भाट सुभराज दीधो । केवाट पीजरा में सूतै सूतै कुरब दीधो, वैठणी तो आवै नी पींजरा में ऊपर लांवा लांवा भाला लाग रिया ज्यूं । केवाट दूहो कह्यो,

मैंगळ ऊगा ने कहे, कठपींजर केवाट,
छाती ऊपर सेलड़ा, माथा ऊपर वाट ।

थूं कहतो तिण बार, ताळागढी वाळा धणी,
ताळी हमें वजाव, एकण हाथै ऊगडा ।।

"मैंगळ ऊगा ने कीजै केवाट कठपींजरा में पड़्यो है। माथा ऊपरै गैलो वैय रियो है। छाती ऊपर सेलड़ा लाग रिया है। ऊगा, थूं कैवतो, एक हाथ सूं ताळी वजावूं जो अवै वगत पड़ी है, वजाव।"

मैंगळ जो आंख्यां देखी सारी हगीगत ऊगा ने आय सुणाई।

ऊगो, रावळा में आयो। मूंडागै थाळी पड़ी जीरे आंगळी नीं अड़ाई। वंधी कमर यूं रो यूं वैठ्यो, आधी रात व्हेगी पण ढोल्या पै पग नीं दीधो। अतरा ऊंडा सोच में पड़्यो के वींने खबर ही नीं के दो घड़ी सूं गेहलोतणी बैठी वींरा पग दाव री है। वठीने वो झांक्यो ही नीं। पग दबाय लीधा, ध्यान खैंचवा ने मोकळो खांस लीधो, दीवा री वाती ऊंची नीची कर अंधारो उजाळो कर थाकी पण ऊगो ऊंची आंख कर कठी ने ही नी झांक्यो। हैरान व्हे गहलोतणी बोली।

"कांई सोच में पड़्या हो ?"

"कांई सोच में पड़्या हो ? सुण्यो कोय नी कांई ? कोई कसर री है अवै ?" ऊगो चिग्ड़्यो।

"आप सोच मत करो" गहलोतणी बोली, "म्हूं वाळपणां में पाटण में रह्योड़ी हूं म्हारी मासी रे घरै, म्हूं जांणूं वठा री सारी हगीगत।"

"वता बता" ऊगारी आंख्यां चमक गी। "जांणै जांणै जो वठा री सारी बात वता।"

"एक तरकीब है, समंदर चारूं कानी व्हेवा सूं घोड़ां रे चारा री घणी अवकाई रैवे, वठै रातब दाणों तो घोड़ां ने घणो ही खुवावै पण चारा रो तोड़ो रैवै जो वारां सूं कोरड़ अर धोब मांगणी पड़ै। धोब अर कोरड़ लेर जावो तो काम वण जावै।"

"सावास रजपूताणी। म्हारा माथा री मोटी गाळ उतारी।"

गहलोतणी और ही वठा री फोज फांटा, गैला घाटा, अणतराय रो सुभाव, उठणैं बैठणैं रो वगत सारी वातां वताई।

पाटण रा गढ़ री पोळ कनें करसां रो साथ ऊभो।

"राजाजी रे अरजाऊ आया हां" सुण'र पौळचे रोक्या नीं। आगै आगै करसां रो पटेल, लारै लारै करसा। गोडा गोडा तांई ऊंची विना पाण काढ़ी धोवत्यां, रेजा री

अंगरखी पैरयां। माथै पांच पांच हाथ लांबा पोत्या बांध्यां। हाथां में मोटी मोटी डांगा ले राखी। पटेल हाथ में ढाल तरवार लीधां, माथै पागड़ी बांध्यां, राजाजी कनें हाजिर व्हीयो।

पटेल करसां री बोली में बोल्यो, "राम राम, राजाजी, राम राम। समाज्या तो हो ?"

राजाजी वांरा गंवार पणां पै मुळक्या।

पटेल बोल्यो, "म्हां करसा तो कांकड़ रा रोझ हां। बोलणो, थोड़ो ही आवै माफ करियो।"

राजा पूछ्यो, "कठै रैवो, अतरा दूरा क्यूं आया ?"

"माळवा रा रैण वाळा हां, आधी पांती देवां तो ही राज खैंचल घणी करै। वैठ वेगार घणी ले। धणी रे आगै सुणांई नीं। सुणी एक थांरे राज मे रैत ने सुख है, जो थां कनें आया हां।"

राजा कह्यो, "थां अठै वसो, आध में ही थारे रैवायत करांला। आछा खेत टाळनै थांने देवांला।"

अतराक में एक करसो, घोड़ा रा मूंडागै पड्या चारा रो पूळो उठाय, पटेल ने देखावतो बोल्यो, "पटेलां! देखो, राजा रा घोड़ा अस्यो चारो खावै।"

पटेल बोल्यो, "माराज म्हारे कनें घोव कोरड़ है, थां देखो।" पांच दस पूळा काढ राजा रे आगै राख्या, भाई भतीजा सारा ही कोरड़ सराई।

"असी घोव कोरड़ आंपणां घोड़ा रे आवै जदी है।"

"म्हांने आवा दो, बारा ही मी'नां थांरा घोड़ा ने असी घोव सूं धपाय दांला।"

"असी घोव कोरड़ थां म्हांके घोड़ा सारू देवता रैवोला तो आध में ही म्हें थांने रैवायत दांलां।"

"म्हांरे लारै घोव कोरड़ लायां हां जो थांरा घोड़ां रे राखलो।"

राजा राजी व्हे साळू री पाग वंधाय, पटेल ने सीख दीधी।

"थांरे पोळयां ने कै दो जो म्हांने रोकै नीं कालै चारो लेय'र म्हां आवांला" जातै जातै पटेल कह्यो।

समदर रे किनारे नावां लाग री। सातसो ही चारा रा भारा सातसो ही गांठां कोरड़

री वंधी लगी जां में ससतर छिपाय राख्या । सातसो ही आदमी गांठां ने ले नावां पै चढ पाटण में उतरचा ।

राजा, दरीखाने वैठ्यो, कोरड़ घोव लाय नजर कीधी, सगळा जणां सुवापंखी घोव रा भारा देखनै राजी व्हीया ।

"कठै न्हांखां ईं चारा ने ?" पटेल पूछ्यो ।

"बुरज मे"

भारा न्हांकवा ने गिया, झटा झट भारा खोल तरवारां काढ़ी । एक दम अणतराय री सभा पैटूट पड़चा । जांणै खेत काटवा लाग्या । राजा ने ढालां री ओट दे पकड़ लीधो । कोळाहळ मचग्यो । तरवारां री झणझणाट केवाट कठपींजरा में पड़्यो सुणी, आणंद सूं उछळतो वोल्यो,

कोळाहळ कटकेह, कहीजै पाटण में किसो ।
झींक लागी झटकेह, आयो दीसै ऊगलो ।।

पाटण में सेना रो कोळाहळ व्हे रियो है । झटका री झींक लाग री है । जरूर ऊगो आयो है ।

रूंका वागी रीठ, भोट पड़ी माथां भड़ां ।
तोड़ण मामा त्रीठ, आयो दीसै ऊगलो ।।

तरवारां री रीठ वाज री है, भड़ां रा माथा पै भोट पड़ री है, मामा रा बंध तोड़वा ने ऊगो आयो दीखै ।

पाटण रा वींज गढ़ में सभा लाग री । पण आज कैदी गादयां पै वैठ्या है । अणतराय वींरा परवार नै सिरदारां सूधी हथकड्यां पैरयां, ऊभो । गादी मसनद पै चंवर छतर लगायां केवाट वैठ्यो, कनैं ऊगो बेटा री जगां वैठ्यो । ऊगै हुकम दीधो,

"सगळा कैदी राजावां ने सलाम कर ।"

वींज सफेद चांदणी पै मूंगड़ा विखेरया, "चुग" । वे हीज तीखी तीखी आरां अणतराय रे चुभोई । सलाम कराई मूंगड़ा चुगाया, ऊगै कह्यो,

"विना कांई कारण रे थें यां वेकसूरां ने अतरो दुख दीधो, जींरो फळ थांने मिलग्यो वसूला सूं कटाय थांरा टुकड़ा टुकड़ा करदे तो सजा थोड़ी । पण थनें माफ कीधो, या सजा मिली जो ही घणी ।"

सुजाणराय साम्हो झांक्यो, "क्यूं ? बता थनें कांईं सजा मिलै ?"

परधान झट बोल्यो, "म्हारी कांईं गलती ? जीरो लुण खावां वींरा हुकम री तामील करां। धणियां रा भला ने दोड़ां, अवै आप धणी, आप हुकम देवोला जो ही करांला।"

"थनें अर थारा धणी ने छोडां पण म्हां कैवां ज्यूं कर। अणतराय री बेटी ने तो राजा केवाट ने परणा और दूजा सारा राजावां ने परवार री बेट्यां परणा।"

दूजे ही दिन चंवरयां मंडायनै सगळां रा ब्याव कर दीधा।

ऊगै कड़ा सिरोपाव दे घोड़ा पै बैठाय, अणतराय ने पाछो पाटण देय दीधो। "म्हारा सगा है सगां री सी इज्जत व्हेणी चावै।"

केवाट, ऊगा राठोड़ रा कांधा थपेड़ता कह्यो,

> राठोड़ां री कुळ त्रिया, सीळा गरभ न धरंत।
> ज्यां भरतार न भज्जणां, सो भज्जणां न जणंत।।

केवाट राजा नै अणतराय री बेटी अर दूजा कैदी राजां ने वींरा भाइयां री बेटियां ने परणाय, जवांई बणाय सीख दीधी। जुहारी रो नारेळ झेलतां केवाट अणतराय सूं मुजरो कीधो, "सुसराजी, मुजरो। जवांई बणनै मुजरो कर रियो हूं।"

———

डाढ़ालो सूर

एक समै री वात, आबू रा पहाड़ में एक डाढ़ाळो सूर रैवै। सूर मूंडण नै वांरा च्यार छेवरचा ! आबू रो पहाड़ तर भंगर व्हीयो लगो, भांत भांत री वनसपती उग्योड़ी। जगां जगां पाणी रा झरणां वैय रिया। सूर खूब चरै, आछा नरमळ पाणी में कलोळा करै, मूंडण अर छेवरचा रे लारै मस्त रै। घणां आणंद में दिन वीतै, आछो खाय खायनै सूर मच रियो। मोटी मोटी दांतळयां वारै निकळ री अर पेट जमीं के अड़ै। खांवता पीवतां, मौज करतां घणां दिन व्हेग्या पहाड़ पै मोटा मोटा रूंख, झाड़ सूं झाड़ अड़ रियो, भगवान रे करणी जो वांस सूं वांस रगड़ाय वासदी लागगी। वासदी लागी तो अस्ती लागी के आखो आबू रो मंगरो सळगग्यो, रूंख वळग्या, सारो जंगळ भस्म व्हेग्यो।

खळ खळ वैवता लगा झरणां सूखग्या। आबू रो रूप ही कुरूप वैग्यो। चरवा ने चारो रियो नीं, खावा नै वनसपती री नीं। मूंडण छेवरचां ने लीवा अठीने वठीने रूळै पण पेट भरै नीं। भूखा पाछा आयनै थोह मांयने पड़ै। जदी एक दिन मूंडण वोली "भूखा कतराक दिन रैवां, यूं भूखां मरतां तो दिन काढ़णी आवै नीं, चालो कठै ही ओर कठै चालां जो पेट भरनै तो खावां।"

डाढ़ाळो सूर वोल्यो "एक जगां तो है, जठै खावाने ही घणो पण पाछा जीवता आवां के नीं।"

मूंडण कह्यो, "भूखां मरतां मरां जींरी जगां लड़ता तो मरां। क्यूं जीवतै जीव यां छेवरचा ने भूखां मारो।"

सूर कह्यो, "चालो सिरोही राजाजी रा राज में चालो, व्हो म्हारे लारै। आगै आगै तो डाढ़ाळो सूर चालै अर पाछै पाछै मूंडण अर छेवरचा। आडै मंगरै उतरया खाम खाम व्हेता आबू रे नीचै सिरोही रा राज में आया। देखै तो सांठा रा वाड़

ऊभा, जो गेहूं आडै माळ ऊभा। हरचो पट्ट पड़चो कोसां तांई धान ही धान। भूंडण तो ले छेवरचा ने राजाजी री घर खेती में जाय वळी। भूखा! जाय पड़या खावा ने। खाधो तो थोड़ो नै बगाड़ कीधो घणों। पेट भरनै जाय सूत्या। खूब धान चरै, सांठा रा बाड़ तोड़ै। एक एक बिलांत धरती ने खोद दीधी। खाय खायनै मस्त व्हेग्या। एक दिन सूर तो चरनै झाड़ में पड़चो, भूंडण छाया में बैठी, छेवरचा रम रिया। अतराक में रुखाळा आया, देखै तो खेत ने तो ऊंधो कर राख्यो, सांठा भांग्या पड़चा, खेत खुदचोड़ो पड़चो, धान मरोड़चा पड़चा, छेवरचा रम रिया। रुखाळा ने आई रीस उठायनै एक भाटो फैंक्यो।

भाटो फैंकणों व्हीयो नै तो छेवरचा खो खो' करता रुखाळा रे लारै व्हीया। आगै रुखाळा नै पाछै छेवरचा, खेत बारै काढ़ दीधो। रुखाळै जायनै दूजा रुखाला ने बुलाय लायो। दस बीस जणां लाठचां भाला गोफणां लीधां आया।

गोफण झाड़ में वाही, भूंडण डकरनै निकळी, भूंडण व्ही लारै, भाला अर लाठ्यां हाथां री हाथां में रैगी। मार मार टूंडा री रुखाळा ने भगाय दीधा। ले छेवरचां ने चरवा लागगी।

रुखाळा भाग्या भाग्या राजाजी कनें पुकारू गिया के एक डाढाळो सूर थोह घाल्यां बैठ्यो है। आगै देखै तो राजाजी तो रावळा में पधारचा थका। घोड़ा ने तो हरचा बाध दीधा, सिरदारां ने घरै जावा री सीख देय दीधी अर आप रावळा में दो मीनां सारू दाखल व्हेग्या। हुकम देय राख्यो कोई खास काम व्हे तो मांयने अरज कराय दीजो। रुखाळा पुकारू गिया तो चोकी रा सिरदार कह्यो, "मायने राजाजी ने अतरीक बात री कांई अरज करावां कोई गनीम चढनै तो आयो नी है। आयो तो सूर है, चालो सिकार आई।"

मे'लां रा सारा ही सिरदार भाला ले जाड़चां बांध घोड़ा चढ़चा। जाय थोह ने घेरी। घोड़ां री कळहळ सुणनै भूंडण झांकी तो थोह ने तो घेर राखी।

सूरो सूतो झाड़ में, भूंडण पैरा देय।
जाग निंदाळु सायवा, कटक हिलोळा लेय॥

बंदूकां रा फेर व्हीया, गोळियां छूटवा लागी, भूंडण रीस में आय बारै निकळी। घोड़ां रे साम्ही व्ही। भालां रा वार व्हेवा लाग्या, गोळचां री रीठ वाजवा लागी। भूंडण तो खोखारा करती रपटी जो घोड़ां ने टूंड़ सूं उछाळती, सवारां ने धूळ भेळा करती अठीने वठीने निकळगी।

मूंडण छेवरचां ने छाती रे लगाय बैठगी। घोड़ां रा मूंडा पाछा फिरग्या, चढनै आया लगा सवार आपरी पागड़्यां संभाळता, फीका मूंडा कीधां पाछा फिरग्या।

सूर, भूंडण छेवरचां ने लीधा खूब चरै, आणंद करै और घणां ही जणां सूर पै चढ़ चढ़नै आवै पण आपआप रा मूंडा लेयनै पाछा फिरै। सारा खेत ने उजाड़ काढ़्यो। राजाजी रा घोड़ा हरचा वंध्या जारे हरचा जौ कठा सूं आवै ? हवालो तो सूर चर रिया, रुखाळां रो जोर चाले नीं। मींना डोढ़ सूं राजाजी रावळा सूं बारै पधार्‌या, हुकम व्हीयो, "घोड़ा मुलाहिजा करावो। हरचा चरनै घोड़ा कस्याक निकळया है ?"

राजाजी गोखड़ा में विराज्या, घोड़ा मुलाहिजा व्हेवा लाग्या। घोड़ा माता नीं दूवळा दूवळा दीस्या। राजाजी साहणी पै नाराज व्हीया, "अरे घोड़ा मच्या क्यूं नीं ?"

साहणी हाथ जोड़ अरज कीधी, "अन्दाता, घोड़ा मचै कठा सूं ? हरचा जौ तो पूरा चरवा ने ही नीं मिल्या। एक एकल सूर हवाला में वड़ रियो जीं सारा हवाला ने ऊंधो कर दीधो।"

राजाजी तो रीस सूं वळग्या। रीस कीधी, "थां अठै अतरा भेळा व्हे रिया जो कांई काम रा, थां सब नाजोगा हो।"

कोटवाळ हाथ जोड़्या, "परथीनाथ, यूं हुकम नीं व्हे। वीं सूर ने मारवा ने ये सगळा ही भड़ चढ़ चढ़नै गिया पण खाटल्यां में भर भरनै घायलां ने पाछा लाया। सूर कांई है काळ रो अवतार है।"

या सुणनै तो राजाजी ने घणीज रीस आई, हुकम दीधो, "करावो त्यारी अवार री अवार ! वीं सूर ने मारनै लावूं।"

सिकार री त्यारी व्हेवा लागी। नगारां पै चोव पड़ी लुहार भाला सुधारवा लाग्या।

> एरण ठमक्को म्हें सुण्यो, लोहो घड़े लुहार।
> सूरां सारू सेलड़ो, भूंडण सारू भाल।।

दूजे नंगारे पाखर मंडी। तीजो नंगारो असवारी रो व्हीयो। नगारा पै डंको पड़्यो, "कंडिग धींग कंडिग धींग" नै सूती लगी भूंडण चमकी। "डाढ़ाळा ! ये नंगारा आपां पै वाज रिया है। अवै खैर नी।"

डाढ़ाळो बोल्यो, "भूंडण सोच मत कर वाजवा दे निसाण। आज थारा भरतार रा हाथ रण में देख जे।"

डाढ़ाळो दांतळियां घिसतो घिसतो भूंडण ने कैवा लाग्यो, "आज कै तो मे'लां में पदमणियां हीज रोवैला, कै म्हारो मांस हीज वंटेला।"

"काय रोवणूं पदमणी, कै मंस बटाऊं हट्ट"

नंगारा पै रणताल वाज री, निसाण फरक रिया, रावजी सिकार पै चाल्या। नंगारखाना री सरणायां वाजी,

"सूअरिया रे धीमो मधरो चाल।
भाखर रा भोमियां धीरो मधरो चाल॥"

अठीने तो रावजी रा रसोवड़ा में सूरा रो मांस रांधवा ने सिल वट्टा पै वेसवार वांटवा लागी। वठीने डाढ़ाळो दांतळिया घिस घिसनै पांण लगावा लाग्यो।

राजाजी सिकार चढ़या। आगै आगै नौकरया चाल्या, पाछै फोजां। अड़बी तासा वाजवा लाग्या। घोड़ा हणणाय रिया। हाथी झूम रिया। सिकारी भाला हाथां मे लीधां घाड़ां री वागां मरोड़ रिया। बाका मूंडा, रा घोड़ा एकी वेकी खेलता चाल्या, जाय जंगल ने घेरयो। हाको लाग्यो, हाका रा आदमी भाटा फैंकवा लाग्या, घोड़ां रो घेरो घाल दीधो, नाका नाका पै हाथी ऊभा कर दीधा। भालां री अणियां सूं अणियां अड़गी।

भूंडण बोली, "डाढ़ाळा! सूतो कांई है ऊठ थारे माथै कटक हिलोळा लेय रियो है।"

डाढ़ाळो बोल्यो, "नचीती रै! यां घोड़ां ने अबार टूंड सूं उलाळ फैंकूं तो जाणजे थारो भरतार है।"

तुरी उलाळूं टूंड सूं, पाखरिया हजार।
पाला मारूं पांचसो, तो भूंडण भरतार॥

भूंडण बोली, "डाढ़ाळा! थोड़ो ठैर। दो घड़ी थारी भूंडण रा हाथ ही देखलै।" या कैर भूंडण रौद्ररूप कीधां। झाड़ बारै निकळी।

हाको व्हीयो, "आयो आयो।"

मूंडा आगला रावजी ने अरज कीधी, "मुलाहिजो व्है, वो एकल ऊभो।"

रावजी री नजर पड़ी, "अरे या तो मूंडण है, दांतळियां कठै ? फिट रजपूतां, ईं लुगाई सूं थां लड़ लड़नै हारया आज तांई। डूब मरो रे कै !"

मूंडण तो घोड़ां माथै रपटी। बंदूकां रा भड़ाका व्हेवा लाग्या नै वरछां रा वार। वल्लम हाथां में लीधां घोड़ां ने छोड़्या लारै। मूंडण रे लोही झर रियो, डील में गोळ्यां गरक व्हेय री अर वा रपट रपटनै घोड़ां ने उलाळ री। घड़ी दोय तांई मूंडण झूंझती री, लोह्यां सूं लथपथ व्हेगी, मूंडै झाग आयग्या। मूंडण तो कर हिम्मत नै दीधी एक दड़बड़ी जो घोड़ां रा घेरा ने फाड़ती थोह मे डाढ़ाळ तीरै जाय पूगी। ऊभी रै डील धंधूण्यो तो वरछां अर फाळां रो सवा मण लोह डील सूं उछट नीचै जाय पड़्यो।

डाढ़ाळो वोल्यो, "सावास ! मूंडण सावास !! अवै थारा भरतार रा हाथ ही देखलै।"

डाढ़ाळो आयो। टेकड़ी माथै ऊभो रैयनै फोज साम्हो झांक्यो। रावजी री नजर सूर माथै पड़ी। सिकारयां ने हेलो पाड़्यो,

"अरे, डाढाळो ऊभो। खवरदार, जावा नीं पावै। जींरा कनें व्हेयनै यो बारै निकळग्यो वीने देस निकाळो।"

डाढ़ाळै मन में विचारी, "कीं वापड़ा री रोजी गमाऊं व्हे न व्हे तो रावजी साम्हो हीज जावूं।"

गावड फुलाय कान ऊंचा कर डाढ़ाळो तो लगाई रवड़की। सूधो रावजी रा घोड़ा साम्हो। रावजी वल्लम उठावै उठावै जतरै तो घोड़ा रे पेट रे नीचै वळ नै ठोकी टूंड री, घोड़ो उछळनै पड़्यो दस हाथ दूरो, लारै रा लारै रावजी धड़ाक। "खमा खमा" करनै रावजी ने उठावा ने मिनख दोड़्या। घोड़ा रो पेट चीरणी आयग्यो। रावजी झट दूजा घोड़ा पै सवार व्हे लगाम खैंची। अवै जुद्ध व्हेवा लाग्यो।

साठ वरस रो तो सूर, पांच वरस रो घोड़ो अर पच्चीस वरस रो सवार। यांरो जदी जुद्ध व्हेवा लागै तो देखवा ने एक घड़ी सूरज रथ रोक दे वो गैदन्तो डकर डकरनै रपटै, घोड़ां ने दांतळयां सूं चीर न्हांक्या, पैदलां ने टूंड़ सूं उलाळ दीधा। हाथ्यां रे पगां वीचै निकळतो, जोर रो जुद्ध मचायो। घोड़ां रा मूंडा में झाग आयग्या, सवारां रे पसीनो टपक रियो, घायल कुरणाय रिया, डाढाळो लोह्यां

में झगाबोळ व्हीयो ऊभो । वीरी चंपा बरणी दांतळचां लोह्यां में लाल व्हेयगी ।

फोजां दल् ने फेरनै, जीतण ऊभो जंग ।
चम्पा वरणी दांतळी, भरी कसूमल रंग ।।

गोळियां री रीठ वा़ज री है, बल्लमां रा फाळ डाढाळा रे डील में जगां जगां घंस रिया है । डाढ़ाळो रपटै जांणै तोप रो गोळो छूटचो व्हे । जठीने रूंगी मार'न निकळ जावै वठीने घायलां रा ढेर व्हेता जावै । साहजांही तोल रो दो मण लोह गोळियां रो नै फालरो डाढ़ाळा रा डील में रेंग्यो । यूं युद्ध करतां करतां सांझ पड़गी । डाढ़ालो तो अंधारो पड़तो देख दे दड़बड़ी आपरी थोह आड़ी ने भाग्यो ।

——

लालजी पेमजी

भाटीपा में जैसलमेर कानी एक लालजी भाटी रैवै ! वे चोरी री कळा में घणां हुंस्यार ! आपरी जवानी रा दिनां में वां घणी हाथ री चतराई कीधी ! अवै बूढ़ा व्हेग्या पण मन में उछाह घणों, काम पड़ै तो अवै ही पांचसो कोस री मुसाफरी कर आपरी कळा ने बतावा ने त्यार । लालजी ने एक सोच घणों, आपरी दांई रा डोकरां साथै वैठ्या, निसासा भर कैवो करै,

"आजकाल रा छोरां में कांई तन्त नीं । कोई हुंस्यारी नीं, फुरती नीं, चतराई नीं । कोई ईं कळा ने सीखवा री हूंस ही नीं राखै । सिखावां तो कींने सिखावां ? म्हारे बेटो व्हे तो दुनियां देखती अस्यो सिखातो ।"

घरवाळी डोकरी समझावै "पार रे दुख थे दूबळा क्यूं ? आखी ऊमर घणां ही धंधा कीधा, अवै तो रामजी रामजी करो ।"

पण लालजी तो ईं दुख मे ही घुळ्या जावै के या विद्या तो लुपत व्हेती जाय री है । म्हारी विद्या कोई सुपातर मिलै तो वींने सिखावूं पण यां पाछला छोरां में तो कोई ऊरमा वाळो दीखै ही नीं । अठीने वठीने नींगै करता रैवै । वांरा कान में पेमजी सेखावत रे नाम रो भणकारो पड़्यो । सुणी, पेमजी जुवान छोरो है, हुंस्यार है अर पांच सात जगां आछी चतराई रा हाथ बताया है । डोकरा रो जीव थोड़ो ठंडो पड़्यो चालो कोई वण्यो तो है । यूं धरती माता कसी वांझड़ी थोड़ी ही व्हे । लालजी रे मन मे पेमजी ने देखणै रा, वींरी हुंस्यारी पतवाणवा री खांत घणी ।

डोकरी रै नटतां नटतां एक दिन आपरो काळो ऊंट पलाण ही लीधो । अमल रा ठामड़ा खड़िया में घाल सेखावाटी रा मारग में ऊंट रे एड़ लगाई ।

तिरकाल दुपैरी तप री । नीचै रेत तपै, ऊंचै आकास में सूरज तपै । गैला रे माथै, एक रूंखड़ा री छाया में लालजी वैठ्या दुपैरी गाळ रिया । कनैं ही ऊंट छाया में वैठ्यो चर रियो । आप जाजम विछायां वैठ्या, हुक्का री नेज ने पकड़्यां, धीरै

धीरै पी रिया, विसराम ले रिया। अमल रो गाळमो व्हे रियो। नीचै चांदी री प्याली पड़ी जीं में एक एक टोपा नितर नितर अमल रो पाणी टपक रियो।

मारग में एक ऊंट खड़्यो आवै। ऊंट कनें आयो। आवा वाळो छाया री जगां देख ऊंट जेखायो नीचै उतर्यो। आपस मे जैमाताजी री व्ही।

"पधारो पधारो, कठै विराजवो है ?"

"सेखावाटी कानी रैवूं। आपरो विराजवो ?"

"भाटीपा मे ?"

"भाटीपा में ? घणी आछी बात म्हूं ही वठीने ही जाय रियो हूं। लालजी रो नाम घणो सुण्यो। वांरी तारीफ सुण सुण मिलणै री घणी इच्छा व्ही। देखां तो सरी कस्याक है।"

"लालजी तो मिनख म्हंने ही कैवै है" डोकरो मुळक्यो। "आपरो नाम ?"

"पेमजी"

"भली बात म्हूं तो आपसूं ही मिलण ने आय रियो हो!" उठ बाथ में बाथ घाल मिल्या। हुक्का री मनवारां व्ही। अमल पाणी कीधा। बातांचीतां व्हेवा लागी। दोवां रे ही एक दूसरा ने परखवा री अर आपरी चतराई बतावा री मन में।

"चालो तो कठै ही चालां।"

"पधारो, और आया कीं सारू हां"

"थां जुवान हो, थां कांई चतराई बताओ।"

"आप दानां हो, पै'लां आप ही बताओ।"

"पेमजी, आपां चालां तो हां पण पै'लां सुगन तो लेलां।"

"देखो ईं रूंख रे माथै, वा कुड़दांतळी वोलै, वा अंडा सेय री है। वोलवा रो टूंकारो मारै जींरे सागै एक पल सारूं या ऊंची व्हे भट पाछी अंडां माथै वैठ जावै। थें जाओ, चतराई सूं ईं पंछी रा अंडा काढ लावो।"

पेमजी उठ्या, ऊंट रा चार मींगणा ले रूंख माथै चढ़्या। धीरै धीरै पंछी रे कने गिया। ज्यूं ही वा टूंकारो मारवा रे सागै ऊंची व्हे ज्यूं ही अंडो तो उठाय ले अर मींगणों वीरे नीचै राख दे।

पेमजी ने ऊपरै जावा देय, लालजी धीरै धीरै लारै रा लारै चढ़्या। ज्यूं पेमजी

मींगणों मेल अंडा ने आपरी जेब में घालै ज्यूं लालजी पेमजी री जेब में सूं अंडो तो काढले अर मींगणों घालदे।

एक ! दो !! तीन !!! चार !!!!

चार ही अंडा पेमजी री जेब में सूं काढ, मींगणां घाल झट नीचै उतर आपरी सागी जगां, हुक्का री नेज ने मूंडा में घाल बैठग्या। जांणै कठै ही गिया ही नीं। पेमजी राजी राजी आया।

"ले आया ?"

"हां" गरब सूं माथो ऊंचो करता पेमजी बोल्या।

"अै लो" जेब में हाथ घाल साम्हो कीधो।

लालजी हंस्या, हाथ में मींगणां। पेमजी चकराग्या, "ओ कांई व्हीयो"

हंसता हंसता लालजी आपरी जेब सूं अंडा काढ्या।

पेमजी सुगन बिगाड़ न्हांक्या, "खैर माल तो आवैला पण एक'र हाथ सूं निकळयां पछै।"

ठं, ठं, ठं, ज्यूं घड़ियाल रे माथै डंको पड़ै जीरे लारै री लारै खीलां माथै लालजी नै पेमजी हथोड़ा री मारै। रात रो वगत, बारा वजी, घड़ियाल पै बारा डका पड्या अर बारा ही साम्या लाग्या। बारा'र बारा चोईस डंका रे लारै रा लारै चोईस खीला गाड़ता अेमदाबाद रा किला री भींत पै लालजी पेमजी चढ़ग्या। बठै घुमटा पै सोना रा कळसां काटै।

आधी रात रो वगत, सारी दुनियां सोय री। किला रे कनें एक सुनार रो घर।

"सुनारी, सुण, कठै ही सोना माथै करोत चाल री है, म्हूं जावूं नींगै करूं।"

सुनार वांरे पाछै लाग्यो, मसाणां में आया। सुनार मुरदां रे बीचै जाय सोयग्यो।

"पेमजी, यां चारूं ही कळसां ने जमीं में गाडां जींसूं पै'लां थां देखतो लो यां मुरदा में कोई जीवतो आदमी तो नीं सूतो है।"

पेमजी रे हाथ में भालो। एक एक मुरदा कनें जावै अर जांघ में भाला री मारै। देखले, लोही तो लाग्यो नीं। मुरदा रो लोही कठा सूं लागै। ज्यूं ही सुनार रे भालो मार्यो लोही सूं भालो लाल व्हेंणो ही हो पण सुनार वारै निकळता निकळता भाला रा फळ ने आपरा रुमाल सूं पूंछ लीधो। लोही लाग्योड़ो दीसै कठा सूं।

"सारा मुरदा है, कोई सोच नी, गाडो कळसां ने। कालै श्राय कळस काढ ले जांवाला।"

पेमजी लालजी तो गाड रवाना व्हीया। सुनार उठ्यो जो कळसां ने खोद, श्रापरे घरै ले श्रायो।

"कळस तो कोई लेग्यो, खाडो पड़्यो है"

"गजब व्ही। जरूर कोई मुरदां भेळे सूतो देख रियो हो।"

दिन ऊगतां जाय कचैरी में ठेको भरयो, सिवाय म्हाके, म्हारी दुकान रे नगरी में कोई कांदो हळदी वेच नीं सकै।

सुनार घावां री वळत सूं तडफै। अतरी देर व्हेगी, सुनारी हालतांही पाछी श्राई नीं कांई गैला में ही रैगी, श्रस्या कांदा हळदी समंदा पार परा गिया के।

"यो कांई रे. कांदा हळदी रो ही ठेको, फिरती फिरती थाक गी।"

सुनारी वड़ वड़ करती श्राई।

"हैं? कांदा हळदी रो ठेको? गजब व्हेगी, मारया, जा दोड़ श्रांपां रा घर रे बारै देख कोई नवो निसाण तो नीं है, देख।"

"पेमजी, घर रे निसाण कर श्राया?"

"कर श्रायो चालो।"

दोई जणां श्राया। देखै तो वसी ही चोकड़ी रो सैनाण सारी गळी रे घरां पै लाग रियो।

"ईंज हुंस्यारी पै घमंड खाता हा के? देख ली थांरी चतराई। थां जाश्रो घरै, म्हूं देख लूंला।" लालजी लाल लाल श्रांख्यां काढी।

पेमजी नीचो माथो घाल ऊभो।

घर घर रे पछवाड़ै कान लगायो। सुनार रे वळत, नींद नी श्रावै। पड़्यो पड़्यो कुरणावै।

"यो घर श्रर यो मिनख। म्हारी परीक्षा कदे ही गलत नीं निकळै। लगावो सांतो माल काढ़ां।"

गैला फंटै, एक सेखावाटी कानी दूजो भाटीपा री दिसा में। लालजी पेमजी माल री पांती करैं। दो दो कळस पांती रा लीधा। अवै सुनार रा माल री पांती करवा लाग्या। बराबर आधी आधी कीधी। सुनार बादसा री बेटी रा रमझोळ घड़चा, घणां सुवावणां, सोना रा घूघरा लाग्योड़ा।

"या जोड़ी, फूटरी घणी, पांती करयां जोड़ खंडत व्हे जावेला, थां पूरी जोड़ ले लो, पेमजी।"

"या कदी व्हे, पांती में तो एक एक ही आवेला, म्हूं अस्यो धरमहार नीं।"

"म.न जाओ पेमजी, घर में कळेस व्हेला एक रमझोळ लेग्यां। म्हारी घरवाळी तो ड़ोकरी है। कांई पैरै, थां लेजाओ।"

"म्हारी लुगाई असी नीं जो म्हंने कांई कैवै। एक थारो एक म्हारो।"

सोना रो ढेर देख, पेमजी री लुगाई हरखी नीं मावै। सारो गैणो, पांती में आयो जींने झट पैरयो। पग ऊंचो कीधो पैरवा ने तो एक रमझोळ।

"दूजो रमझोळ कठै ?"

"वो तो पांती में दूजा रे गियो।"

क्यूं झूठ बोलो, कोई रांड़ ने देनै आया हो। म्हंने भोळावो मत।"

घर में कळेस व्हेवा लाग्यो। लुगाई तो अणखण ले सोयगी।

"दूजो रमझोळ नीं आवै जतरै अन्न नीं खावूं।"

पेमजी ने लालजी रा बोल याद आया। "अवै मांगू तो म्हारो कांई माजनो जांणै। छानै ले आवूं, म्हारा पै वैम थोड़ो ही करै।"

डोकरी पोसाक कर एक पग में रमझोळ पैर सूती जो जाय खोल ले आयो।

'दिन उग्यां देखै तो एक पग में रमझोळ नीं। लालजी ने रीस आई। म्हारी लुगाई रा पग में सूं काढ़नै लेग्यो। म्हारे ही साथै चोट ? मांगतो तो म्हूं यूं ही दे देतो। म्हें तो पे'लां ही कह्यो थूं लेजा।"

लालजी रीस भरया विदा व्हीया। पेमजी री वहू राजी व्हे दोई पगां में रमझोळ पैर सूती। खेत सूं कपास आयो जो मेडी में पड़यो। लालजी कपास में बासदी मेली, पेमजी री वहू ने उठाय ऊंट पै लाद आपरे घरै ले आया।

"वासदी लागी, वासदी लागी" गांव रा मिनख भेळा व्हे बुझाई। पेमजी री वहू तो वळग्या। पेमजी घणां रोया, विलख्या। किरया करम सारो करायो।

मींना छः वीत्या। पेमजी दूसरा व्याव री सोची, आछी लड़की देखण ने नीसरया।

भाटीपा कानी गिया, लालजी जाण्यां, वांने आपरे घरे बुलाया, ठैराया, वहू मरगी, समाचार पूछ्या। पेमजी रोय रोय, वासदी में वळ मर जावा री हकीगत सुणाई।

लालजी ने हंसी आयगी, वोल्या, "थांने कह्यो हो पेमजी, रमभोळ ले लो पिछतावोला। वा ही वात व्ही ? लो संभाळो थांरी लुगाई ने। थां परणवा आया हो, या म्हारी वेटी है, लो परणो।"

पेमजी ने वांरी लुगाई सूंपी अर घणों ही गैणो गावो दे वेटी ज्यूं विदा कीधी।

जसमल ओडण

ओडां रा डेरा रा डेरा गुजरात साम्हा खड़्या जाय रिया है। माळवा, मेवाड़, मारवाड़ सूं ओडा ने गुजरात में राव खंगार बुलाया। राव खंगार एक मोटो तळाव खुदावा रो मनसूबो कीधो, अस्यो मोटो तळाव जो राव रा नाम ने अमर करदे।

देस देस रा ओडां ने घणी खतारी रा कागद दे'र बुलाया। ओड ओडणियां आप आप रा परवार सूधी, कोड सूं भरयां गुजरात रो गैलो पकड़्यो। रासवा पै आंपणों असबाब लादया, रात पड़्यां तो रूंख रे तळै सोय जावै, दिन में वातां करता, रासवा घेरता, तळाव रा सतूना बांधता मारग चालता जाय रिया।

माळवा सूं ही ओडां रा डेरा गुजरात चाल्या। रासवां रा गळां में मोरपांखां में पोयोड़ा घूघरा झमझम वाजता जाय रिया। ओडणियां रासबा माथै वैठी गीत गावती गैलो काट री, कींरी कांख में छोरा छोरी रोय रिया, कोई कुदाळी फावड़ा ने सूधा सामती जाय री। राजी राजी हंसती बोलती गुजरात पूगवा ने आगती गैलै चाल री।

"अस्यो मोटो तळाव खुद रियो है के दो बरसां तांई तो गुजरात सूं हालवा रो नाम ही नीं लेणो पड़ै।"

"दो वरसां तांई ? अतरा दिन माळवा सूं बारै गुजरात में रैणो पड़ैला ? ये तो घणां दिन व्हे।" जसमल ओडणी केरी री फांक आंख्यां में भोळप भरयां पूछ्यो।

"थूं गैली है, वींनणी। गुजरात कांई अर माळवो कांई ? आंपांरे मजूरी सूं काम, जठै मजूरी मिल जावै जो ही आंपणों देस।" रासवा रे टचकारी मारती एक अधकड़ सी ओडण वोली।

जसमल पाछी वोली तो नीं पण जाणै क्यूं वीरो काळजो अणजांण्या भै सूं कांपग्यो।

जसमल ही तो तळावां री माटी खोदण वाळी ओडणी । बाळपणा सूं कांई पीढ्यां सूं माटी खोदणै रो काम करता आय रिया । पण वींने देख्यां कुण कै या ओडणी ? रूप रा कंचन में सीळ री सुगंध ही । हिरणी जसी भोळी आंख्यां में सीळ रो सुरमो और ही रूप ने वधाय दीधो । ओडां रा फाटयोड़ा तंबूड़ा में वा बोलती तो लागतो जांणै वन में कोई वीण रा तार हिलाय गियो ।

तड़कता तावड़ा मे माटी खोदती, खोदती रे मूंडा पै पसीनो यूं लागतो जांणै कंवळ री पांखड्यां पै पड़ी पाणी री बूंदां ।

तळाव रो काम चाल रियो अर घणां जोर सूं चाल रियो । राव खंगार ने घणी हूंस तळाव त्यार करावा री । ओडां रा डेरा रा डेरा रोज नवा नवा आवै । तळाव रे कनैं ही आप रा तंबूड़ा तांण दीधा, सारो दिन ओड खोदै, ओडणियां रासबा भर भर ढोवै, टावरिया पाळ बांधै, कामैती बैठ्या हाजरी मांडै, राजाजी दिन में दो दांण आवै, मन में आगत, कद यो तळाव पूरो व्हे ।

जसमल ही दूजा ओड ओडणियां रे लारै तळाव पै माटी खोदै, हेलां न्हांके । चांदी री घूघरियां लागी, ओढणी रा पल्ला सूं मूंडा रो पसीनो पूंछती तो घूघरियां रा छणकां लारै देखवा वाळा रा मन रा घूघरा वाज जाता । दोई हाथां में फावड़ो पकड़ माटी खणती तो दूरां सूं लागतो, वायरा सूं चंपा री डाळ झोला खाय री है । रासबा सूं माटी री भरयोड़ी गुणती उठायनै न्हाकती जद वींरी कमर बेंत री कामड़ी ज्यूं लुळ जावती ।

ऊनाळा में वैसाख रो मींनों दिन ढळ रियो, सांझ पड़वा आई । मजूरां छुट्टी कीधी, दिन भर रा थाक्या ओड ओडणियां आपग रासबा संभाळ्या, टावर कुदाळ फावड़ा कांधा पै मेल्यां डेरा कानी चाल्या, ओडणियां चूल्हा सलगावा लागी. कोई माथै घड़ा मेल्यां पाणी लावा ने चाली ।

सांझ रो वगत, सूरज भगवान अस्ताचळ रो गैलो पकड़्यो. तपी धरती निसासा छोड़ती ठंडी पड़वा लागी, पंछियां रा जोड़ा चांचां में चुगो भरयां घुंसाळा साम्हा उड़्या, घुंसाळां में वच्चा मूंडो काढ़्यां चुगा री वाट देख रिया । आंथमणी दिसा री मंगरी डूबता सूरज री किरणां सूं पीळी पीळी व्हेयरी, वींरे नीचै भरी तळाई में सारस रो जोड़ो चांचां सूं पाणी उळीच रियो । लाल मखमल रो जीण कस्योड़ो, अवलक घोड़े सवार राव खंगार हाथ में सोना री मूंठ री तरवार लीधां, दिन में तळाव पै हुयोड़ा काम ने देखतो देखतो वठी ने निकळयो ।

जसमल माथा पै घड़ो मेल्यां पाणी लेवा ने आई, घड़ो पाळ पै मेल धूळा सूं भरयो मूंडो धोय री ।

राव खंगार री द्रस्टि मूं डो बोवती जसमल पै पड़ी, द्रस्टि ही जठै री जठै अटकगी. हाथ री लगाम ढीली पड़गी, घोड़ा री लगाम रुकगी, खंगार तो चित्राम व्हे ज्यूं ऊभो रैग्यो, नीं हालणी आयो नीं चालणी आयो। माटी सूं लथपथ व्हीया पगां ने जसमल पाणी में घाल मसळया, भाटा पै एडी रगड़ी, लाल लाल एडी री झांई सूं पाणी गुलाबी गुलाबी व्हेग्यो। राव खंगार रो काळजो हालग्यो।

जसमल आपरे सहज भाव सूं पग धोया, मूं डो धोयो, कुरळा करया, घड़ो भरयो। राव वींरा रूप ने एकधार आंख्यां सूं पी रियो। जसमल अणजाण, भोळी, पवित्तर। राजा सोच रियो यो रूप! यो योवन!! अर यो भोळापणो!!! कठै ही देख्यो नीं, कदे ही सुण्यो नीं। मारो रावळो गुललंजा सूं भर राख्यो है पण ईं रूप री तो छाया ही नजर नीं आवै।

ये माटी सूं लथपथ व्हीयोड़ी एड़ियां ही असी लाल है तो रणवास रा गलीचा माथै ये पग फिरै तो कजाणां कांई व्हे? ईं ओडण रा पान खायां विनां ही होठ अस्या लाल बूंद है तो तंबोळ चबायां तो यां होठां रा रंग ने माणक ही कोनीं पूगै।

तावड़ा में तपी लगी व्हेवा सूं ही ईं री लाल पड़ी आंख्यां में अतरो उनमाद है तो आसा रो पियालो पायां नैणां में ललाई आवैला जद तो कांईं गजब व्हेला।

मोटी रेजा री ओढ़णी में ही ईं रो अंग यूं लागै जांणै कवळ रो फूल झोला लेय रियो है तो जद या सोळा सिणगार कर राजसी ममनद पै वैठैला तो अपछरां ही लजाय जावैला। यो रतन झूंपड़्यां में रैवानै थोड़ो ही विधाता सिरज्यो है, रतन तो राज मे'लां रा सिणगार व्हे।

पवित्तर आतमा जसमल, माथै घड़ो राख'र चाली, काम सूं विंध्योड़ो राव खंगार ही वींरै लारै लारै घोड़ो छोड़ दीधो। जसमल रा छोटा छोटा पग धूळा में मंडता जावै, वींरी कंकु वरणी एडी ने निरखतो लारै लारै खगार चाल्यो। थोड़ी सी जसमल चाली। राव खंगार सूं रियो नीं गियो, आड़ो घोड़ो ऊभो करनै वोल्यो,

राजाजी वुलावै जसमल ओडणी ए,
जसमल! मे'ल जोवण आव।
केसर वरणी कामणी ए,
थां पर रीझयो, राव खंगार॥

जसमल चमकी, राजा? कांपगी केळ रा रूंख ज्यूं। संभळ'र हाथ जोड़्यां वोली,

कांई तो जोवं थांरा मे'ल ने ओ,
भूल्या राजा, म्हांने म्हारी सरक्यां रो कोड।

राव खंगार बोल्यो, "म्हारा मे'ल देखवा नीं तो कुंवरां ने देखवा ने तो आ कदे ही।"

कांई जोवूं थांरा कुंवरां ने ओ,
भोळा भूपत म्हांने म्हारे ओडां रो कोड़।

जसमल यूं जवाब देतां ही आगै चाली। रावजी झट पाछो जसमल रो गैलो रोक्यो,

राजाजी बुलावै ओ जसमल ओडणी,
ए जसमल ! राणियां जोवण आव।
आछी म्हांने लागै ओडणी ए,
जसमल थां पर रीझ्यो राव खंगार॥

जसमल ने रीस आई वीं ऊपड़तां ही जवाब दीधो, "परजा ने विगाड़ू राजा ! थांरी राणियां ने म्हूं कांई देखूं ?"

कांई जोवूं थांरी राणियां ने ओ,
भोळा राजा, म्हांने म्हारी ओडणियां रो कोड।
रैत विगाड़ू रावजी ओ,
भोळा राजा ! भूल्यो भूल्यो राव खंगार॥

राव खंगार फेरूं नीं मान्यो, वींज ढंग री वात सुरू कीवी,

जसमल घोड़ला जोवण घर आव
काजळ रेखी ओडणी ए
जसमल थां पर रीझ्यो राव खंगार।

जसमल रीस सूं राती पड़गी। वींरा पतळा पतळा होठ धूजवा लाग्या,

"रावजी, थांरा घोड़ा थांरे घरै राखो, म्हारा गधेड़ा सूं ही म्हूं राजी हूं। गुणहीणा राजा, थूं भूल रियो है, म्हंने समझी कांई है ?"

यूं कैती जसमल रावजी रा घोड़ा ने टल्लो देती आगै निकळगी। रावजी जाण्यो यूं

या वातां में नीं आवै। ईंने लाळच देणों चावै। लारै लारै घोड़ा पै चाल्या, गैला में वींनै केता जावै,

दसवा ने देस्यां हो जसमल धोरियो ए,
जसमल ! खिणवा ने देस्यां तळाव।
आभै केरी वीजळी ए, जसमल !
थां पर रीझ्यो राव खंगार ॥

जीमवाने देस्यां जसमल वाजरी ओ,
जसमल ! दूवा ने देस्यां धोली गाय।
सावण सुरंगी तीजणी ए जसमल,
थां पर रीझ्यो राव खंगार ॥

ओड खोदे ओडणी ढोवै ए,
जसमल ! झूलरिया तो वांधै पाल।
सदा ओ सुरंगी ए जसमल,
थां पर रीझ्यो राव खंगार ॥

जीं दिन सूं राव खंगार जसमल ने देखी वीं दिन सूं ही घायल मिरग री नांई घूमै। मे'लां ने छोड़ दीवा, नवा खुदता तळाव री पाळ पै आप रा ही डेरा तणांय दीधा, कोई काम न काज, ओड ओडणी खोदै, जठै वैठ्यो रैवै। जसमल रो मोट्यार देवर जेठ खोदै, जसमल वींरी देराणी जेठाणी गवा भर भर माटी लायनै गेरै। पसीनों टपकतो जावै, जसमल फावड़ा सूं माटी खोदै। राजा देखै अर अचभो करै, या अतरी मेनत कर री है। म्हारा दियोड़ा लाळच साम्ही नी झांक री है। राजा घणी कोसीस कीवी पण जसमल तो राजा साम्हीं नीं झांकी जो नींज झांकी।

राव खंगार भूलग्यो वो राजा है, जसमल वींरा आसरा में आयोड़ी परजा है। एक तो यूं ही राजमद ऊपर सूं काम रो मारचोड़ो। राजा ने चेतो नीं रियो के वो कर कांई रियो है ?

धन जोवन अर ठाकरी, तां पर अविवेक।
ये चारूं भेळा हुवं अनरथ करै अनेक ॥

तळाव री पाळ पै वैठ्यो रैणो, जसमल सूं कांई न कांई मिस वात करणी वींने तो।

जसमल माटी री छोकरी उठाय ज्यूं ही पाळ माथै न्हांकी, खंगार वोल्यो,

थोड़ी थोड़ी ढोवो जसमल ! ढोकरी ए ।
जसमल ! पतळी कमर वल् खाय ।।

सुणतां ही जसमल रे लाय लागी । वा पग पटकती पाछी फिरी, रीस री झाळ सूं हियो सुळग गियो, आंख्यां मे पाणी भरग्यो, पर कैवे कीने ? राजा ही यूं करण लाग्यो जद । रीस तो वींने असी आई के मार दे कै मर जावै । जसमल मरोड़ो खायनै जी वगत तो निकळगी पण जाती कठै ? पाछो आणो तो तळाव री पाळ पै ही पड़तो ।

माटी खोदतां ओडां ने कह्यो, 'चालो आपां अठा सूं चल्या चालां दूजा देस मे जाय मजूरी करां ।"

"हो, हो" करने सारा ओड हसवा लागग्या,

"गैली री वात सुणो । लागी मजूरी छोड़'र दूजी जगां चल्या चालां । राजा कतरो सुख आंपां ने देय राख्यो है ।"

जसमल जाणै सुख देवा रो कारण कांई है ।

वा डरपती डरपती पाळ पै जावै, काम करै, पण वींरी छाती धड़ धड़ करती रैवै । राव रे रणवास में जायनै रैवा सूं तो आखो दिन मेनत मजूरी करनै पेट भरणो ही चोखो । सीळ ने गवायनै मे'लां रा सुखां माथै धूळो पड़चो, आंपणी झूंपड़ी भली । जसमल ने खंगार घणीं घणी भोळाई पण वा सत सूं नीं डिगी । जसमल पाळ पै रासवा खाली कर री, खंगार लेर कांकरो मारचो ।

राजाजी वैठा है पाळ तळाव री,
जसमल ! चुग चुग कांकरड़ी सी वाय ।
मिरगानैणी मरवण ए जममल,
थां पर रीझ्यो राव खंगार ।।

कांकरी री लागतां ही जसमल रे झाळ उठी, पाछी फिरतां ही वोली,

मत नां वावो राजाजी कांकरी ओ,
सामी राजा, देवै म्हारा देवर जेठ ।
अकल अलूणां राजवी ओ हरामी राजा,
भूल्यो भूल्यो राव खंगार ।।

"थें म्हारा धणी हो, धणी व्हे परजा री इज्जत लेवो। थांने लाज नीं आवै। हरामी राजा ! अकल राखो।" जसमल रीस सूं कांप री, छाती सांस सूं ऊंची नीची व्हेयरी।

राव खंगार वीं सती री आतमा री आवाज नीं समझ्यो, वो तो वीं रूप पै और ही रीझग्यो। वींरा सीळ ने नी कूंत सक्यो। वो समझ्यो या देवर जेठां सूं डरपै। हंसते लगै पूछ्यो,

किसड़ै उणियारै थारो घर धणी ए,
जसमल ! किसड़ै उणियारै देवर जेठ।
तनक मिजाजण मोवणी ओ जसमल,
थां पर रीझ्यो राव खंगार ॥

जसमल आंगळी उठाय माटी खणता सांवळा रंग रा मोट्यार ने, लाल दुमालो बांध्यां देवर जेठां ने बतायां।

राजा वांरे साम्हों झांक मुळक्यो। जसमल आडी ने पांवड़ो भरतो बोल्यो, "बस, यां सूं ही थूं डर री ही ?"

कैवै तो मरा दूं थारो घर धणी ए,
जसमल ! कैवै तो मरा दूं देवर जेठ।
ऊजलदंती ओडणी ए जसमल,
थां पर रीझ्यो राव खंगार ॥

राव खंगार हाथ पकड़वा लाग्यो, जसमल बीजळी री नांई तड़पगी।

"खबरदार, जो म्हारे हाथ लगायो। पापी ! हट जा अठा सूं।"

खंगार आपा मे नीं रियो। ईं ओडणी री या हिम्मत ! एक मजूरणी अर म्हंने गाळ दे ! ईं री ओकात कांई ?

"मान जा जसमल, अवै ही मान जा, ज्यूं थारो मन राख रियो हूं ज्यूं थूं माथै चढ़ती जाय री है ? म्हूं जबरदस्ती थंने रावळा में लेजायनै बैठाय दूंला, थूं कर कांई लेवैला ?"

कैवतो कैवतो खंगार, जसमल रो हाथ पकड़्यो। जसमल तो एक हाथ सूं दीधो

राव खंगार ने धक्को । भूखी सिंघणी री नांईं विकराळ व्हीयां हाथ में फावड़ो ले राजा रे साम्हीं तण'र ऊभी व्हेगी ।

"माथो फोड़नै मार दूंला अर मर जावूंला, जो एक पांवड़ो आगै दीधो ।" सती रो तेज सूरज रा तेज सूं ही घणों व्हे ।

"अबै ही समझ जा जसमल ! अबै ही समझ जा, हाल मोड़ो नीं व्हीयो ।" कैवतो कैवतो राव खंगार पाछो फिरग्यो ।

दिन उगतां ही राव खंगार जसमल रा तंबूडा साम्हों झाक्यो । वठै तो सून पड़ी, माळवा सूं आयोड़ा ओडां रो एक ही डेरो नीं । डेरां में चूल्हां री राख पड़ी । गधेड़ां री लीद रा ढुगला रैग्या, ओड जायो एक नीं । डेरा पै कागला पड़ रिया अर कुत्ता भुस रिया ।

ओडण लदी समी सांझ री ओ,
कामी राजा ! ओड लदिया ढलती रात।

जसमल रे साथै राजा रो यो बरताव देख ओड सारा ही उचाळो घाल आधी रात रा लदग्या । जसमल कोसां पार व्ही । यो हाल देख्यो तो राव खंगार घणों पछतायो । घणों दुखी व्हीयो ।

इसड़ी जाणूं तो जसमल ओडणी ए,
जसमल ! डैरा थारा देतो लुटाय ।

"गजब व्हेगी । असी जाणतो तो यां ओडां रा डेरा लुटाय देतो यांने मराय देतो, जसमल ने खोस लेतो । जसमल हाथां बारै परी गी ।"

"म्हूं गुजरात रो पराकरमी राजा, म्हंने एक ओडणी ठोकर मार ओड रे लारै चलती व्ही ।" "जसमल, जसमल" करतीं राव उठ्यो,

घोड़ा दोड़ाया राव खगार ओडां रे पाछै रा पाछै ।

"मार दो ओडां ने मुकाबलो करै तो । पकड़ लावो जसमल ने । राजी करो, जबर-दस्ती करो, पण जसमल आवणी चावै ।"

खंगार रा घुड़ सवार दोड़्या । ओड पाछै फिर फिरनै देखता जावै, चाल्या जावै । पाछै देखै तो घोड़ां री खेह उड़ती दीखी ।

"मारचा, खगार री फोज आयगी। आंपां ने मारैला, जसमल ने पकड़ ले जावैला।"

जसमल कांपगी, खंगार म्हंने बंधाय ले जावैला। सीळ बिना जीवणों कस्यो ? ईं सूं तो मर जावणो ही भलो। जसमल ओड़ां रे हाथ जोड़्या "म्हारी बेइज्जती मत कराओ, चिता चुण दो, म्हूं जीवती वळ जावूं पण वीं राजा रे रावळा में नीं जावूं।" वीरे मोटचार रोवतै रोवतै लकड़्यां भेळी कर दीधी।

जसमल अगनी में बैठगी।

राव खंगार आयो, देखै तो जसमल वळ री "जसमल, जसमल ! पकड़ो, पकड़ो ! चिता में सूं काढो, काढ़ो।"

चिता में सूं जसमल बोली, "जसमल री राख चावै तो लेजा।" चिता री झाळां में जसमल छिपगी। खंगार देखतो रैग्यो।

जसमल, सतियां री सिरताज जसमल सीळ रो मोल चुकायगी।

ऊजळी

कड़ड़ ! बीजळी चमकी, आंख्यां में पळको पड़्यो तो पलकां मींचगी। जांणै सारा डूंगरां में लाय लागगी व्हे। घररर ! घररर ! बादळ गाज्या। बिछाणां में दब्योड़ा टाबरां आपरी मावां ने काठी पकड़ लीधी। बीजळियां रा सळाका लाग रिया। लारै री लारै इन्दर री गाज ! जांणै हजारां हाथी एक लारै चरळाया व्हे। वायरो वाजै तो अस्यो के घरां री छातां ने उड़ाय ले जावै, परळै रो रूप कर आयो। हड़ड़ाटा वायरा रा लाग रिया। ढांढा, डांगर बध्योड़ा, रींकवा लाग्या, खूंटा तुड़ावै, खळभळाटो मचग्यो। घटता में बाकी रैण ने ओळा तडातड़ तड़ातड़ पड़ण लाग्या। मोटा मोटा ओळा जांणै भाटा बरस्या। रूंखड़ा माथै बैठ्या पछ्यां रो साथरो बिछग्यो। डूंगर रा जिनावर झाड़ां नीचै जाय जाय माथो छिपायो। पाणी सूं पीट्योड़ा, सी सूं धूजता अठीने वठीने लुकता फिरै। जीव जंत सारा बेकळ व्हेग्या।

बरड़ा रा डूंगरां में चारणां रो साथ, आपरे पसुवां ने चरावा ने आयोडा हो। डूंगर रा खाळ्या में दूरा दूरा आप आपरी झूंपड़्यां बांध्या पड़्या। ईं परळै काळ सा ओळा, आंधी में आप आपरी झूंपड़्यां में से धंस्या बैठ्या।

पोह रो मींनो। ईंयां ही ठंड घणी अर आज रा ओळा मेह सूं तो चोगणी व्हेगी। बासदी सुलगाय तापै। टाबर मावां ने नी छोड़ै। डोकरा डोकरी बैठ्या, "राम राम" करता, इन्दर सूं कोप कम करणै रा अरदास करै।

एक झूंपड़ी में अमरो चारण, अस्सी बरसां रो बोझो उठायोड़ो। हाथ में माळा ले गूदड़ी में धंस्यो माळा रा मणियां सरकाय रियो। फाटी गूदड़ी सूं ठंड किसी जावै? ठंड सूं हाथ धूजतो जावै। लारै होठ हालता जावै। सी मरता ने नींद आवै कोयनी। आधी रात, मंझ आधी रात। घोड़ा री टापां री आवाज आई। डोकरा रा कान ऊंचा व्हीया। ईं वेळा अठीने घोड़ा ? घोड़ा री पोड़ सुणी, घोड़ा री हींस वींरी झूंपड़ी रा दरवाजा कनैं। अचम्भे में आय उठ्यो। देखै तो घोड़ो बरणा रे माथै टाप मार रियो, हींस रियो।

"कुण व्हेला ?"

कोई जवाव नीं। घोड़ा री हींस कोरी। एक धमाको व्हीयो जांणै कोई पड़्यो व्हे। अमरो झूंपड़ी में जाय हेलो मारचो। "वेटा ऊजळी, उठ वारै आ, म्हंने अंधारा में सूझै कोयनी।"

ठड सूं कांपती, गूदड़ी फैंक ऊजळी उठी। संटी वाळी, वींरा उजाळा में ऊजळी री काया असी चमकी जांणै काळा वादळां में चांद। वारै निकळ सटी रा चांदणा में देखै तो घोड़ो ऊभो। जींण में सूं पाणी झर रियो, घोड़ा रे पगां कनें सवार गांठ व्हीयो पड़्यो। चेतो कोनी,कपड़ा में सूं पाणी टपक रियो, सारो सरीर करड़ो पड़ग्यो, होठ लीलायगिया, आंख्यां री पलकां वंद। डोकरै झट वींरी छाती पै हाथ मेलनै देख्यो, सांस तो आय रियो, नाड़ी पकड़ी, जीवै तो है। गद गद पोठ्या कर ऊजळी वीं ने झूंपड़ी में लेगी, गूदड़ी पै न्हांक्यो।

"काक, जीवै तो है सवार ?"

"जीवै तो है वेटी, पण ठड सूं अकड़ग्यो। झट वासदी सलगा। ईं ने तपावां, नी तो मर जावैला। होठ लीला पड़ग्या ईंरा।

"लकड़ी तो घर में एक नीं कांई सलगावूं ? घर रा सारा गूदड़ा ईं ने ओढाय दीवा।"

अमरा रे ललाट पै चिंता रा सळ पड़ग्या। घरै आयो वटाऊ मर जावैला। घोर पाप! सब सूं मोटो धरम ईंरी सेवा करणो। दो पल सोच में डूवग्यो मन काठो कर ऊजळी रा माथा पै हाथ राखतो बोल्यो,

"वेटी असवार मर जावैला तो आंपा ने नरक में ही जगा नीं मिलैला। ईं ने गरमी पूगाणी है। घर में लकड़ी नीं, गूदड़ो नीं, म्हूं अस्सी वरसां रो वूढो, म्हारा डील में गरमी कठै ? एक उपाय है वेटा, थूं जवान है। थारा डील री गरमी ईं असवार ने दे तो यो जीवै। थारा कपड़ा उतार, थारा डील री गरमी ई रा देह मे साथै सोयनै दे।"

वीस वरस री कुंवारी कन्या वाप रो मूंडो देखती रैगी।

"वेटी यो धरम है पाप नीं" नीचो माथो कर ऊजली आज्ञा मान लीधी।

अचेत सूता असवार रे दो फेरा खाय इसवर ने साक्षी दे, "आज सूं म्हारो पति यो परदेसी असवार" वींरी सैय्या में गरमी देण ने सोयगी।

"थारो उपकार जनम भर नीं मूलूंला" ऊजळी रा हाथ पकड़यां परदेसी सवार कै रियो है।

काल रो परदेसी असवार आज आंपणों, ऊजळी रा अंतर रो स्वामी बणग्यो। काल री आसमान सू ओळा रा गोळा वरसाती अंधारी रात आज री रूपावरणी रात व्हेगी। ऊपरै आसमान में चांद हंस रियो, नीचै मेहो जेठवो, पोरबन्दर रो राजकुंवार, हंस हस ऊजळी रा मन में उजाळो कर रियो।

"आंपणों मिलणो, एक संजोग हो। डूंगरा मे पारस पत्थर मिल्यो, वन में सकुन्तला मिली।"

"सकुन्तला ने भूल दुष्यन्त राजा मे'लां में जाय तो नीं वैठ जावैला कठै ही?"

ऊजळी रे मन में वैम आयो।

"मे'लां मे तो जाय बैठेला, पण ऊजळी राणी रे साथै।"

"चालो आंपा चालां, साथै ही ले चालो।"

"यूं नीं। म्हूं थांने परणवां ने आवूंला। हजारां घोड़ां री जान चढ़ाय ढोलां रे ढमाकै ले जावूंला।"

"लाओ वचन दो।"

विनां थाम्भा रा आसमान रे नीचै ऊभो व्हे सोगन लेवूं। "म्हूं थांरो जीवतो'र मरचो" बाथ मे घालता जेठवै परतिज्ञा कीधी। "बोलो, थें ही थांरा सांचा मन सूं परतिज्ञा करो।"

ऊजळी परतिज्ञा कीधी, "म्हूं भव भव मे थांरी, थां सिवा संसार रा दूजा मानवी म्हारा भाई, थां परणो नी परणो पण म्हे थांने पति रे रूप में अंगीकारचा। सूरज चांद डिगै तो म्हूं डिगूं।"

सुख रा दिन तो वात करतां निकळै, रातां भागी जावै। मेह नै पांवणा कतरा दिनां रा? एक दिन घोड़ा माथै जीण कसतां कसतां मेहो जेठवो सीख मांगी। ऊजळी हिचक्यां भरती सीख दीधी। जेठवो कोल करग्यो, "एक पखवाड़ा मे पाछो आवूंला।"

जेठवो, राजाजी सूं सिकार करणै री इजाजत लेवै, सिकार रे मिस डूंगरां कानी आवै। ऊजळी सूं छानै छानै मिल जावै। दिन में दोय घड़ी ऊजळी री गोद मे माथो मेल मन रो नै सरीर रो थकेलो मेटै। रूपावरणी रात में वैठ ब्याव रा

मनसूबा बांधै। डूंगर रा वनफूलां री गैणों बणाय ऊजळी ने सिणगारै। फूल कुमलावै नीं जठा पे'ली, काळजा पै भाटो मेल, आपरे डेरै पोह फाट्यां आय सोवै। दो घड़ी रा संजोग में हिवड़ा री बातां करै पण विजोग री नांगी तरवार माथै लटकती रैवै। यूं करतां मींना वीत्या। वात छानैं कतरा दिन रैती। राजा जाण्यां, मिनख जाण्यां। राजा रीस में आया। पिरजा में चरचा चालण लागी।

"चारण री बेटी, रजपूत रे वेन ज्यूं, घोर पाप, हाहाकार मच जावैला।"

मेहा री छाती पड़ी नीं, राजा रो कोप झेलणै री। संसार रे सामै खुली छाती आपरी परतिज्ञा पालणै री हिम्मत पड़ै नीं। मेहो जेठवो आपरा अंतकरण ने कचर मे'लां में जाय वैठ्यो। ऊजळी ने मन में सूं काढणै री कोसीस करै। वठीने ऊजळी वैठी आसा री वेलड़ी में लाल लाख घड़ा सींच जेठवा री वाट जोवै। दिन पै दिन निकळता गिया। कोई समाचार नीं। घर गे काम अर वूढा वाप री चाकरी छोड़ मारग पै वैठी गैलो देखै। एक दिन देखै, दूरां सूं घोड़ां रो झूमको रो झूमको, जेठवो आतो वीं व्हाला वाट पै खड़ियो आय रियो है। ऊजळी री नस नस में उमंग री लै'र दोड़गी। वींरा मन रा आणंद ने जीभ जोर सूं हेलो मार कैय दीधो,

"वै आवै असवार, घुड़लां री घूमर कियां।"

दोड़'र ऊपर मंगरी माथै चढ, आंख्यां फाड़, जेठवा ने सोधवा लागी। नैणां सूं टळ टळ करता गालां पै अणविध्या मोती विखरग्या।

"अवला रो आधार, जको न दीसै जेठवो"

"हाय, म्हारो आधार जेठवो तो यां में कोयनी" ऊजळी, जेठवा री याद में रात तारां सूं वातां करै, दिन में डूंगर रा झाड़ां ने वाता पूछै। असाढ रा वादळा निकळ्या, मेह री झड़ लागी, मेह रा नाम रे साथै "मेहो" नाम ने जोड़ विलाप करवा लागी,

मोटो उफण्यो मेह, आयो धरती धरवतो।
मुझ पांती रो एह, छांटन वरस्यो जेठवा॥

"ओ मेह तो मोटा मोटा छांटा वरसाय, धरती ने धपाय दीधी पण म्हारो "मेहो" तो म्हारे माथै एक छांटो ही नीं पटक्यो।"

वसंत में लड़ालूंब फूलां ने देख, लपटी वेलड़्यां ने देख रोय दीधी। जेठवा ने बुलावा देवा लागी,

फागण मीने फूल, केसूड़ा फूल्या घणां ।
मूंघा करोनी मूल, आवी ने आभपरा धणी ।।

डूगरा री खोहां में पसु पंछियां री लीला देखै। सारस चकवा री प्रीत देख सोचै, मानवी सूं तो पछी चोखा जो आपरी प्रीत तो निभावै,

दुनियां जोड़ी दोय, सारस ने चकवो सुणांह ।
मिल्यो न तीजो मोय, जो जो हारी जेठवा ।।

दुनियां मे प्रीत निभावण्यां कै.तो चकवो कै सारस री जोड़ी । जेठवा म्हूं तो देख देख थाकगी पण तीजो नजर आयो नी ।

ऊजळी जेठवा रे आण री आसा छोड़ बैठी । वीं मेहा ने कैवायो, समाचार कैवायो, अंतर री वेदना रा गीत, दूहा बणाय बणाय भेज्या,

ताळा सजड़ जड़्याह, कूंची ले कीनै थयो ।
खुलसी तो आयांह, जड़िया रहसी जेठवा ।।

म्हारा अन्तकरण रे थूं मोटा मोटा ताळा जड़, कूंची ले कठी ने परो गियो । जेठवा, थूं आय, या ताळा ने खोलैला तो खुलैला नी तो ये ताळा जनम भर जड़्या ही रैवैला ।

टोळी सूं टळतांह, हिरणां मन माठा हुवै ।
व्हालां वीछड़्यांह, जीवै किण विध जेठवा ।।

आंपणी टोळी सूं, जोड़ी सूं विछड़तां, हिरणां रा, पसुआं रा मन ही दोरा व्हे । जेठवा, आपरा प्यारां सूं विछड़्यां किया जीवीजै, थूं ही बता ?

थें पटकी पाताळ, ऊंची ले आकास तक ।
पगत्यो बण पाताळ, जीव उठूं रे जेठवा ।।

थूं म्हंने, प्रीत कर, आकास जतरी ऊंची उठाय अबै छिटकाय'र पाताळ में जाय न्हांकी । जेठवा, अबै ही म्हने सहारो दे पगत्यो बण जा । म्हूं जीव उठूंला ।

चकवा सारस वांण, नारी नेह तीनूं निरख ।
जीणों मुसकल जांण, जोड़ी विचड़्यां जेठवा ।।

चकवा री सारस री अर नारी री एक सी वाण है । जोड़ी विछड़्यां पछै ये तीनूं ही जीवै कोयनी ।

जिण विन घड़ी न जाय, जमवारो किम जावसी।
विलखड़ी वीहाय, जोगण करग्यो जेठवा ।।

जीरे विना एक घड़ी रैणो ही दोरो लागै, वींरे विना यो जमारो जनम कियां वीतैला ? म्हूं विलख री हूं थूं म्हंने जोगण कर चल्यो गियो, जेठवा !

ऊजळी घणां कळळापा कर कर जेठवा ने भूली प्रीत याद देवाई।

जेठवै उत्तर में कैवायो, "आंपणी जूनी प्रीत भूल जा। घणां ही चारण है, कींरे ही सायै व्याव कर घर वसा। थूं चारण री बेटी म्हूं रजपूत, आंपां रे तो जात रे कारण सूं भाई वेन रो सम्बन्ध है।"

ऊजळी रे पगां नींचली जमीन निकळगी। सपनां में नीं सोचै जो वात सुणी। "झूठी वात कदे ही नीं। प्रीत रो, जात रे सायैं कांई ताल्लुक ?"

जिण सूं लाग्यो जोय, मन सो ही प्यारो मनां।
कारण और न कोय, जात पांत रो जेठवा ।।

जिण सूं मन लागग्यो, जो प्यारो लागै वो ही आंपणों। प्रीत में जात पांत रो कोई कारण नीं जेठवा !

वीणा जंतर तार, थें छेड़्या वीं राग रा।
गुण ने रोवूं गंवार, जात न भींकूं जेठवा ।।

थें प्यार री वीण वजाई, प्रीत री राग गाई। म्हूं तो थारी वीं प्रीत ने रोय री हूं, गंवार, जात ने थोड़ी ही भींकूं हूं।

तावड़ तड़तड़तांह, थळ साम्हो चढतां थकां।
लाधो लड़थड़तांह, जाडी छायां जेठवा ।।

तत्काळ तावड़ा में रेत रा टीवा पै साम्हा चढतां री गत व्हे जो गत म्हारी व्हेय री है। म्हूं लड़खड़ाय री हूं, जेठवा, ईं वगत थूं जाडी छायां वण म्हंने थारी छाया दे।

जळ पीधो जाडेह, पावासर रे पावटै।
नानकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा ।।

जीं मानसरोवर रो पाणी पी लीधो वींरो जीव तळायां रा पाणी ने थोड़ो ही ढुकै। थारा सूं प्रीत कर जेठवा, दूसरा साम्हें नजर ही नीं उठै।

घणां घणां ओळमा लिख ऊजळी भेज्या, कैंवायो पण जेठवा रो भाटा जस्यो मन पिघळचो नी । कायर रा काळजा में थीज्योड़ो लोही ऊनो व्हीयो ही नी ।

कैंवाई "थंने जात रो विचार नीं है, राज ही चावै तो और घणां ही मोटा मोटा राजवी हैं, वांने अरदास कर, वे थारी मनसा पूरण करैला ।"

ऊजळी रे माथै जाणै वजर पड़चो । रूं रूं सूं रीस री लपटां निकळवा लागी । धिक्कार है । आपरे संगैती चारण खीमरा ने कह्यो,

खीमरा, खारो देस, मीठा बोला मानवी ।
नुगरां किसो सनेह, जेठी राण झल्यो नहीं ।।

खीमरा, यो देस ही खारो निकळचो । खारा मन रा मिनख, कोरा मूंडा सूं मीठा बोलै । अस्या नुगरां मिनखां सूं किस्यो सनेह । जेठवा सूं नेह रो भार झेलणी नीं आयो ।

काचो घडो कुम्हार, अणजाणेह उपाड़ियो ।
भव रो भांगणहार, जेठी राण जाण्यो नहीं ।।

अरे म्हूं अणजाण में कुम्हार रा घर सूं काचो घड़ो (काचा मानवी रो प्यार) उपाड़चो । म्हूं ईं जेठवा राणा ने म्हारी जिन्दगानी ने भांगवा वाळो नीं जाण्यो ।

परदेसी री प्रीत, जेठी राण जाणी नहीं ।
तांणी नै मारचा तीर, माथा भर भर जेठवा ।।

ईं जेठवै म्हारी परदेसी री प्रीत री पीड़ा समझी नी । वी तरकस भर भर दुख रा अर जीभ रा बाण म्हारे माथै तांण तांणनै मारचा ।

दुख सूं दाझ्योड़ी ऊजळी, आभपरा रा डूंगरा में भटकती भटकती पोरबन्दर गी । जेठवा रा मे'लां आगै तीन दिन भूखी अर तिसी बैठी री ।

"म्हूंने एक'र जेठवा थारो मूंडो बतायदे ।"

गोखड़ा री बारी खोल जेठवै मूंडो काढचो, "थूं थारे जात रा बेटा ने परण ले, आधो राज थंने देयनै बेन बणाय दूंलां ।"

कनें ही रतनागर समदर हिलोळा लेय रियो हो । ऊजळी उठी, संमदर री लै'रां में जाय कूदगी ।

ढोला मारू

सपनो तो आयो अर परो गियो पण मारवण री आँख्या में पाछी नींद नी आई।

आंख्यां खोलै तो बारै अंधारो अंधारो लागै अर मीचै तो अन्तस में घोर अंधारो। उठै, बैठै अर पाछी सोवै पण जीव ने जक नी। गांव रे वारै ताल में कुरजां कुरळायी।

घर में सूती कुरजां रा बच्चा री लांबी गावड़ वाळी मारवण रो हिवड़ो ही वां कुरजां रे लारै रो लारै कुरळायो।

सपना में दीखयोड़ो ढोलो अणसैंधो व्हेतां ही मारूणी ने लाग्यो जांणै भव भव रो सैंधो वींरो ढोलो है।

बाळपणां में व्हीयोड़ा ब्याव ने वा सपना री नांईं भूलगी ही पण आज सपनो आयनै परतख ढोला ने आंख्यां आगै ऊभो कर दीधो। वींने चीतां आयो वींरो ही कोई है पण वा वींने नी जांणै, वो वींने नी जांणै। सपनो कांईं आयो, वींरा तन ने, मन ने झंझेड़नै जगाय दीधो। कालै सांझ तांईं साथण्यां रे लारै दोड़ दोड़'र दड़ी रमती टाबरी यां चार पांच घड़ी में ही भावना रो भार उठायां जोध जुवान लुगाई व्हेगी। हिड़दै री वीणां माथै सपना री आंगळयां फिरतां ही सनेह रा सुर बाजण लाग्या। जठीने झांकै वठीने ढोलो ही ढोलो दीखै।

ताल में कुरजां यूं ही कुरळाय री ही, मारवण ने लाग्यो जांणै वांरी जोड़ी बिछड़गी जदी तो म्हारी नांईं कुरळाय री है। नीं तो वांरी आंख्यां में नींद है, नी म्हारी आंख्यां में ही। यारी अर म्हारी एक सी गत है पण यांरे तो पांखड़ा है मन करतां ही उड़ जावै, म्हारे पांख कठै जो उड़नै मिल आवूं।

मा देख्यो मारवणी अणमणी रैवै। साथण्यां सागै ढूल्यां खेलणों आछो नी लागै, काम करवा रो जीव नीं करै। पे'लां ज्यूं दोड़, मां रे गळा में वांहां घाल लटकै नीं। हंसणी आंख्यां री कोर में ठावस री रेखा साफ साफ दीखै। मां थोड़ा में ही घणा

समझगी । चिन्ता व्ही । वेटी मोटी व्हेगी, सासरा सूं कोई समाचार नी । मौको देख राजा पिंगळ ने कह्यो, "मारवण ने सासरै भेजणै री त्यारी करणी चावै ।"

'हां अतरा वरस व्हेग्या । नरवर सूं कोई समाचार लेर ही नी आयो ।"

'वठा सूं नीं आयो तो काईं, आपां ही भेजां । ढोला ने बुलावो भेजो । डोढ वरस री ने परणांई जद ढोलाजी तीन वरस रा हा, बाई मोटी व्ही, वे री जुवान व्हीया। या ढील कांई काम री ?"

सांची बात तो या है, देवड़ी, म्हूं कतरा ही मिनखां ने कागद दे दे ढोला ने बुलावा भेज्या, जो गियो वो पाछो आयो ही नीं, म्हारा समाचार ढोलाजी तांईं पूगं ही नीं । ढोला रो व्याव माळवणी रे साथै व्हीयोड़ो है, जो माणस पूगळ रा मारग सूं जावै जीने माळवण मराय दे ।" पिंगळ घणा उदास व्हे बोल्या ।

देवड़ी सलाह दीधी, 'अबकाळै कोई जाचक ने भेजो जो वीरे माथै कोई वैम नीं करै । मांगतो खावतो नरवरगढ़ जाय ढोलाजी ने वातां सूं, गीतां सूं रिझाय अठै राजी कर ले आवै ।

पिंगळ रे सलाह जंचगी ।

राग रा जांणकार, वातां रा वणावण्या ढाढ़ी ने ढोला कनें जावा रो हुकम दीधो । मारवण दासी ने भेज, ढाढ़ी ने ड्योढी पै बुलाय, ढोलाजी कनें कैवा ने सनेसो समझाण लागी,

"थूं जाय ढोलाजी ने कीजे ,थांरी मारवण बळ'र कोयला व्हेगी है, जायर वीं री भसमी तो भेळी करो । वीं रा पींजर में प्राण कोयनीं । थांरा साम्हा वीं री लौ बळ री है । वीं भला आदमी ने जायनै यूं कीजै, आतमा थारे कने है सरीर ने भला ही दूरो राख । ढाढ़ी, थनें ढोलो मिलै तो थूं जरूर कीजै मारवणी री आंख्यां थांरी वाट देखतां, सीपां री नांईं खुब री है, थां स्वाती री बूंद ज्यूं आय वरसो । योवन चंपा रे मोड़ आवा लाग गिया है, आय कळियां तो चूंटो । थांरी याद कर कर मारूणी कणेर री कांवड़ी ज्यूं सूखगी है ।

पंथी ! ढोलाजी ने यूं कैवणों मत भूल जाजे के विरह री लाय लाग री है, आय ईं दावानळ ने बुझावो । थांरी घण कंवळ ज्यूं कुम्हलायगी है थां सूरज वण उगो। योवन क्षीर समंदर व्हेय रियो है, थां आय रतन क्यूं नी काढ़ रिया हो ?"

मारवण री आंख्यां में आंसू भर रिया, सांस नीं माय रियो, पग अंगूठा सूं लींगरी काढ़ती, रूंध्यां गळा सूं ढाढ़ी ने समझावा लागी, "ढोलाजी रा नाम सूं हाथ जोड़ कीजे, आप म्हांने भूलग्या, कोई सनेसो तक नीं भे बतावो जीवूं तो कीं रा आधार पै जीवूं। जो थां फागण में नीं आया तो ह झाळ में कूद पडूंला।"

मारू राग में दूहा बणाय ढाढ़ी ने दीधा, "ये ढोलाजी रे मूंडागै गाय र,

ढाढ़ी मुजरो कर सीख लीवी, "जीवतो रियो तो ढोलाजी ने लेर आंवूंला गो तो वीं देस में रैय जावूं।"

बादल छाय रिया, अंधारी रात में बीजळयां ओळां खैंचती, आंटा खा कानी चमक री, जांणै इन्दराणी रा काळा घाघरा में सुनैरी जरी रो रियो व्हे। माळिया में ढोलो सूतो बीजळयां खिवतो देखै, माळिया रे नं सूं गाणै री तान ऊंची ऊठी। सीळी रात में मलार राग, झींणीं झींए मेंह री बूंदां रे सागै, मधरा मधरा चालता पवन में भरगी। ढोलो, प कीधां नाग ज्यूं राग पै झूमवा लाग्यो। गावा वाळा मीठा गळा सूं स सबदां में कह्यो,

"ढोलो नरवर सेरियां, धण पूंगळ गळियांह।"

ढोलो चमक्यो, वीं रो अर वीं री बाळपणां में परणी मारूणी रो नाम? ग ने ध्यान एक जगां कर सुणवा लाग्यो। बाळपणा रो व्याव! ढोला रे ?" जावणो!! मारूणी रा रुप रो बखाण!!! जांणै पोथी खोल आगै राख दे

ओछा पाणी री माछळी ज्यूं ढोलो तड़फै।

बरखा बरसती री, ढाढ़ी गातो रियो, ढोलो सुणै।

आंखड़ियां डंबर हुई, नयण गमाया रोय।
के साजण परदेस में, रह्या विड़ाणां होय॥

ा

आंख्यां लाल व्हेगी, रोय रोय नैण गंवाय दीधा। साजन तो परदेस में पराया रिया है।

बहु धंधाळू आव घर, कांसूं करै विदेस।
संपत सगळी संपजै, आ दिन कदी लहेस॥

सारी रात ढाढ़ी गातो रियो, ढोलो सुणतो रियो। आंगणों, पोळ, ओवरा सा

घर जाणै मारूणी रा संदेस सूं भरग्यो। ढोलो सुणतो रियो, ढोल्या पै सूतो पण जांणै ताती रेह पै लोट रियो व्हे। दिन ऊगतां ही गावा वाळा ने बुलायो।

"थां कठा सूं आय रिया हो?"

"पूंगळ सूं, मारवण रो सनेसो लेर। ढोलाजी री बाट देखतां देखतां, मारूणी कुंझ रा बच्चा री नाईं लांबी गरदन री व्हेगी है। वीं कंचन-वरणी कामणी सूं झट जाय मिलो।"

दुज्जण वयण न सांभरी, मनां न वीसारेह।
कूंझां लाल बचांह ज्यूं, खिण खिण चींतारेह ।।

खोटा मिनखां री वातां मे आय वीने मन सूं मत उतारो। कूंजा रा लाल बच्चां ज्यूं पल पल थांने याद करती रैवै वा मारूणी।

आंसू सूं आला व्हीयोड़ा चीर ने निचोवतां निचोवतां वींरी हथेळयां में छाला पड़ग्या है।

जै थूं साहिब ना आवियो, सावण पहली तीज।
बीज तणै झबूकड़ैं, मूंध मरेसी खीज ।।

जो थां सावण री तीज पे'लां कोनी गिया तो बीजळी खींवती देख वा मुगधा खीजनै मर जावैला। थांरी मारूणी रा रूप नै गुण रो बखाण नीं व्हे। घणां पूरब रा पुन्न करयांड़ा व्हे जीने असी अस्तरी मिलै।

नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळ सुकच्छ।
गोरी गंगा नीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ ।।

घणां गुण वाळी, खमणी, नमणी नै कोमल है। गंगा रा पाणी सरीखी गोरी, आछा तन अर मन री।

गति गयंद, जंघ केळ ग्रभ, केहर जिमी करि लक।
हीर डसण विप्रभ अधर, मारण भृकुटि मयंक ।।

हाथी जसी चाल, हीरा जस्या दांत, मूंगा सरीखा होठ है। थांरी मारवण के सिंघ सरीखी कमर, चन्दरमा जस्या भूंवारा है।

आदीता हूं ऊजळो, मारूणी मुख व्रण।
झीणां कपड़ा पैरणां, जांणे झांकेई सोव्रण ।।

मारवणी रो मूंडो सूरज सूं ही ऊजळो है। झींणां कपड़ा में सूं सरीर चमकै जांणै सोनो झांक रियो है।

ढोला रो काळजो उछाला खावा लाग्यो। मन पंछी व्हे अर प्राणां रे पांखां व्हे तो ई वन ने उलांघ वठै जाय पूगै। मन, मारवणी कनें जाय पूगो जांणै वाज पंछी ने मूंठ में भरनै उड़ाय दीवो व्हे।

आंख्यां में हंसती, छाती पै मोत्यां रो हार हलावती माळवण, मुळकती ढोला कनें आई। ढोला रा डोळ देख, उठचोड़ा पग थमग्या। "यूं क्यू? काल हा जो आज नीं। ललाट माथै त्रिसूळ, नाक में सळ घाल राख्या है। कांई वात है? कठै ही मारवण री वात तो याद नीं आयगी।"

कनें वैठ पूछण लागी "आज हंसो नीं, वोलो नीं, कांई म्हारा सूं रूसाया हो? चिन्ता कीं री? वतावो तो।"

"थूं स्याणी है। सब समझै। हिरणाक्षी, राजी व्हे सीख दे तो दिसावर जावूं। देस देसान्तर देखूं।" ढोले भोळावो दीवो।

तंती नाद तंवोळ रस, सुरही सुगंध ज्यांह।
आसण तुरी घर गोरड़ी, तिको दिसावर क्यांह॥

"जींरा घर में मीठा सुर रा वाजा वाजता व्हे, तांवूळ रस नै सुगंधी व्हे,। चढवा ने आछा घोड़ा, घर में रूपाळी स्त्री व्हे वीने दिसावर जाणै री जरूरत कांई?" माळवण उत्तर दीवो।

"ईडर जावूं तो थांरे गैणां घड़ाय लावूं।"

"घर वैठचां ही गैणां मंगाय लेवांला।"

"मुलतान सूं घोड़ा खरीद लाणा है।"

"सौदागर अपणै आप अठै लेय आवैगा। थां छांट छांट नै वांका मूंडा रा घोड़ा खरीदजो।"

ढोला घणां आळखा लीघा, कच्छ में यो काम, गुजरात में वो काम। गैणां लावूं, चीर लावूं, मोती लेर आवूंगा।

"ढोलाजी, थां अणमणां व्हे रिया हो, नखां सूं भींत खुरच रिह्या हो। सांच सांच वतावो मन में कांई है?" माळवण रो वैम वड़तोग्यो।

"मारूणी सूं मिलणै री इच्छा व्हैय री है" धीरै सूं ढोलो बोल्यो ।

माळवण तो सुणतां ही धड़ाक आंगणै जाय पड़ी जाणै सांप खायग्यो व्हे । वीझणी कर, पाणी रो छांटो दे चेतो करायो । ढोलो जाणै री त्यारी कीधी । जद माळवण बोली,

"अबार चोमासा में कदे ही कोई घर सूं बारै नीसरै ? ईं रित में तो बुगला ही धरती माथै पग कोनी देवै । पपीया बोल रिया है, कोयलां सुरंगा सबद कर री है, डूंगर हरया व्हे रिया है । इसी रित में थारै कुण जावै ? कै मांगवा वाळा, कै चोर अर कै चाकर घर छोड़'र नीसरै । नदिया चढ़ री है, वादळा झर ग्या है, यां सुवांवणां दिनां मे म्हूं थां विना किस्या रैवूंगी । धरती तो लीली लीली दीखैला अर थांरी माळवण थांरे गया सूं पीळी पड़ जावेला । म्हंने यां बादळयां री नांई रोवती छोड़ कठै जावो । चोमासै चोमासै ठैर जावो ।"

"दसरावा तांई और रुक जावूंला" ढोलो निसासो न्हांकतो बोल्यो ।

आज धरा दस ऊनम्यो, काळी धड़ सखरांह ।
वा धण देसी ओळंबा, कर कर लांबी बांह ।।

इन्दर धरती साम्हो उलळ रियो है, मंगरा रा टूंचकां ने वादळयां छाती सूं लगाय राखी है । वठै बैठी वा मारूणी बांहा आधी कर कर म्हंने ओळंबा देय री व्हेली ।

दिन जातां कांई देर लागै ? चोमासो निकळयो, दसरावो ही निकळयो । अबै ढोले पूंगळ जाणै री त्यारी कीधी,

"अबै पूंगळ जावा दो, थांरे कैवा सूं चौमासो रुकग्यो, सियाळो आयग्यो अबै जावूं हंस'र विदा करदो ।"

ये सियाळै रा दिन ही कोई जाणै रा व्हे ? पाळो पड़ै, घोड़ा ने ही टापर ओढाणी पड़ै । जीं रित में सीपां में मोती नीपजै, हिरण्यां ग्यामणी व्हे, उत्तराध रो तीखो पवन चालै अस्या दिनां में ही कोई घर छोड़'र जावै ? यां दिनां में तो सांप ही विल नीं छोड़ै ।

उत्तर आज स उत्तर ही, वाजै लहर असाधि ।
संजोगणी सोहावणो, विजोगण अंग दाधि ।।

उत्तर रो पवन वाज रियो है, पाळा री लैंरां चाल री है । संजोगणियां ने तो सुख देवै पण विजोगणियां ने वाळनै राख कर देवै ।

माळवण कैती री । ढोलो सवार व्हेग्यो । माळवण डव डव आंख्यां करती, झव झव करती पागड़ा रे झूंवगी ।

ढोलो वोल्यो, म्हूं जावूंला जरूर । थांने नींद आय जावैला, सूता ने छोड़ विदा व्हेय जावूंला ।

अवै माळवण सोवै हीज नीं, एक पल ढोला ने एकलो नीं छोड़ै । ढोलै आछा तेज चालण्यां ऊंट ने जो एक दिन में सो कोस रो गैलो काटै, पलाण त्यार कर राख्यो ।

माळवण ने जक नीं । यूं करतां करतां पनरा दिन वीतग्या । माळवण री आंख्यां सूजगी, एक दिन नींद री हारी री पलकां जपगी । ढोलै तो ऊंट ने पागड़ै लगाणै रो हेलो मारचो । चट ऊट पै सवार व्हे एड़ मारी । ऊट 'वळवळ' वोलतो उठ्यो । ऊंट री वोली सुणतां ही तो माळवण चमकी, देखै तो कनें ढोलो नीं । गोखड़ा में जाय नीचै झांकै तो ऊंट पै सवार ढोलो जावतो दीख्यो । ढोलै गोखड़ा में ऊभी माळवण ने देखी जांणै वीजळी तड़फी व्हे । ऊंट री मोरी खैंची जो एक पल में गाम रे वारै जातां ऊंट रो पळको माळवण ने पड़चो ।

माळवण हाका करती रैयगी, "कोई ढोलाजी ने रोको कोई ढोलाजी ने रोको ।"

ढोलो ऊंट ने दोड़ायो जांणै उड़ रियो व्हे । माळवण, कळपवा लागी । कदे ही विलाप करै, कदे ही ओळंवा देवै, ऊंट ने सराप देवै, कदे ही याद कर झूरै । वींरी चूंदड़ी रा चारूं पल्ला आंसूड़ां सूं भींजग्या, आंख्यां रो सारो काजळ वैयग्यो । कांचळी निचोवै जसी आली व्हेयगी । ढोला रा जाती वेळा आंगणां में पग मड्या वीं धूळा री मुठ्यां भर भर छाती रे लगावै ।

ढोलो उमंग भरचो, पूंगळ रो मारग पकड़चो । घणां घणां कोड करतो मोटा मोटा मनसूवा वांवतो काळा ऊंट रे कामड़ी मारतो "सांतरो चाल, सांतरो चाल" करतो, घाटी, वन डूंगर पार करतो वढचो । गैला में टीवां रे माथै एक गुवाळिये देख्यो, ऊंट रा गळा में झींणां झींणां घूघरा वाज रिया है दोई आड़ी ने जीण रे लाम्वा लाम्वा फूंदा लटक रिया है, ऊंट अस्यो चाल रियो है जांणै पाणी रो रेलो वैवतो आय रियो व्हे । सवार रो मूंडो कोड सूं चमक रियो है ।

गुवाळियो वोल्यो, "घर कोई गोरी वाट नाळ री है जींरे खातर अस्या सी पाळा में भाग्यो जाय रियो है ?"

"चांद जसी मारूणी सूं मिलवा जाय रियो हूं ।"

"वा तो म्हारी सायण है म्हूं मारवण रो मितर हूं ।" गुवाळियो मन में हंसतो वोल्यो ।

ढोला रा हाथ सूं ऊंट री मोरी छूटगी । कनें ही ऊमरा रो चारण आय रियो ।

ढोला ने पूंगळ जातां देख वींरे लाय लागगी। झट साम्हो झांक निसासो भरतो बोल्यो, "ढोलाजी, जीं मारवण रे खातर उमग्या जाय रिया हो वा तो बूढी व्हेगी, सारो माथो धोळो व्हेग्यो। अवै जाय कांई करोला ? घणा मोड़ा चेत्यो।"

ढोला रो मन पीपळी रा पत्ता री नांईं कांपग्यो। आगै पग पड़ै न पाछै। वठै हीज ऊंट री मोरी थाम ऊभो व्हेग्यो। कांई करूं कांईं नीं ? अवै घरै जाय गाम रा मिनखां ने कस्यो मूंडो बताऊं।

साम्हो एक आदमी आतो दीख्यो। उदास व्हीया ढोलै पूछ्यो "पूंगळ री मारवणी कांई बूढी व्हेगी है ? जाणातां व्हो तो सांच सांच बताओ।"

"थांरी अकल कठै गी ? थांरो ब्याव हुयो जद थां तीन बरस रा हा मारवणी डोढ बरस री ही, थां तो जोध जवान हो अर वा बूढी कियां व्हेगी ?" बटाऊ सवाल कीधो।

एक पल रुकनै कह्यो, "मारू जिसी अस्त्री आज तांई नीं देखी अर नी सुणी। मे'लां में जद वा बोलती व्हे जद यूं जाण पड़ै कठै ही वीणा वाज री है। गळा में चांदी रो गैणों पैर ले तो मारूणी रा बदन री छाया पड़णै सूं वो ही सोना रो सो दीखवा लाग जावै।"

ढोलै झट मुट्ठी भर मोहरां वीं ने देय ऊंट हकाळ्यो। पागड़ी ने कस'र बांध लीधी, मोरी ढीली मेली।

ऊंट तो वायरा सूं वातां करवा लाग्यो। सांझ पड़तां पड़ता पूंगळ जाय पूग्यो। ढोलो मारवणी सूं मिल्यो मारवणी ढोला सूं मिली। जांणै उनाळा मे जेठ री लू सूं वळी वेलड़ी पै सावण री झड़ी लागी।

ढोलो चार दिन रै, सीख मांग मारूणी ने लारै ले घरै विदा व्हीयो। ऊंट ने संणगारचो। आगै ढोलाजी अर पाछै मारूणी ऊंट पै चढ्या। घर रो आसूधो ऊंट, उम्हाया ढोलाजी, वे ही आगता नै ऊंट ही आगतो। ऊमरै सूमरै सुणी ढोलो एकलो मारूणी ने लीधां जाय रियो है। वी देख्यो मारूणी ने लेवा रो घणो आछो मोको। गैला रे वीचै जाजम ढाळनै वैठग्यो। ज्यूं ही ढोला रो ऊट आयो रोकनै मनवार कीधी,

"आओ ! आओ ! मनवार लो। घणां मूंघा पांवणा पधारचा।"

ढोलो, मारूणी ने ऊंट पै वैठी छोड़, आप जाजम पै वैठ मनवार लेवा लाग्यो। ऊमरा सूमरा रा मन में तो पाप, मोको देखनै ढोला ने मारवा री घात घाल राखी।

मांझल रात 10.

मारूणी ने कांई वैम नीं। ढाढ़ी दूहा देय रिया, ढोलाजी अमल री मनवार लेय रिया।

ढाढ़ी री लुगाई पूंगळ री। वा ऊमरा सूमरा रा मन रो पाप जांणै। छानैं सूं मारूणी रा कान में जाय कह्यो, "थांने लेवा री घात है। ढोला ने ले भागो नीं तो मारयो जावैला।"

मारूणी तो झट ऊंट रे कामड़ी री दीधी। ऊंट तो कामड़ी री लागतां ही उठ वैठ्यो, चालवा लाग्यो। ढोलै देख्यो ऊंट भाग रियो। झट ऊंट लारै भाग्यो पकड़वा ने।

मारूणी बोली, "घोखो, झट ऊंट पै चढो।"

ढोलो तो देतां ही पागड़ा पै पग नै ऊंट पै चढनै मारी कामड़ी री, ऊंट भाग्यो। ऊमरो "अरे अरे" करतो रैयग्यो। झट घोड़ा पै चढनै लारै व्हीयो पण वो काळो टोरड़ो! घोड़ा ने पूगवा कद देतो। घोड़ा पाछै रैग्या। ढोला मारूणी घरै आया।

ढोलाजी मारूणी रे अर माळवणी रे साथै घणा आणंद सूं रैवा लाग्या।

लालां मेवाड़ी

गागरूण रे गढ़ रे में दरबार लाग रियो है। रावजी अचळदासजी खीची, गादी मसनद लगायां बैठ्या है। चाकर ऊभा चंवर ढुळाय रिया है। भाई बेटा दोई ओळां में बैठ्या धीरै धीरै वातां कर रिया है। अमलां गळ री है। कविता सुणणै रा सोखीन अठीने वठीने आगा पछा ऊभा है, बैठ्या है। ऊपर झरोखा री जाळी में, लालां मेवाड़ी, मेवाड़ रा धणी मोकळजी री बेटी बैठ्या, नीचै दरीखाना मे झांक रिया है। आपरे बाप दादां रा विड़द रा गीत सुण सुण हंस रिया अर बगसीसां नीचै भेज रिया है।

बीठू चारण, आपरी बेन झींमां ने लारै ले जांगळू सूं मांगणी पै आयोडो है। आज वींरो रावजी कनें मुजरो है। खीचीयां ने पे'लां बिड़दाया, अचळदासजी रा आपरा गीत बोल्या, रावजी राजी व्हीया, सिरोपाव दीधा, इज्जत दीधी।

अवै झींमां, आपरा रच्योड़ा गीत बोलण लागी। दूहा अर सोरठां री वा झड़ लगाई के सारी सभा चतराम री व्हीयोड़ी बैठी रैगी। वींरो दमकतो मूंडो ! बोलणै रो ढग !! कोयल ने लजावा वाळो कंठ !!! वा'वा' करता रैग्या सारा जणां। रावजी मन में कैण लाग्या, "धन है मारवाड़ रो देस जठै झींमां जस्या नारी रतन नीपजै।"

"झींमां बाई, धन हो थां अर थांरी कविता। थांरी कविता सुणणै रो मन में चाव है। थां कालै फेर आवजो, थांरी कविता सुणांला अर वातां करांला।"

"जसी थांरी कविता वसी ही थांरी वात करणै री चतराई। झींमां बाई, थांरे देस में म्हांने परणावो। कोई असी ही रूप, गुण अर चतराई वाळी कन्या म्हांने बतावो। मारवाड़ रे समंद में मोती नीपज्या करै है।"

"म्हारे जांगळू में खींवसी सांखला रे बाई उमा सूं वत्ती और कुण व्हेला" झींमां झट बोली।

कस्याक है थांरे बाईजी ?"

चंदवदनि मृगलोचनी, सिंघ कटी गज गत्त ।
एहवी उमा सांखली, मनहरणी ज्यूं कवित्त ।।

चट दूहो, रच भींमां सुणायो ।

"भींमाजी, वांरो वखाण करो, गुण सुणावो म्हांने ।"

भींमां वखाण करण लागी,

"आसमान री उतरी इन्दर री अपसरा ! सरोवर रो हंस ! सरद रो कंवळ ! वसंत री मींजर ! भादवै रो बादळ ! असाढ री बीज ! हंस री बच्ची ! लिछमी रो अवतार ! परभात रो सूरज ! पूनम रो चांद ! गुण रो प्रवाह ! रूप रो भंडार ।"

"बस बस, रैण दो घणों ।"

"रावजी पूरी वात तो सुणों,"

"वांह जांणै चढयो धनुस, पातळा हाथ ! नान्हां नख ! दांत जांणै अनार रा बीज अधर जांणै त्रंवाळी ! हंस री गत चालै । चांवळ रो चोथो हिस्सो खावै । फूंक री मारी आकास उड़ जावै ।"

"रावजी, जिण आदमी पूरवला जनम में आछा पुन्न करया व्हेला जिण ने उमा सांखली मिलैला । आछा भाग विना राज अर पदमणी मिलै कोयनी ।"

"बाई ! चाहे जो व्हे म्हूं थांरा बाईजी रे लारै परणूंला, थांने कराणो ही पड़ैला यो सगपण ।"

"आप रा कामदार सरदार म्हारे लारै भेजो जो सावे थरपा ।"

लाखपसाव ले बीठू अर भींमां जांगळू आया । खींवसी ने कह्यो ।

खींवसी राणी सूं जाय सल्ला करी ।

"गागरूण रो धणी बाई उमा ने मांगै ।"

"सोनो'र सुगंध देखणों कांई । सोना रूपां रा नारेळ ले पिरोत ने भेजो, सावो थापो ।"

"लालांजी, एक वात कैवूं, मानोला ? मानो तो कैवूं एक अरज ।"

"हुकम री चाकर ने अरज क्यूं आज ? फरमावो ।"

अचळदासजी सूं कैवणी नीं आवै । लालां मेवाडी आंख्यां में आंख्यां घाल पूछ्यो, "असी वात कांई है ? कैवो तो ।"

"जांगळू सूं म्हारे नारेळ.... ...."

"हैं !" जांणै आसमान पड़चो व्हे । लालां मेवाड़ी रो बोल नीं नीसरचो ।

"मेवाड़ीजी, म्हंने माफ करो । व्हेणो जो व्हेग्यो, राज थांरो, पाट थांरो, हुकम थांरो, म्हूं थांरो उमा थांरी । राजी व्हे थां कै दो, परणवा ने जावूं ।"

इसूका भरती लालांजी बोली, "थांरी मरजी, पण म्हंने एक वचन दो ।"

"एक नी दस, लालां !" खीची हाथ आघो कीधो ।

"आप परणो, सासरे रैवो, गैला मे चालो जतरा दिन आप उमा रा ! गागरूण में आवो जी दिन सूं थां म्हारा । उमा सूं पछै बोलो नीं । ये वचन दो ।"

रावजी हाथ पै हाथ दे विदा व्हीया । त्यारचां करै । लालांजी ने रात जक पड़ै नी दिन में जक पड़ै, सारी रात सीटचां देता फिरै ।

जांगळू में गाजा बाजा व्हे रिया । नंगार खाना बाज रिया । मे'लां में रावजी अर उमा बैठ्या । मान मनवारां, राग रंग व्हे रिया । रावजी तो उमां ने देख मोहित व्हेग्या । रात री खबर पड़ै नीं कोई दिन री । वांनें खबर नीं कदी तो दिन उगै'र कदी आंथै । एक पल उमा ने दूरा करै नीं ।

उमा अचळो मोहियो, ज्यूं चन्दण भूयांग ।
रात दिवस भीनो रहै, भमरो सुमनां राग ।।

अचळदासजी ने तो उमा अस्या मोह्या के ज्यूं काळो नाग चन्दण सूं लिपटचो रै अर ज्यूं भवरो फूलां री वासना पै भ्रमतो रै ज्यूं रावजी उमा कनें बैठ्या रै ।

यूं करतां सात दिन व्हेग्या । उमराव परधान, जान में आयोड़ा, रावजी सूं मुजरो करण ने हाजर व्हेवा री अरज करावै पण वांरी सुणाई नीं व्हे । वां घणी अरज कराई तो वारै आय मुजरो झेल सारा सिरदारां ने ववड़ाय परधाने ने कह्यो ।
"म्हूं घणो दुखी हूं ।"

"उमा जसी अस्त्री मिली फेर आप दुखी हीज हो ?"

"हां जद हीज तो दुखी हूं । म्हें लालांजी ने वचन दीधो के वांरे हुकम वगैर उमा सूं गढ़ गागरूण में गियां पछै बोलूं नीं । बताओ, म्हांरो सरीखो दुखी और कुण संसार में व्हेला ? सांखली तो असी है के एक पलक दूरी नी करीजै ।"

ना दीठी ना सांभळी, रूपै इधकी रेख ।
एहवी उमा सांखली, जांणै सह विवेक ।।

परधानां ने गागरूण जांणै री सीख दीधी। सारी जान ने विदा कीधी। रावजी वठै ही सात आठ मींनां रैणै रो विचार कीधो। परधानां सोची या तो गजब व्ही। एक कासीद भेज्यो लालांजी कनें "राणीजी, रावजी तो सांखली सूं रीझ रिया है आवै कोयनी। म्हांने, वानें कागद लिख झट बुलावो। म्हारो कह्यो सुणै कोयनी।"

कासीद जाय कागद लालांजी रे हाथ में दीधो। कागद वांचतां ही पगां री झाळ माथा तक गी। आंख्यां में तरवरा आयग्या पण जोर कांई? कागद लिख कासीद ने दोड़ायो। लिख्यो "कागद वांचतां पाण उमा ने ले वेगा पधार जो, देर लागी तो म्हंने मरी जांणजो।"

कासीद कागद लाय परधान ने दीधो। परधान डोढ़ी पै जाय डावड़ी रे साथै रावळा में नजर करायो। उमा कागद देखतां ही वीने पढ़ फाड़'र सो टुकड़' कर फैंक दीधो। आंख्यां कांढ बोली "जा परधानां ने कैदे, रावजी तो आंख्यां ही कागज नीं देखै, फाड़'र फैंक दीधो।"

कामदार, परधान सारा ही सोच में पड़्या। अबै कांई व्हे। आपां री पूंच भीतर तक नीं। रावजी दरसण दे नीं। कागद पूंचै नीं। अठै कतराक मींनां बैठ्या रैवांलां। फेर कासीद दोड़ाय लालां मेवाड़ी ने सारा समाचार कैवाया।

लालां तो लाल पीळी पड़गी। आंख्यां सूं आंसू री धारा वैवे। मूहता ने बुलाय कह्यो, "मूहताजी, अबै तीजी होवेला। कै तो रावजी ने घरै लावो कै म्हूं अमल खायनै मरूं।"

"खमा करो, अन्दाता। अमल खावै आपरा दुसमण, अस्या क्यूं बोलो।"

लालांजी रुदन करता मे'लां सूं बारै निकळवा लाग्या। लालांजी ने मूहतो हाथ पकड़ पाछो लायो'र आप जांगळू चाल्यो। लालांजी बैठ्या विलाप करै। सारो गैणो फैंक दीधो। चूंदड़ी रा चारूं पल्ला आंसुवां सूं भींजग्या।

खिण बाहर खिण महल में, खिण खिण करै विलाप।
आंख्यां ना'वै नींदड़ी, सोकण तणै संताप॥

सोक रा दुख सूं आंख्यां में नींद आवै नीं। रोय रोय नैण सुजाया।

"मूहता क्यूं आयो?" एक दिन मूहता री अरज रावजी तक पूंचगी।

जिण राजवीं रे आपरो राज नीं व्हे वो परायै घरै आयनै बैठै। जवांई चार दिन रा

पांवणा । आप रे मन व्हे तो गैलां में बीस दिन वत्ता ठैरांला पण सासरै रैणो फूटरो नीं लागै ।"

रावजी रे जचगी, "बात सांची, चालो सीख मांगो ।"

रावजी विदा व्हीया । द्रव दायजो, हाथी घोड़ा, दास दासी सब दीधो । दो दो कोस पै डेरा करता आगै बढ़ै । हंसी खुसी राग रंग करता धीरै धीरै मुसाफिरी करै । उमा वीणा बजावै रावजी ने रिझावै । झींमां कविता सुणावै, रावजी रीझां दे । मारग मे सिकारां खेलता चालै । झीमां रो घणों मान राखै, घणी खातर करै । उमा बैठै जीं पालकी में झींमां ने बैठावै । छोरयां उमा री चाकरी करै जीं सूं सिवाय झींमां री करै ।

उमा कदे ही कदे ही पूछै, "झीमां, ये सुख कतराक दिनां रा ?"

"उमा घबरा मत, माथा पै आवैला जीने झेलणो ही पड़ैला ।"

यूं करतां करतां मारग में छै मास लागग्या । ज्यूं ज्यूं गागरूण रो गढ़ नजीक आवै ज्यूं ज्यूं रावजी रो मन उदास व्हेतो जावै । उमा मनावै ये घड़ियां लांबी क्यूं नीं व्हे जावै ।

झींमां समझावै, "म्हारी चतराई पै भरोसो राख । रावजी ने लालांजी रा मे'लां सूं काढ थारा मे'लां में बिलमाय दूंला । म्हारी वीणा पै सांप तक कुंडाळो मार बैठ जावै, रावजी तो मिनख है ।"

चालतां चालतां एक दिन गागरूण गढ़ आयो हीज । मे'लां में बधावणां कर लीधा। आगै लालांजी तो नो ना'र बारा चीतरा व्हीया बैठ्या हीज । सारी रीस ने आंख्यां सूं अर मूंडा सूं काढता बोल्या, 'रावजी, जसी थां म्हारा सूं कीधी कोई कींसूं ही नीं करै ।"

ठंडो छांटो न्हांकता रावजी कह्यो, "म्हूं थां सूं बदल्यो नीं । म्हें वचन दीधो जो पूरो करूंला । आओ, नाराज मत व्हो ।"

रावजी नै मेवाड़ीजी तो एक व्हेग्या । उमा ने न्यारा मे'ल दे दीधा जांमें रैवे । नीं तो रावजी आवै नीं बोलै । अचळदासजी ने आंख्यां देख्यां उमां ने वरस व्हेग्या । दिन रात बरस बरावर वीतै । रात दिन उमा, झींमां रे आगै विलाप करै । विरह रा दूहा बणाय बणाय वीण पै गावै । जूनी वातां याद कर कर रोवै । उमा रोय रोय झींमां ने सुणायो,

सुपना में अचळा कनें, सूती थी गळ लाग ।
जागी नै विलखी भई, जांणै ड़सी भुयांग ।।

उमा कैंती री,

प्रीतम छेहनां दीजिये, मुझकूं वाली जांण ।
जोवन फूल सुवास रित, भमर भले परमाण ।।

"झींमा, वीने वीरज वंबावै" थांरा ही दिन आवैला, ठैर, घबरा मत ।"

"झींमां, जीं वीणा पै थूं घमंड खावै के सुण'र दोड़ता हिरण रुक जावै, वीं वींणा रे कांई व्हीयो थारे ? वजाय एक दांण खीची ने तो म्हारे कनें बुलाय दे, एक दांण तो ।"

"म्हूं रावजी ने देखूं तो सब करलूं पण वे तो म्हारी छाया कनें ही नीं आवै । एक दांण म्हारा कनें आय जावै तो सारा काम सारलूं ।"

उमां झींमां दोई वैठी उपाय सोचै, यूं करतां करतां वरस बीतग्या । एक दिन झींमां चतराई चाली । लालांजी रे गैणा रो सोख घणो । उमा रा हार री तारीफ करण लागी । लालांजी री छोरयां सुण वांने कह्यो । लालांजी ने वीं हारने देखवा री हूंस आई । हार मंगायो । झींमां जाय झट लालांजी रे गळा में हार न्हांक दीधो । हार ने देख लालांजी रे मूंडा में पाणी आयग्यो, "म्हारे ही अस्यो को अस्यो गढ़ावूं । एक रात म्हारे कनें छोड़ दो । काले पाछो भेज दूंला ।"

"एक रात रावजी ने म्हारा में'लां भेज दो तो यो हार थांरो ।"

झींमां निसांणो मारचो । लालांजी मानगी एक रात में कांई है ।

रात ने रावजी आया तो मेवाड़ी सोळा सिणगार कर गळा में हार पैर मुजरो कीधो । रावजी री नजर हार पै अटकगी ।

"लालां यो नोलखो हार ?"

"म्हारा पीहर सूं आयो"

"राणाजी रो घर है । सैंस मेवाड़ रा धणी । क्यूं नीं अस्या गहणा दे ।" "आप काले उमा रे मे'लां जाय पोढ़जो पण कमर बन्धो खोलजो मत, बोलजो मत ।"

रावजी अचरज सूं लालां रो मूंडो देखवा लाग्या । आज ईं मूंडा सूं ये बोल, कह्यो तो कांई नीं पण मन में घणा राजी ।

"झींमां, आज थांरी चतराई, समझदारी करणो व्हे जो कर लीजे" धड़कती छाती उमा कह्यो ।

उमा रा मे'लां में आज उजाळो व्हीयो। ताक ताक में घी रा दीवा संजोया। चंदण काठ रा ढोल्या ने आज कसाय झींमां त्यार करायो। भीतां पै गुलाब जळ छिड़क्यो। छोरयां सवेरा सूं त्यारयां करवा लागी। झींमां आपरी वीण रा तारां ने कस'र बांध्या। इत्तर री सुगंध री घोरां उड़ री। उमा री छाती धड़क री। एक पल मूंडा पै नूर चढ़ै दूजे पल आंख्यां में उदासी। हाथ जोड़ देवता मनाय री। सांझ पड़ी। उमा सनान कीधो। पोसाक सात बरसां सूं काढ'र पैरी। नैणां में काजळ सारयो। ललाट पै कस्तूरी रो तिलक लगायो। बाळ बाळ मोती सारया जतरा सात बरसां में आंख्यां सूं मोती टपकाया जतरा ही।

रात पड़ी रावजी आया। खमा, खमा कर झींमां वधाय लाई। लाखां मनोरथ हिवड़ा में दबायां सात सात बरसां रा वियोग पछै मिलवा री घड़ी आई। खांत भरयोड़ी उमा साम्ही गी। है! पण वींरा पग वठै रा वठै थम गिया। हालणी नी आयो बोलणी नी आयो। रावजी उमा साम्हां झांक्या तक नी। तरवार सिराणै राख, बंध्योड़े कमर बंदै ढोल्या पै मूंडो फेर सोयग्या। उमा धीरै धीरै आय ढोल्या कनें पगांत्यां ऊभी रैगी। रावजी उमा साम्हा झाक्या तक नीं। रावजी बतळाया नी। झींमां ये हाल देख वीण ले माळिया बारै बजावा ने बैठी। वीण रा तार हाल्या, लारै लारै आसावरी राग में गावा लागी।

धिन उमादे सांखली, थें पिव लियो मोलाय।
सात बरस रा बीछड़्या, तो किम रैण विहाय॥

धन है, उमा थनें। थें आज थांरा पीव ने मोल ले लीधो। सात सात बरसां रा थां बिछड़्योड़ा हो, अर या रात ईंया किया बिताय रिया हो?

किरती माथै ढळ गई, हिरणी लूंबा खाय।
हार सटै पिव आणियो, हंसे न सामो थाय॥

"किरत्यां रा तारा ढळ गिया। हिरणां रो तारो नीचै उतर गियो। आधी रात वीत गी। हार रे साटै पिव ने लाया पण यो तो नीं तो हसै अर नी साम्हो ही झांकै।"

उमा रे आख्यां में सूं तो आंसू री बूंदां टपकै। ढोल्यां कने ऊभी ऊभी रावजी रा पग दबावै। रावजी सूता सूता झींमां रा दूहा सुणै। उमा रे आंसू पड़ता देख्या तो झींमां ने अवकाई आई। दूहो गायो,

चनण काठ रो ढोलियो, किस्तूर्यां आवास।
धण जागै पिव पोढ़ियो, वाळूं यो घरवास॥

चंदण रो ढोल्यो व्हे तो कांई ? किस्तूरी री सुगंध आय री है तो कांई ? कांई पड़्यो यां में ? जीं घर में लुगाई तो जागै आंसूड़ा टपकावै अर पिवजी सूतो नींद लेवै, अस्या घर में वासदी मेलो। कांई काम रो अस्यो घर ?

लालां लाल मेवाड़ियां, उमा तीज बळ भार।
अचळ एराक्यां ना चढै, रोड़्यां रो असवार॥

लालां तो खैर लालां है, उमा री होड़ कांई करै। अचळदासजी तो रोड़्यां रा, टट्टूड़ां रा सवार है, एराकी घोड़ा पै थोड़ा ही चढ़ जाणै।

अवै भींमां जीभ रा तीर छोड़वा लागी। मन रा दुख ने वीणा रा तारां पै चढ़ायो।

काले अचळ मोलावियो, गज घोड़ां रे मोल।
देखत ही पीतळ हुयो, सोकड़ल्यां रे वोल॥

काले हीज तो ईं अचळदासजी ने म्हां हाथी घोड़ां रे भाव मोल लीधो, ओ तो देखतां देखतां सोकड़ल्या रे सिखावा सूं पीतळ व्हेग्यो।

धन दिहाड़ो धन घड़ी, मैं जाण्यो थो आज।
हार गयो पिव सो रह्यो, कोई न सरयो काज॥

म्हें तो जाण्यो आज रो दिन धन है आज मिलांला पण म्हांरो तो हार ही गियो अर पिव ही सूतो पड़्यो है। म्हांरो तो एक हीं काज सर्‌यो नीं।

निस दिन गई पुकारतां, कोई न पूगो दाव।
सदा विलखती धण रही, तोई न चेत्यो राव॥

रावजी सूता सूता सुणै। काळजा में खटका तो पड़ै पण बोलै नीं। उमा रो काजळ वैय वैय टप टप पड़ै। पग दवातां दवातां वींरा हाथ दूखवा लाग्या। भींमां देख्यो, अस्या अस्या बोल सुणाया यां ने रीस देवावा ने पण वोल्या नीं, अवै यां ने रस री वातां कैवूं तो यां रो सूतो लगो नेह जागै।

तिलक न भागो तरुणि को, मुखै न वोल्या वैण।
माणक लड़ छूटी नहीं, अजेस काजळ नैण।

मूंडा सूं थें कोई वोल्या नीं। तरुणी रा माथा रो तिलक ही कोनी विगड़्यो। मोतियां री लड़ां ही नीं विखरी। आंख्यां रो काजळ ही ओजूं यूं रो यूं है।

हार दियो छेदो कियो, मूक्यो मांण मरम्म।
उमां पीव न चक्खियो, आडो लेख करम्म ॥

गांठ री हार दीवो, छळछन्द कीधा, आंपणो मान गमायो। अतरो करतां ही उमा रो तो पिव सूं संयोग ही नीं व्हीयो। करम में आडो लेख है।

ओढण झीणां अंबरां, सूत्यो खूंटी ताण।
ना तो जायो वालमो, ना वण मूक्यो माण ॥

झीणी चादरा ओढ़, खूंटी तांणचां सोय रिया है। नीं तो पिव ही जागै नीं वण ही मान ने छोड़ै। रात यूं ही बीत री है।

अस्या अस्या कामोत्तेजक दूहा सुणाया पण खीची तो हाल्या नीं। वचन निभावता रिया। झीमां ने रीस आई तो वीं जोर सूं कह्यो,

खीची वेचां हे सखी, जे कोई खीची लेह।
काल पचासां म्हां लियो, आज पचीसां देह ॥

खीची ने वेचां हां, कोई खीची ने मोल लो, कोई मोल लो। घणों सूंघो। काले पचास में म्हां मोल लीवो आज पचीस में ही देवां। कोई लेणो व्हे तो लो।

यूं गावतां रोवतां सारी रात बीतगी। पौ फाटवा लागी लालांजी री छोरी रावजी ने लेण ने आय ऊभी री। आसा छोड़ उमा, झींमां ने कह्यो,

मांग्यां लाभै जव चणां, मांगी लभै जुवार।
मांग्यां साजन किम मिलै, गहली मूढ गंवार ॥

मान्योड़ी चीज कदे ही आपणी व्ही है के? मांग्यां तो जौ, चणां मिलै। गहली, कदे ही मांग्या ही साजन मिल्या है? यांरा यांने ले जाण दे।

लालांजी री छोरी वोली,

पोह फाटी पगड़ो भयो, व्हाला वीछडियाह।
मेल सखी म्हारो वालमो, थांका कज सरियाह ॥

जद झींमां वीण ने फेंक कह्यो,

पोह फाटी पगडो भयो, विछड़ण री है वार।
ले सखि थारो वालमो, उर दे म्हारो हार ॥

लेजा थारा वालमां ने म्हांने म्हारो हार सूं।

रावजी जाण लाग्या तो झींमां ने पूछ्यो,

"यो थां राते कांई कह्यो, हार साटै पिव आणियो।

"रावसाब, म्हां तो आपने हार रे साटै मोल लीधा हां एक रात सारू। म्हारो तो हार ही गयो'र थां ही चाल्या, काम सरयो नीं एक।"

"मेवाड़ी री या हिम्मत के मनें वेचै" रावजी रे ललाट में तीन सळ पड़ग्या, आंख्यां राती व्हेगी।

भींमां झट वळती में पूळो मेल्यो,

> लालां मेवाड़ी करै, वीजो करै न कोय।
> गायो भींमां चारणी, उमा लियो मोलाय॥

और लालां सिवाय कुण वेचैला? उमा थांने मोल लीधा है अर भींमां गाय गायनै या वात दुनियां में केय री है।

"उमां अचळ मोलाविया ज्यूं सावण री लूंम"

रावजी रे काळजा में भींमां री वातां चुभगी। वोल्या, "लालांजी ने म्हारा सूं ही हार आछो लागै।"

उमा दांतण करो, कैवो तो लालां रे मे'लां में पग देवा री सोगन ले लूं।" उमा वोली "अवारूं तो आप पधारो म्हूं वुलावो भेजूं जद वैठ्या व्हो ज्यूं रा ज्यूं म्हारे पधार आजो।"

लालां मेवाड़ी रे मे'लां में वैठ्या रावजी चोपड़ खेल रिया। उमा री छोरी आई। "वाईसा वुलावै।"

हाथ रा पासा फैंक रावजी उठ्या। लालाजी पल्लो पकड़ खैंचता वोल्या "जावो कठै? रमत पूरी करो।"

"थां तो, म्हांने सांखली ने वेच दीधा, फेर कांई?" पल्लो छुड़ाता रावजी चाल्या। "थां सूं घरवास करूं तो राणाजी री सोगन" लालांजी रीस में आय सोगन खाय वैठ्या।

उमा रा चींत्या व्हीया। रावजी उमा रे मे'लां रैवा लाग्या।

———

सोरठ

खळळ खळळ करती नदी वैय री, ऊगता सूरज री किरणां सूं चमक चमक करती लै'रां एक दूजी रे पाछै भागी भागी जाय री। जांणै होड़ लगाय री व्हे के कुण आगै निकळै।

नदी रा किनारा ऊपरली सिलाड़ी पै कपड़ा पछांटता धोबी री नजर नदी रा पाणी में बैवती कोई चीज पै पड़ी जो सूरज री किरणां में चमकती धीरै धीरै वैवती आय री।

कनें ही चांपो कुम्हार माटी खोद रियो, धोबी हेलो मारचो, "देख तो कांई वैवतो आवै ?"

दोई जणां ऊभा व्हे देखण लाग्या, "है कांई ? पींजराघट्टी कोई चीज वैवती आय री है, ईंने काढ़ां।"

धोबी बोल्यो, "पींजरो म्हारो, मांयने जो चीज व्हे वा थारी।"

चांपो अर धोबी लंगोट बांध दोई पाणी में कूदचा, रस्सो घाल, खैचनै किनारा पै लाया, सोना रो काम व्हीयोड़ो पींजरो। पींजरो खोलै तो मांयने रूई रा पैल में दवायोड़ी टाबरी, दो च्यार घड़ी री जनम्योड़ी, जांणै गुलाब रो फूल व्हे। "हाय, हाय, कुण हत्यारो है ? है तो मोटा घर री पण वैवाई क्यूं ?"

चांपो कुम्हार टाबरी ने उठाय छाती रे लगाई, "भगवान री इच्छा है, म्हारी नपूतिया री भगवान ने गोद भरणी ही।"

"पींजरियो धोबी लियो, सोरठ लई कुम्हार।"

कुम्हार लेजाय कुम्हारी री गोद में दीधी।

"ले भगवान भेजी है, पाळनै मोटी कर।"

कुम्हारी छाती रे लगाय लीधी, छाती में मोह सूं दूध उतर आयो। आस्यां री

पलकां ज्यूं ईंने राखै।

सांचोर रा राजा रायचन्द देवड़ा रे घरै मूळ नखतर रा पैला पाया में बेटी जनमी, ज्योतसियां कह्यो, "बाप रे अनिष्ट कारक है।"

राव अहैड़ नीसरिया, साम्ही मिली छै धाय।
मूळां जाई डीकरी, नदियां देवो वैवाय॥

राव तो मूळां जाई डीकरी ने नदी में वैवाई पण चांपा कुम्हार रे आंगणां में आणंद उतरग्यो। दोई मोट्यार लुगाई पल पल मुंहगी करै, वांरी बरसां री आसा, कदे ही वांरा ही आंगणां में, "भूख लागी, भूख लागी" करतो टाबर पगां ने पटकतो घूघरिया बजावतो रोवैला, पूरी व्ही। "मां" सबद सुणवा री भूख कुम्हारी रा काळजा ने चूंटती रैती, टाबरी ने पल्ला नीचै ढांकनै मूंडा में बोबो घालती वा निहाल व्हेगी।

चांपो पालणां में हुलरावतो बोल्यो, "आखा सोरठ देस में फिरजा जो थंने असी रूपाळी कोई लाध जावै तो। सारा सोरठ रो रूप भेळो व्हे ईं में आयग्यो है।"

नाम राख्यो सोरठ। सोरठ तो मोटी व्हे सुकल पक्ष रा चांद री नांईं, घड़ी वधतां पल वधै। कुम्हार री झूंपड़ी में जांणै चांद पवास्यो।

चांपो ज्यूं सोरठ मोटी व्हे ज्यूं वींरी घणी सम्हाळ राखै। बारणै मांयनै नीं आवा जावा दे। कुम्हारी ने समझावतो रै,

"देख कठैई कोई मोटा राजवी री नजर सोरठ पै नीं पड़ जावै। नीं तो आंपणो अभाग व्हे जावैला, सोरठ ने मांग लेगा, खोस लेगा। थूं ईं ने घर बारै मत निकळवा दे।"

दूध अर पूत ही कदे ही छिपायां छिपै के ?

पोळ री थेळी कनें दूजी कुम्हारां री छोरचां साथै सोरठ ऊभी। अतराक में गिरनार रो राव खंगार वींझा ने लारै लीधां, सिकार खेलतो खेलतो वीं गैले व्हेने निकळ्यो वींझा री नजर सोरठ माथै पड़ी, दृष्टि डिगायां डिगै नीं।

सोरठ थानें देखिया, जाझा झूलर मांहि।
जांणै चमकी वीजळी, गुदळै बादळ मांहि॥

वींझो तो वठै रो वठै लट्टू व्हेग्यो। राव खंगार रो घोड़ो बीस कदम आगै निकळ्यो, पाछै फिरनै झांकै तो वींझो अटक्यो ऊभो। घोड़ो पाछो मोड़्यो।

राव खंगार ने आता देख वींझो सोरठ साम्ही आंगळी करतो वोल्यो,

कुम्हारां री डीकरी, ऊभी मांड तळांह ।
वींझो पूछै राव ने, कहो तो मोह करांह ।।

अतराक में कुम्हारी आई, सोरठ ने पोळ में ऊभी देखी, वारै घोड़ा सवारां देख्या, झट सोरठ रो वांवटचो पकड़ नै खैंच लेगी ।

आव परी कै जाव परी, अधबिच ऊभी कांह ।
कोयक गरास्यो देख सी, कळंक लगावै मांह ।।

जाती जाती सोरठ रो पळाको राव खंगार ने पड़चो । माथो धूण लीधो । वींझो कह्यो "ईं ने मूंडै मांग्यो धन दे मोल लेलां ।"

खंगार हूंकारो भरचो । वींझै जाय नै चांपा ने कह्यो । चांपै जवाव दीधो, "परथी रो राज दे दो तो ही म्हंने वेटी वेचणी नीं ।"

राव खंगार वोल्यो, "वेच मत । म्हूं गिरनार रो राजा हूं म्हंने परणाय दे ।"

चांपै कुम्हार हाथ जोड़या, "सगपण आपरा वरोवरिया सूं चोखो लागै आप राजा म्हू कुम्हार, आपने परणाय दूं तो काले म्हारी वेटी ने वीरीं सोक्यां मोसा वोलै "दूरी रै कुम्हार री छोरी ।" ईं वास्ते परथीनाथ म्हूं तो म्हारी छोरी ने म्हारा जसी जात वाळा ने ही परणावूंला ।"

वींझै घणो ऊंचो नीचो लीधो पण चांपो मान्यो नीं । दोई मामा भाणेज गिरनार आडी ने चाल्या पण वींझा रे काळजा में तो सोरठ री तसवीर कोरणी आयगी । असी ऊंडी उतरगी के काढचां कढै नीं । रात दिन सोचतो रैवै किस तरै सोरठ ने लावूं ।

चांपा कुम्हार ने सोच लाग्यो, अवै सोरठ ने परणाय देणी । चोखो घर वर देखतो फिरै । भाग री वात वणजारा रो राव रूड़, सांचोर आय निकळचो । लखपती वणजारो, मोकळो धन आगै दीधां पाछै पड़ै । "झाड़ भंजण" जींरो विड़द लाख पोठी लारै लदै ।

चांपै मन में विचारचो ईं ने सोरठ ने परणाय दचां, वैठी राजस करैला । रूड़ ने परणवारो कह्यो । सोरठ जसी नार ने कुण नटतो । राव रूड़ रे लारै व्याव कर दीवो । रूड़ जीं री जीं वगत काठ रो जाळीदार पींजड़ा-घट्टो मे'ल वणायो, जींरै पैंड़ा लगाया । वीं मे'ल में सोरठ ने वैठाई । जठै आप जावै जठै लारै रो लारै, पींजड़ा जस्या मे'ल रे वैल्या जोताय साथै लीधो फिरै ।

वींझा ने खबर लागी सोरठ रे व्याव री। मन में राजी व्हीयो खैर वणजारा तो फिरता ही रैवै, कदी न कदी तो गिरनार आवैला हीज।

छै मींना व्हेग्या, सोरठ रूड़ रे लारै गांव गांव पैड़ा वाळा मे'ल में बैठी फिरै। गिरनार रो तरझंगर जंगळ, झाड़ी सूं झाड़ी अड़ री। खळखळ करता झरणां झर रिया। पहाड़ में बब्बर ना'र डक्कर रिया। गिरनार रा पहाड़ पै टम टम करती साधुवां री सैंकड़ा धूणियां वळ री। ऊंचा रूंखड़ा पै हजारां दम दम करता आग्या (जुगनू) ईं डाळ सूं वीं डाळ पै उड़ उड़नै बैठ रिया। आधी रात रो वगत, वणजारा रूड़ री वाळद आय री। वैल्यां रा गळा में बंधी लगी घंटियां झणण झणण करती जाय री। रमझम रमझम छांटा पड़ रिया, वींझो ऊंचो माळिया में सूतो पण आंख्यां में नींद नीं, सोरठ री तसवीर रै रै नै आंख्यां आगै आय जावै। वैल्या री घंटियाँ रो झणकारो सुण वींझो आदमी भेज्यो खबर लावा ने, आधी रात कुण आयो।

आदमी खबर लायो, वणजारा रूड़ री बाळद आई। वींझो सूतो ज्यूं रो ज्यूं ऊभो व्हेग्यो, खंगार रे मे'लां चाल्यो। खंगार पोढ रियो, परधान सींहो पोळ पै बैठ्यो।

वींझो तो जाय राव खंगार ने झंझेड़्या, "वधाई बगसो, राव रूड़ आयो।"

राव खंगार कोटवाळ ने बुलाय हुकम दीधो "बाळद ने आछी जगां डेरा देवावो, तंबू ताण दो, आछी सरभरा करो।"

वठी ने तो वणजारा रा डेरा लाग रिया, सरभरा व्हेय री, अठी ने वींझा ने सारी रात नींद नीं आई। कदी दिन ऊगै अर कदी जावूं।

पोह फाटतां सोरठ री नींद जागी, उठ'र जाळीदार काठ रा मे'लां में बैठगी।

वींज वगत वींझो वणजारा रे डेरे पूग्यो। वींझा री नजर सोरठ सूं मिली, चो नजर व्हीया। वींझो तो पे'लां ही घायल व्हीयोड़ो हो, सोरठ ही आपो भूलगी। एक दूजा ने देख्यो अर एक दूजा रो व्हेग्यो, ऊमर भर सारू। एक दूजा आंख्यां में मन री सारी पोथी बांच लीधी पण तीसरा ने खबर पड़ी नीं।

वींझो, आछी तरह सूं रूड़ वणजारा री खातरी कर मे'लां आयो। आय अरज करी।

"सोरठ ने लेवणी व्हे तो वणजारा रे लारै चौपड़ खेलां।"

राव खंगार वात मानी, रूड़ रे लारै घणी वातां चीतां व्ही, चोपड़ री वाजी जमी।

राव खंगार चोपड़ खेलै अर वींझो पासा फैंकै ।

खेलतां खेलतां वणजारा रो सारो माल सोरठ रा पींजड़ा सूधी जीतग्यो ।

वींझो जीत्योड़ा माल ने लेवा वणजारा रे डेरे चाल्यो ।

माल तो सारो राव खंगार रे मै'लां पूगतो करायो अर सोरठ रो पींजड़ो आपरे मे'लां रवाना कीधो ।

मे'लां री चांनणी पै ऊभो ऊभो राव खंगार देख रियो, सोरठ रा पींजड़ा ने वींझा रा मे'लां साम्हा जावता देख ने हुकम दीधो, "यो पींजड़ो म्हारा मे'लां में लावो ।" वींझो मूंडो देखतो रैग्यो, सोरठ रो मूंडो उतरग्यो । राव खंगार देखै तो पींजड़ा में सोरठ बैठी जांणै इन्दर लोक सूं अपसरा उतरनै आई व्हे । खंगार री खुसी रो हिसाब नीं ।

वींझा ने कह्यो, "वणजारा सूं जीत्योड़ो सारो धन थारो, यो पींजड़ो म्हारो ।" वींझो तड़फग्यो ।

"सारो जीत्योड़ो धन आप राखो, म्हंने तो पींजड़ो दे दो, म्हारे तो ईं पींजड़ा मांयलो धन चावै और कांई नीं चावै ।"

राव खंगार मान्यो नीं, सोरठ ने आपरे रावळा में भेज दीधी ।

वींझो मन मार दरबार में जाय बैठ्यो ।

ऊंचो गढ गिरनार, आबू पै छाया पड़ै ।
सोरठ रो सिणगार, बादळ सूं बातां करै ॥

ऊंचा गिरनार रा, ऊंचा गढ़ में बैठी जद सोरठ सिणगार करवा लागती तो वायरा रे लारै उड़चा जावता बादळा ही गैला में दो पल सोरठ ने देखवा ने रुक जाता । सुपारी रा रंग जसी सांवळी सोरठ रा लूंगां जसी चरपरी देह गन्ध तर व्हीयोड़ो वायरो, गिरनार री सारी वणराय ने मैहकातो बैवा लागतो । सोरठ रा रूप री महक सूं सारो गिरनार पहाड़ सुगंधित व्हेग्यो ।

सोरठ रंग री सांवळी, सुपारी रे रंग ।
लूंगां जड़ी चरपरी, उड़ उड़ लागै अंग ॥

सोरठ रा झांझर री झणकार सूं गढ़ धूजवा लागतो, गिरनार पहाड़ गाज उठतो । झांझर रा घूघरा रा झणकारां सूं मे'लां री भींतां गूंजवा लागती ।

सोरठ गढ़ सूं ऊतरी, झांझर रे झणकार।
धूज्या गढ़ रा कांगरा, गाज्यो गढ़ गिरनार ।।

सोरठ रा रूप ने देख ने कुण थिर रै सकतो ?

सोरठ सिणगार करनै गोखड़ा में चढ़ती तो गिरनार रा गढ़ रा कांगरा एक टक देखता रै जाता, गिरनार पहाड़ आपरी चोटी ने ऊंची कर झांकवा लाग जातो। विरछ झोला खाय खाय आंपणां पानड़ा ने सरावणां रा सनेसा दे दे गोखड़ा में उड़ाय देता।

विरछां रा कांधा पै लटक्योड़ी वेलड़्यां डाळां ने गाढी पकड़ लटूंबण लागती। आंवा रा मोड़ां रा रस पीवता भंवरा ही मींजरां छोड़ वठीने भणणाटा लेवा लाग जाता। सोरठ रे रूप में अस्यो आकरसण हो जो देखवा वाळो एक दांण चेतो खोय देतो। वाणिया वैंपार करणो भूल जाता, करसां रा हाथ सूं वळद छूट जाता।

सोरठ गढ सूं ऊतरी, कर सोळा सिणगार ।
वणज गमाया वाणियां, वळद गमाया गंवार ।।

सोरठ वैठी राजस करै राव खंगार हुकम हुकम करै, पल पल पाणी उतारै। सोरठ रा मन में तो वींझो वैठ्यो लगो। राव खंगार सोरठ ने लारै ले घणा रंग राग करावै, गोठां माठां करावै, रात दिन आणंद करै। राज काज रे काम ने भूल राख्यो। यूं करतां करतां छै मींना व्हेग्या। राव खंगार ने वारै मूंम पै जावणो, अतरा दिन तो टाळचा पण जावणो ही पड़्यो। जाती वगत सोरठ ने पूछ्यो,

"थारो जीव किस तरह लागैला।"

सोरठ उदिया ढोली ने मांग लीवो के ईं ने हुकम दे जावो जो म्हारी ड्योढी पै गाणो करवो करै।

राव तो मूंम विदा व्हीया नै वींझा ने पाछलो काम सूंप्यो, कूंचियां जनाना री सूंपी। राव चाल्या। वींझा रो जीव उथल पुथल व्हे रियो, दिन में सौ सौ निसासा न्हांके। सोरठ सूं दो वात करवा ने उमगायो रैवै पण ओसर लादै नीं।

सोरठ डाळी अंव री, ऊगी विखमी ठांय ।
वींझो वंदर हो रियो, कद टूटे कद खाय ।।

वींझा रा भाग सूं एक दिन डाळी टूटी। सोरठ वैठी मायो गुंथाय री। उदियो ढोली ड्योढी पै माढ रा दूहा देय रियो। सोरठ री नजर दरवाजा पै वैंठ्या, जोवन

में छक्या वींझा पै पडी। एक बुलावो भेज्यो, दूजो बुलावो भेज्यो। बींझो आयो। सोरठ बोली,

बींझा म्हाके आंगणां, नित आवो नित जाय।
घट को वेदन वालमा, तो सूं कही न जाय॥

बींझै आपरा मन री दसा बताई,

वेदन कहां तो मारिजां, कहतां लाज मरांह।
म्हे करहा थे बेलड़ी, नीरो तोही चरांह॥

सोरठ बोली, "राव खंगार म्हंने चोपड़ में जीती तो कांई? जीत्यो तो म्हारो सरीर ही। पण म्हारा मन ने जीतवा वाळा थां हो। सरीर रो धणी मन रो मालक नीं वण सकै, मन रो मालक सबरो मालक व्हे।"

बींझा ने लाग्यो जांणै आकास सूं अमरत री वरखा व्हेय री। निहाल व्हीयोड़ो बींझो सोरठ रा हाथ ने हाथां में झाल लीवो।

सोरठ खुलासा कीधो, "आखी ऊमर निभावो तो हाथ पकड़जो।"

बींझै सूरज ने साक्षी कीवा, "जीवतो तो थारा सूं वीछड़ूं नीं मर जावूं तो दोस मत दीजे।"

दोई जणां सूरज ने अर भगवान ने साक्षी कर, मन रो गठजोड़ो बांध आतमदान दीधो। परतंग्या लीधी, "एक दूजा सूं अळगा कदे नी व्हां।"

वा! बींझो तो अस्यो रमियो के फिरै नै सोरठ रे मे'लां में जावै। सोरठ उमगी बैठी बाट जोवै। बींझा रो तो सोरठ रा मे'लां में आवणो व्हीयो नै उदियै ढोली दूहो दीधो,

बींझो वाळक डावड़ो, हिलयो वागां जाय।
डाळ मरोड़े रस पिवै, फळ लाखीणा खाय॥

बींझै सुण्यो, सोरठ सुण्यो, दोई जणा दूहा रो मरम समझ्या एक दूजा साम्हा झांक्या। सोरठ गळा रो हार उतार नै उदिया ढोली ने नीचै फैंक्यो।

अवै तो रात दिन बींझो सोरठ रा मे'ल में रवै। उदियो गावै अर वे रीझां करै। दिन तो घड़ी ज्यूं जावै अर घड़ी पल ज्यूं वीत जावै।

सोरठ अर वींझो तो दूध अर पाणी ज्यूं मिलग्या। फूल अर गन्ध ज्यूं एक जीव एक मन दो सरीर।

वे जाणता हा कस्या खतरा सूं वे खेल रिया है, कदे ही बींझो गळगळो व्हे सोरठ ने पूछतो, "थूं सांची बता कठै ही राव रे आयां वांरा मैं सूं कमजोर तो नी निकळ जावैला ? म्हारा सोना, कठै ही थूं पीतळ मत निकळ जाजे ।"

सोरठ सोना रो टको, पर हत्थ लो परखाय ।
खोटा कळजुग वापरयां, (राणी) मत पीतळ व्हेय जाय ।।

सोरठ कदे ही पूछती, "म्हंने भूल तो नीं जावोगा ? देखो म्हारा सूं दूरा तो नीं व्हे जावोला ?"

"सोरठ थूं असी ऊंडी गड़गी है काळजा में । जीवतो तो कांई म्हूं मर जावूं नै थूं आय मसाणां में हेलो मारै तो म्हारी भसमी बोल उठैला ।"

अस्या समै में उदियो गावतो,

सोरठ थां में गुण घणां, कदियन ओगण होय ।
गूंदगरी रा पेड़ ज्यूं, रतियन खारो होय ।।

सोरठ री तारीफ सुण बींझो बाग बाग व्हे जातो । तपता तावड़ा रो तातो वायरो ही सीतळ लागवा लाग जातो । अंधारी रात ही उजाळी उजाळी दीखवा लागती । सारो जगत एक घेर घुमेर आंबा रा पेड़ जस्यो दीखतो, जो पाका आंबा सूं लड़ालूंब व्हेय रियो व्हे । डाळ डाळ पै तिरपत कोयलां बोल री व्हे । रस सूं छाक्या भंवरा मांजरा रै ओंळूं दोळूं घूमर घाल रिया व्हे । जांणै ईं जगत रो पत्तो पत्तो कैवतो व्हे,

"आंबी रस पीवजो पिलावजो"

पण यो सुख रो संसार कतराक दिनां रो ?

अठीने वठीने चरचा चालवा लागी, कानां में वातां व्हेवा लागी । सोरठ रे ही भणकारो पड़्यो, चमकी । बींझा ने आयनै कह्यो ।

बींझो बोल्यो, "डरपगी ? बावळी ! प्रेम ही कदे छिपायां छिप्यो है ? फूलां री सुगन्ध कदे ही छिपी री है ? फूल रे खुलतां ही सुगन्ध ने पवन ले भागै अर च्यारूं आडीने बिखेर देवै तो फेर प्रेम रो पवित्तर फूल खुलै जींरी खसबोई तो दस ही दिसा में फूट्यां विनां किण तरै रै सकै ?"

सोरठ वांरां पवित्तर अर गाढा नेह पै सोचती लगी कैवती, "बींझा ! पूरवला जनम में आपां रा हाथ सूं कोई मोटो पाप व्हीयो जो ईं जनम में आपां अतरा दूरा पड़्या । कोई सराप रे कारण विछोड़ो व्हीयो ।"

जीवण रा अतरा बरस जो एक दूजा बिना अबार तक गमाया, वां बीत्योड़ा बरसां पै नजर न्हाकता, पछताता लगा मोटो नीसासो न्हांक देता। संजोग रो एक एक पल अमोलक लागतो, अभिलाखा करता या सारी जिन्दगानी यां दिनां री एक घड़ी बण जावै, पण यूं व्हे कठै ? संजोग री घड़ी तो पल ज्यूं वीतै अर विजोग रा पल वरसां ज्यूं लांवा वध जावै।

अंधारी रात तारा टम टम कर रिया, गिरनार पहाड़ रा खाळचा में फूल्या केवड़ा री सुगध सूं धीमो धीमो वाजतो वायरो गरणाय रियो। उत्तराध सूं वादळा गढ़ रा घूमटां रे अड़ता लगा निकळग्या। घूंसाळा में पंछी, घरां में मिनख सूता पड़्या। मंझ रात रो वगत, हिरणी रो तारो गढ़ रा कांगरा री सूध पै चमक रियो। मे'लां मांयने हिंगळू पागां रा हिंगळाट माथै सोरठ अर बींझो निसंक सोय रिया। कूणां में अतर रो दीवो बळ रियो। मंधरो मंधरो उजास व्हे रियो। चांदी री सांकळां में घल्यो हिंगळाट धीमो धीमो हाल रयो। धीरै धीरै हींडा लाग रिया जींसूं सुख री नींद ओर ही गाढी नैणा में घुळ री। टूटचोड़ी मोगरा रा फूलां री चोसरां अठीने वठीने बिखरी पड़ी। सेज में बिछायोड़ी गुलाब रा फूलां री पांखड़्यां सूं भीनो भीनो सारो मे'ल महक रियो। सोरठ अर बींझो सुध खोय गाढा सोय रिया। राव खंगार तो खड़ खड़ करता, विना खबर कीधां मे'लां में चढ़ आया। खंगार ने देखता ही पोळ वाळा पोळ दीधी, डचोढ़ी वाळा डचोढ़ी रो ताळो खोल दीवो। राव तो सूधा सोरठ रा मे'लां में आया। देखै तो हिंगळाट पै बींझो दीख्यो। रीस रा मार्‌यां सारो डील धूजवा लाग्यो। होठ थर थर कापवा लाग्या। हाथ सूधो कमर मे कटारा पै पड़्यो। कटार खैंच नै दोवां री छाती में मारवा नै हाथ छाती तक पूगनै रुकग्यो। राव ने विचार आयो, मार्‌यां सूं कांई ? ईं में तो म्हारो ही नाम कुनाम व्हेला।"

बींझो मारूं तो भाणजो, सोरठ घर री नार।
जांघ उघाड़्यां आंपणी, भूंडो कह संसार ।।

हाथ पाछो खैंच लीधो, रीस में भर्‌या थका खंगार वांरे सिराणै थांभो हो जीं में जोर सूं कटार री मारी तो मूंठ तक कटारो थंभा में धंसग्यो। झाळां निकळती आंख्यां सूं झांक खंगार पग पटकतां ज्यूं आया ज्यूं वारै निकळग्या।

सोरठ अर बींझो तो नसा में मस्त व्हीया सूता। वां ने खवर नी के कुण आयो अर कुण गियो।

दिन ऊग्यो, उठ्या अर नजर पड़ी तो थांभा में कटारो गड़ रियो राव खंगार रो। "मूंडो धोळो पड़ग्यो, वीझो तो झट पाग रा अटपटा पेचां ने सूवो करतो माथै मेल

वारै किळग्यो। अवै मे'लां में वैठी तो सोरठ झूरै अर वारै फिरतो वींझो तलफै। रात ने जक पड़ै न दिन में। मिलै तो मरै, नीं मिलै तो रियो जावै नीं।

सोरठ रे हिया में तो होळी ऊठै, मूंडा पै दिवाळी बतावणी पड़ै। राव खंगार पूरी नीगै राखै। दोई जणां आप आपरा मन ने समझावा री करै पण मन समझै नीं। फळ कांई मिलैला जो जांणै, छानो कोयनी, पण मनायो मन मानै नीं। आपस में कीधा कौल याद आवै।

आखैर रैवणी आयो नीं, औसर देख वींझो सोरठ कनें आयो। ऊनाळा रा तावड़ा में तपी, झाळां निकळती धरती ने सावण री उमड़ती घटा धपावा ने उलळतो आवै ज्यूं वींझो आयो। सोरठ वरसता बादळा ने देख मोरड़ी ज्यूं साम्ही भागी। दो पल सारू भूलग्या के वे कठै है? कुण है? वांने औसाण नीं रियो के वांरा माथा पै तो नागी तरवार लटक री है।

सोरठ ने चेतो आयो, "वींझा परो जा। ऊभो मत रै अबै अठै।"

वीझो तो पूंगीं पै रीझ्या फण हलावता नाग री नांई माथो हलायो,

"मरणो एक दांण है सोरठ, कोई ईं वगत आय म्हारो गळो ही काट दे तो म्हंने अफसोस नीं। थारी गळबाथ मे कोई मार दे तो म्हारी मुगती व्हे जावै। ईं वेळा री तो मोत आयोड़ी ही मीठी।"

> सोरठ साकर री डळी, मुख मेल्यां घुळ जाय।
> सिवड़ै आय विलूंवतां, हेमाळो ढुळ जाय।।

खैर, राव खंगार ने खबर लागणी ज ही। सोरठ ने डराई धमकाई।

वीं खंगार रे आगै साफ साफ कैय दीधो, "म्हारो सात सात भव रो पति वींझो। मारो चावै जीवावो, आप धणी हो, मन व्हे ज्यूं करो।"

अवै सोरठ रो खंगार करै तो कांई करै। सिवाई मारवा रे और कांई कर सकै? वींझा ने तुरंत देस निकाळो देय दीधो। सोरठ री ड्योढी पै करड़ा पैरा लगाय दीधा वींझो देस में घुसै नीं जस्यो परवन्ध कर दीधो। जीं दिन सूं सोरठ तो राव खंगार सूं रूसणो कर लीधो। राव खंगार आवै, सोरठ री गरजां करै, मनावै। सोरठ तो विजळी ज्यूं कड़क नै राव खंगार पै आवै। मूंडा पै तो सावण री घटा ज्यूं उदामी छाई रैवे अर आंख्यां में सूं भादवारी झड़ी आंसुवां री लागती रैवै। उदियो सोरठ री वेदना समझै। वींझा कनें जाय उदियै सोरठ री दसा रो वरणन कीधो, जांणै

सोरठ री आतमा बींझा ने हेला दे दे कैयरी व्हे।

सोरठ नागण हो रही, ज्यूं छेड़ै ज्यूं खाय।
आजा बींझा गारूड़ी, लेजा कंठ लिपटाय॥

यो दूहो सुणतां हो बींझो तड़ाछ खायग्यो। सोरठ ने लावा ने उतावळो व्हेग्यो, उन्मत्त व्हेग्यो। वीं ने कांई नीं सूझी। एक नवाव हो जी ने लाळच वताय गिरनार पै चढाई कराय दीधी।

नवाव री फोजां गिरनार ने जाय घेरयो, जुद्ध व्हीयो, बींझो सोरठ ने लेवा री आसा में दौड़यो परण ननाव सोरठ ने आपरा कब्जा में कर लीधी। बींझो कांई करै। वीं नवाव ने जतरो कैवणो हो जतरो कह्यो। जो कुछ वींरी सामरथ में ही सव कीधो पर बींझां रो कोई उपाय नीं चाल्यो। बींझो, निरास व्हे उन्मत्त व्हेग्यो, जठीने झांकै जठीने सोरठ दीखै, सोरठ रो नाम ले ले भींता सूं माथो फौड़ै, नवाव रा मे'लां रे नीचै माथो फोड़ फोड़ तड़फ बींझो मरग्यो। उदियो बींझा रा मसांण में जाय वैठ्यो। मसांण में वैठ्यो बींझा सोरठ रा प्रेम गीत गावै।

वठी ने नवाव सोरठ ने लाळच, डरावणों, धमकाणो कर सव तरै सूं हारग्यो। सोरठ रो प्रेम वीझा सारू अतरो अटळ देख नवाव ही माथो झुकाय दीधो। नवाव सोरठ ने पूछी,

"वोल, थूं कैवै जठै थनें भेज दूं। राव खंगार कनें, थारा वाप चांपा कुम्हार कनें, कै थूं कैवै तो विणजारा रूड़ कनें? जठे जावणो चावै वता।"

सोरठ रोवती थकी वोली, "कठेही नीं जांवणो चावूं। बींझा रा मसांण में म्हंने भेज दे तो थारी मोटी मैरवानी।"

नवाव पालकी में वैठाय सोरठ ने बींझा रा मसाण में पौंचाय दीधी। आगै उदियो मसांण में वैठ्यो गाय रियो। सोरठ ने देखी तो उदियो पुळकित व्हेग्यो, झट गायनै वधाई,

भलां पधारी पदमणी, जहं वसिया विजचद।

"थें थांरो सत निभायो, नेह निभायो अर वचन निभायो। खम्माघणी! म्हारी धणियाणी, आज थांने बींझा रा मसाणां में देख म्हूं निहाल व्हेग्यो।"

सोरठ रोवा लागगी। उदिया ने याद देवाई, "थारो धणी तो कैवतो के म्हूं मरजावूं

नैं थूं मसाणा में आय हेलो मारैला तो म्हारी भसमी बोल उठेला। ऊदिया ! बींझा ने रोय रोय हेलो मार री हूं वो आय नीं रियो है, थारो वणीं कठै गियो ? बोलायां बोलै नीं।"

सोरठ सूरज रे साम्हे ऊभी व्हेगी। प्रार्थना कीवी, "हे सूरज भगवान ! थूं सब देखवा वाळो है, थारां सूं कोई छानैं नीं। जो म्हे बींझा ने मन वचन करम सूं नेह कीधो व्हे, जो म्हूं सुद्ध व्हूं अर सती व्हूं तो थूं अगनी प्रकट कर म्हेंने बींझा कनैं पुगाय दे।"

सूरज री किरणां सूं अगनी प्रकट व्ही। बींझा री भसमी भेळै सोरठ री भसमी मिलगी।

उदियो तंबूरो ले जीवतो रियो जतरै फिर फिर सोरठ बींझा रा जस गीत गांव गांव में सुणावतो रियो।

जलो

"बूवना री जोड़ रो वर कठै हेरूं ?"

सिंध समंदर रा नवाब भवर ने घणो सोच छोटी बेटी बूवना रे वर हेरवा रो। बूवना रूप रो भंडार! गुणां रो दरियाव!! बूवना चालै जठीने अंधारा में उजाळो व्हेतो जावै। हंसै तो यूं लागै जांणै फेफ रा फूल खिर रिया है, फिरै जदी लागै जांणै कंकू रा पगल्या मंडता जाय रिया असी एडियां री राती राती झांई पड़ै। बूवना बोलती जद छाळ मारता हिरण वीणां रे भरोसै पाछा फिर न्हाळवा लाग जाता। वीरा डील में सूं भींणी भीणी सुगन्ध आवो करै।

स्यांणा समझणां वादसा ने कह्यो, "बूवना पूरी पदमणी है, अस्त्री में जतरा लक्षण व्हेणां चावै सगळा ईं में है, पूरा ही वत्तीस लक्षण।"

नवाब रो बेटी पै लाड घणो, "चावै जो व्हो देस हेरूं परदेस हेरूं पण बूवना री जोड़ रो वर लावूं।"

ठावा आदमियां ने बुलाय बूवना री तसवीर दे, वांने हुकम दीवो, "देस जावो परदेस जावो। एक एक रजवाड़ो देखलो। बूवना री जोड़ रो वर हेरो। बूवना पूरी पदमणी है, वर ही पूरो छैल व्हेणो चावै। मन माफक वर नी मिलै जतरै थां पाछा अठै मत आवजो।"

खरचो खातो देय विदा कीधा। देस देसान्तर फिरता फिरता थटाभखर जाय पूगा। वठा रा वादसा मृगतमायची री वेन रा बेटा जलाल ने देखनै राजी व्हेग्या। आखी दुनियां में फिर आया पण अस्यो जवान सुलखणो कठै ही नजर नी आयो। बूवना री जोड़ में जंचै तो यो।

जलाल ने खानगी में लेजाय बूवना री तसवीर बताई। जलाल तो तसवीर देखतां ही लट्टू व्हेग्यो। मन में वैठगी। जलाल ने लाग्यो जांणै भगवान बूवना ने वीरे सारूं हीज घड़ी है। तसवीर लेय लीधी।

भला मिनख ही राजी राजी नबाब कनें गिया, "हुकम मुजब आपरे मन रे माफक वर तै कर आयां हां। जलाल ने भगवान जांणै बूबना वास्ते हीज सिरज्यो व्हे। आखी पिरथी पै म्हां फिर आया पण अस्यो जोधो जुवान म्हारी नजर में नीं आयो। गोडां गोडां तक तो हाथ पूगै, एक बिलांत लांबी गाबड़, पूरो पांच हाथ डीगो, चालै तो धरती धूजै। मूंछां भूंवारा सूं अड़ै। देख्यां भूख भागै। ससतर विद्या में परवीण। राजवी में जो सातूं वसतुवां री परीक्षा व्हेणी चावै वां सगळां रो जांणकार। तरवांरा रो पारखी, एक एक रा लोह री किसम् न्यारी न्यारी बताय दे। संगीत विद्या रो पूरो जांणकार, छत्तीसूं राग रागणी रो समझण्यो, आपरे कनें टाळचोड़ा कळावत राखै। घोड़ां री जात रो पूरो ग्यान। रतनां रो पारखी, नवरतनां रो न्यारो न्यारो भेद अर मोल बताय दे। कविता रा मरम ने समझण्यो, कवियां ने लाख लाख री रीझां करै। चित्तर कळा रो प्रेमी। इत्तर रो घणो पारखी, आप खुद इत्तर री भाटी कढावै वीं इत्तर री खसबोई छानी हीज नीं रै। पांचसौ पांवडा दूरां सूं खबर पड़ जावै के जलाल आय रियो है। बैठणै रा माळिया ने भीमसेनी कपूर मिलाय केसर सूं पोताय राख्यो है। म्हांने तो जलाल जस्यो वर कठै ही ओर दीख्यो नीं।

काछ द्रढा कर बरसणां, मन चंगा मुंह मिट्ठ।
रण सूरा जग वल्लभा, सो हम विरला दिट्ठ॥

"ये सगळा गुण जलाल में म्हांने दीख्या।"

नवाव रो मन राजी व्हेग्यो। भला मिनखां जलाल री तसबीर काढ नबाब रे नजर कीधी। घणो राजी व्हीयो। बूवना कनें जलाल री तसबीर भेजी। बूबना तो मगन व्हेगी। वा मानगी वींने विधाता जलाल सारूं हीज बणाई है। तसबीर ने पेटी में काठी कर मेल दीधी।

नवाब हरख्यो लगो। काजी ने वीज वगत बुलाय थटाभखर रवाना कीधो, "बूबना रा सगपण रा नारेळ जलाल ने जाय झेलावो। वड़ी वेटी मूमना री सगाई लारै री लारै आछी जगा देख कर आवो।"

काजी थटाभखर आयो। वादसा मृगतमायची ने जलाल रा सगपण री अरज कराई। मृगतमायची वूबना री तसवीर देखी तो वींरो मन हाथ वारै निकळग्यो।

"काजीजी, वूबना रो नारेळ तो हमकूं झेलावो।"

काजी सोच में पड़्यो, या आछी व्ही। यो बूढो खांपो. मूंडा में दांत एक नीं, कवर में पग लटकाय राख्या, बूबना सूं परणणो चावै। काजी सलाम कर अरज कीधी,

"आलीजापनां रा हूकम सूं इनकारी नीं पण बूवना पूरी पदमणी है, जलाल सा'व पूरा छैल है। यां री दोवां री जोड़ी वरावर री है। स्यांणां लोगां री राय सूं सारा लक्षण मिलाय यां रे नारेळ भेज्यो है।"

"हम कोण से छैल नहीं है?"

"हजूर तो घणा आछा है पण उमर कुछ ज्यादा व्हेवा सूं..............."

"नहीं, बूवना रे साथ हम सादी करेंगे।"

काजी हैरान व्हे कह्यो, "वडी वेन मूमना रे साथै आपरो ब्याव करदां, बूवनां रे लारै जलाल सा'व रो।"

वादसा नीं मान्यो। काजी ने वठारा वजीरां घणो ऊंचो नीचो समझायो मोटो वादसा है आडी वगत फोज फांटा, हर तरै सूं थांरे फायदो है। काजी ने लाळच दे देवाय राजी कर लीधो।

बूवना रो नारेळ वादसा ने झेलायो, मूमना रो जलाल ने झेलायो। सावा थिरप काजी चाल्यो।

जलाल ने घणो दुख व्हीयो पण मामा ने कांई कैवै। दूजां लारै कैवायो पण मान्यो नीं।

जान चढ़ी, जलाल वींद वण्यो। वादसा तो आपरा खांडा ने भेज्यो। एक हाथी पै वींद जलाल, दूजा हाथी पै वादसा रो खांडो। जान पूगी, हरख वधावणां व्हेवा लाग्या। काजी जाण्यो अवै तो कैवणों ही पड़ेला। छिपायां काम नीं चालै। नवाव ने कह्यो, "मूमना ने जलाल परणेला बूवना रो ब्याव वादसा लारै करणो तै व्हीयो है।"

नवाव ने घणी रीस आई, "नालायक गजव कर दीधी।" काजी ने जूता सूं ठोकायो। घर खोस लीधो, काळो मूंडो कर गधा पै चढ़ाय गाम बारै कढायो।

काजी कजिया चुकावतो, पड़ियो कजिया मांहि।

बूवना ने खवर लागी जांणै माथै वजर पड़्यो। माथो फोड़ लीधो। मन में निस्चै कीधो परणवा रो दसतूर यां रो मन व्हे जीं रे लारै करो म्हें तो जलाल ने पति धार लीधो, वो म्हारे सात सात भव रो भरतार, म्हूं वींरी स्त्री। दासी नेत्रवांधी ने कह्यो, "थूं जा जलाल साव ने कैंव बूवना थांरी है अर थांरी हीज रैवैला। वांरो खांडो मांग लाजो पैलां वांरा खांडा रे साथै फेरा खाय लूं।"

वूवना तो जलाल रा खांडा ने मंगाय फेरा खाय लीधा ।

अवै जलाल चंवरी में आयो । नवाव घणां दुख सूं वादसा रा खांडा कनैं वूवना ने ऊभी कीधी । जलाल कनैं मूमना ने लाया । जलाल, वूवना ने चंवरी में आवती देखी जांणैं पावासर री हंसणी आय री व्हे । धीरैं धीरैं पगल्या भरती वूवना यूं आयरी जांणैं सिंगळ दीप री हथणी आय री । केळ री कांव री नांई वा झोला खाती आय री । वीं चींतालंकी वूवना ने देख जलाल मायो ठोक्यो "अहियो भाग अल्लाह" ।

परण घरैं आया । वूवना घणी दुखी, मोटा वादसा री वेगम व्हेगी पण मांयलो जीव सोरो नीं । वूवना रे न्यारा मे'ल न्यारी ड्योढी, सव ठाठ वाठ पण सत कुछ व्हेतां थकां ही जांणैं कांई नीं । मन अमूझ्यां वूवना वैठी रै । वादसा रे आगैं ही घणी वेगमां, रावळो भर्‌यो । वूवना री वारी, वारा मींनां में एक दांण आई । वादसा आयो, वूवना चतराई सूं टाळ दीवो । वूवना रा मन में जलाल वस रियो । मिलवा रो ओसर नीं । मन मार्‌यां, काळजो दवायां दिन काटै ।

जलो ही मन में घणो उदास रैवै, मूमना सूं वात करै, वतळावै पण जीव उड्यो उड्यो रैवे । मन में वो ही घणो दुखी, भाग ने दोस दे । वूवना रा झरोखा नीचै ही सिणगार चोकी, मोटा मोटा उमराव वठै चौकी पै वैठा रैवे, वातां करै चौपड़ां खेलै, सांझ पड़्यां आपरे घरां जावै । जलाल ही परभाते उदास व्हीया वीं चौकी पै आय वैठै, मोको देख ऊपर री जाळी साम्हो झांके कठै ही वूवना रो झांको ही पड़ जावै । सांझ पड़्यां सगळा ही परा जावै जदी वो ही निसासा न्हांकतो, दूहा वोलतो, परो जावै, वूवना रा दीदार ही किसमत में नीं लिख्या ।

लोचन प्यासे दीद के, निरखें नित्त की नित्त ।
दरसण ही पावै नहीं, मिलवै कहीं न मित्त ।।

वूवना रा एक झांका सारू जलाल तरसतो रै । एक दिन वूवना, नेत्रवांधी ने पूछ्यो "जलाल सा'व ने देख्या ही नीं, वै कदे ही अठीने आवै ही नीं है कांई ?"

नेत्रवांधी वोली, "वे तो आखो दिन नीचै सिणगार चौकी पै रैवै, आंपणां झरोखा साम्हा मूंडो कीवा वैठा रै, आवतां जावतां निसासा भरता दूहा कैवो करै । सगळा उमरावां सूं पै'लां आवै, सगळा सूं पाछै जावै ।"

वूवना रा काळजा पै जांणै करोत चालगी । नैणां में आंसू आयग्या । क्यूं नीं म्हूं जलाल सूं मिलूं । म्हारो पति है, मन अर वचन सूं अंगीकार कर्‌योड़ो, करम सूं ही है, पै'लां व्याव म्हैं वींरा खांडा सूं कीवो । मृगतमायची सूं म्हारो लेणो देणो

ही कांई। यूं पकड़ लाय घर में बैठाय देवा सूं कोई पति पत्नी थोड़ा ही व्हे जावै। जलो म्हारो, म्हूं जला री। म्हांने मिलवा सूं रोकण्यो कुण? नेत्रवांधी ने कह्यो, "थूं जा जलाल सूं मिल वांने अठै ला।"

नेत्रवांधी नीचै उतरी, मोको देख जला ने पूछ्यो, "जलाल सा'व, आप उदास उदास रैवो निसासा न्हांको। अठै आवो जदी तो आगै देखो, जावा लागो जदी पाछै झांकता जावो। आपरा मन मे दुख कांई है? चावो कांई हो?"

जलाल बोल्यो, "कांई चावां अर कांई नीं चावां जो कुण सुणै म्हारी। म्हांको मन तो रात दिन सैणां में लाग्यो रै।"

कीं चवां कीं न चवां, कवण सुणंदा कत्थ।
मनड़ो चावै रातदिन, सैणां हंदो सत्थ॥

नेत्रवांधी धीरेक कह्यो, "आज रात रा थे वाग में आवजो, लेवा ने म्हें आवांला।"

जलो झट आपरे मे'लां जाय सनान सपाड़ो कर पोसाक कीधी। इत्तर में तो यूं गरक रैवतो ही हो और ही इत्तर लगायां। कद घड़ी रात पड़ै, एक एक पल वरस ज्यूं लाग री। अंधारो पड़तां ही अकेलो चाल्यो, यूं लाग रियो जांणै पग धरती पै नीं पड़ रिया, पांखड़ा आय गिया व्हे। तनामनां नाम रो जलाल रो मित्तर जो हमेसा साथै रो साथै रै, वीं अर फूलमद खवास देख्यो, यूं तो जलाल कदे ही अकेला कठै ही नीं जावै, आज राजी व्हेता, मुळकता अकेला कठै जाय रिया है, यांरा पग ठिकाणै नीं पड़ रिया है। वूवना रो वैम आयो जदी तनांमनां जावता जलाल ने कह्यो, "जावो जो चोखा पण सोच समझ पग दीजो। घर में हांण, जग में हांसी व्हे जसी जगां मत जावजो।"

जलाल ने अवखी लागी, पाछो वोल्यो नी। वाग में जाय, चमेली री, जूही री गैरी झाड़्यां में छिप वैठग्यो।

नेत्रवांधी चार दूसरी लुगायां ने ले फूल लावा रे मिस वाग में चाली। ड्योढी रो डोढ्यो वूवना रे डायजै आयोड़ो। आंख्यां रो आंधो पण हिया री आंख्यां खुली लगी। सूझतां सूं चोगणी नीगै राखै। पग वाजतां ही डोढ्यो पूछ्यो, "कुण, नेत्रवांधी?"

नेत्रवांधी हूंकारो भरयो।

"अवार ईं वेळा कठै जाय री है?"

'वादसा मे'लां पधारे जो सेज विछावा ने फूल लेवा जाय री हूं।"

"ला, म्हारा हाथ पै हाथ मेलती जावो।"

कोई मरद रावळा में परो नीं जावै ज्यूं हाथ लगाय डोड्यो पारख कर लेतो। पांचूं ही लुगायां, डोड्या रा हाथ पै हाथ मेलती बाग में आई।

झटपट मोटा छावड़ा में जलाल ने बैठाय, ऊपरे फूल न्हांक, माथै छावड़ो मेल ले चाली।

पांचूं ही जण्यां डोड्या रा हाथ पै हाथ मेल्या। डोड्यो बोल्यो "ठैरो, ईं छावड़ा में कोरा फूलां रो बोझो नीं। फूलां रा बोझ सूं पग अस्या धम धम नीं वाजै। छावड़ो उतार, नांयने कींने बैठाय राख्यो है?"

नेत्रवांथी बोली, "आंख्यां तो फूटी है पण हियो ही फूट्यो है कांई?"

डोड्या ने आई रीस, "रांड, मारी जावेला। म्हंने ही झूठो कर री है। उतार छावड़ो बता म्हंने।"

जलाल जांण्यो काम बिगड़्यो। आखिर बूबना रा पीयर रो है। लिहाज तो राखैला हीज। झट छावड़ा बारै निकळ बोल्यो, "साबास, पैरादार व्हे तो अस्यो। थारी हुस्यारी पै मन राजी व्हेग्यो। आज आज माफ करदो।"

आंधो पैरावाळो बोल्यो, "जलाल सा'ब ये गैला अणूंता है। ये रस्ता छोड़ दो।"

जलाल माथो हिलाय धीरेक बोल्यो, "सिर दीधो बूबन सट्टे"

"थे मरोला अर म्हंने मरावोला। अबखी तो धणी ही लाग री है पण बूबना रे लारे आयोड़ो हूं। बूबना रो मुलायजो नीं टूटै। आज आज तो जावो पण आज पछै पग दीधो तो खैर नीं।"

जलाल बूबना ने देखी, बुबना जला ने देख्यो। सुध भूलग्या, आपा में नीं रिया। सपना में देखता जो सागैसाग करें ऊभा। बूबना ने लाग्यो जांणै तीन लोक री संपदा बीं रा करें आयगी। जलाल जांण्यो मिनख जमारो सारथक व्हेग्यो, अबै मरवां रो ही धोखो नीं?

बूबना तो जला रे मेंदी ज्यूं रचगी, काजळ ज्यूं घुळगी। दूध में पाणी ज्यूं मिलगी। वांने खबर ही नीं कठीने ऊगै कठीने आंथे। तीन दिन व्हेग्या। नेत्रवांथी पूरी निगै राखै के कींने पतो नीं लाग जावै पण कदे ही छिपायां छिपी है ये वातां?

इश्क मुश्क खांसी, खुश्क, खैर खून मदपान।

लाख जतन करो तो ही असी वातां नीं छिपै। दूजी बेगमां ने वैम पड़ग्यो। जला

री, गळती रात में खांसी सुण वां जाय वादसा ने कह्यो,

"जलो तो वूवना रा मे'लां में है ।"

वादसा नीं मान्यो । सोक्यां कह्यो, "आप अचाणचक रा पधार देखलो है के नीं ।"

वादसा ने रीस अणाय, सिखाय नैं वेगमां भेज्यो । वूवना रा मे'लां में आय तो रियो पण मन में मृगतमायची रे पसतावो, "सांचै ही वूवना है जला रे लायक, म्हें परण खोटो काम कीघो ।"

वादसा ने आता देख नेत्रवांधी भागी । कूणा में फूलां रो ढेर हो जीं में झट जला ने छिपाय दोघो । ऊपरै घणां सारा फूल न्हांक दीघा ।

वूवना उठ वादसा सूं मुजरो कीघो ।

अवै वादसा वोलै तो कांई नीं । चारूंकानी चमक्योड़ा हिरण ज्यूं देखै । वठै तो कांई नीं, वूवना रो ढोल्यो अर कूणां में फूलां रो ढिगलो । जलाल फूलां रा ढिगला में दव्योड़ो घवरावै, सांस आगती आयरी जो सांस रे लारै फूल हाल रिया । या देख नेत्रवांधी जांणी जलो डरप रियो है जो हीमत देवावा ने वोली, "भंवरो कंवळ कळी में फंस तो गियो पण कायर कांप रियो है । अरे डरप मत, जीवतो रियो तो कंवळ वन रो आणंद लीजे, मर गियो तो ही कांई फिकर ! व्हाली जगां ही तो मरेला ।"

भमरा कळी लपेटियो, कायर कंपै कांह ।
जो जीत्यो तो जुग समो, मुवो तो मोटी ठांह ।।

दूहो सुणतां ही मृगतमायची पूछ्यो, "यो दूहो थें कीं ने सुणायो ?"

वूवना झट वात संभाळी, "हजरत, म्हारा कंवळ रा वीड़ में भंवरो आय वैठ्यो, रात ने कळी में वंद व्हेग्यो, जीं ने केय री है ।"

"जा, वीं ने छुड़ाय आ ।"

वादसा री संका मिटगी, कांई नी देख्यो जो पाछो आपरे मे'लां चाल्यो, "म्हारो वेटो जलालियो अस्यो नीं, ये वेगमां, साळियां वी ने मरावणो चावै ।"

जलाल वूवना रा मे'लां में हीज । घणां दिन व्हेग्या । तनांमनां मित्तर, फूलमद खवास, गखड़ो ढाढ़ी जांणै के जलो कठै है । घणां दिन व्हेग्या तो यां रा मन में संका, कठै ही जलो मारियो गियो है । मूमना पुछावै जलाल सा'व कठै ?" ये वीने अठीली वठीली झूठी सांची कैय समझाय दे पण मन में घणां उदास । एक दिन

वादसा तनांमनां ने पूछ्यो, "जलाल कठै है ? अतरा दिन व्हेग्या देख

वात जमाय पाछी अरज कीधी, "आप जस्या मामा है. जला ने कांई सोच । नादान ओस्था है मे'लां में खावै पीवै आणंद करै ।"

वादसा राजी व्हीयो, "म्हारो बेटो जलालियो घणो सोकीन है, वादसा रा सच्चा फरजन है ।"

घणों ही इत्तर, चोवो, कपूर, केसर, कस्तूरी जला सारू वगसी ।

यूं करतां वारा मींना व्हेग्या ।

"सज्जण संग रहंतड़ा, वरस भयो इक मास"

खवर नीं पड़ी यां दिनां ने निकळतां, जलै वूबना सूं सीख मांगी । रेसम री डोर सूं झरोखा नीचै जलो उतरयो । जलो ज्यूं आवै ज्यूं सुगंध री घोर वंधती आय री । तनांमनां कह्यो, जलो जीवै, वींरा लगायोड़ा इत्तर री सुगंध है ।" सुगंध रे घोरे घोरे वे चाल्या । जलो आवतो दीख्यो, आंख्यां लाल व्हेय री है, लपेटा रा पेच अट-पटा वंध्या है, अमल में छक्यो लगो है । पग पाधरा नीं पड़ रिया है ।

ये हाल देख तनांमनां वोल्यो, "आक रो दांतण नीं करणो, सांप रो मांस नीं खावणो । जला, जठै जीव रो विणास व्हेतो व्हे वठी नै पग नीं देवणो ।"

अक्कां न दांतण कीजिये, सांपां न खाइये मांस ।
जला जेथ न जाइये, जेथ जीवड़ा विणास ।।

जला ने वींरी वात सुवाई नीं, सीख आछी नीं लागी । जलै जुवाव नीं दीधो, वोल्यो नीं ।

गखड़ै ढाढ़ी देख्यो, सीख ईं वगत में आछी थोड़ी लागै । अवार तो वूवना रो मोह रूंम रूंम में रम रियो है । जला ने सुवावतो दूहो वोल्यो,

"आकास में वेलड़ी है जीरे लाखीणां फळ लाग रिया है । जलाल, थारा सिवाय यां फळां ने चाखण्यो ही कुण ?"

अंवर लग्गी वेलड़ी, तिण फळ लग्गा लाल ।
तो विण किण ही न चक्खिया, हो गहाणी जलाल ।।

जलाल वोल्यो, "वाह, वाह, कांई वात कही है ।"

पूंगी पै काळो नाग झूमै ज्यूं जलाल ई दूहा पै झूम गियो ।

जखड़ो दूजो दूहो बोल्यो,

सो मण तो केसर उडी, सो दस उड़ी गुलाल ।
बूबन हंदा महल में, रात्यूं रम्यो जलाल ।।

जलाल आपरे गळा रो कांठलो खोल ढाढ़ी रे गळा में न्हांक दीधो ।

तनांमनां देख्यो, यो मामलो तो हाथां बारै जाय रियो है । समझावणो तो आंपणो फरज है । चिड़तो थको बोल्यो, "जलालिया, गैलै गैलै चाल । अ'कास मे फूलड़ा लग रिया है जो थारे हाथै किस तरै लागै ?"

चलियो जा जलालिया, सैणां हंदे सत्थ ।
अंबर लग्गे फूलड़ा, तो किम आवे हत्थ ।।

जलाल गाबड़ मरोड़तै कह्यो, "भगवान देवै जदी ऊंचा ही नीचा व्हे जावै । अण-व्हेणी, व्हेती व्हे जावै । वायरा सूं उड्या सेमर रा फूल री नांई अपणै आप घर में आय पड़ै ।"

तनांमनां जांल्यो, मानेगा नीं तो ई'रा जीव ने खतरो है कदे ही मार्यो जावैला । वी जोर देनै कह्यो, "कान खोलनै म्हारी वात सुणले । ग्रह दसा पूछनै रातड़िया रमवा पधार जो ।"

जला कन्नां देय कर, सुण अम्ह बत्तड़ियांह ।
डक्कण वातां बूझ के, रमजो रत्तड़ियांह ।।

फिरतो ही जलो जुवाव दीधो "माथा पै कफन वांधनै फिरै ज्यां सूं देवता ही डरपै। अठै तो जीव हथेळी पै लीधां फिरा हां सोच कीरो है ?"

तनांमनां जाणग्यो, "यो मानवा ने नीं । लाख कैवो चीकणा हांडा पै छांटो लागवा ने नीं ।"

जलो रोजीना रात ने बूवना सूं मिलै । सट्ट करै पट्ट करै पण जावै । रंगभीनी बूबना ने नीं देखै जतरै जला ने जक नी, जोड़ी रा जलाल ने नी देखै जतरै बूबना ने जक नीं । सात सात पैरा लागै, ड्योढी रे सात सात ताळा लागै, सोकड़ल्यां ताका झांका करै के जलाल ने पकड़ां । मोत साम्ही ऊभी हंसै पण जो धार ले वीं ने मोत रो कांई डर ? कुण रोक सक्यो है अस्या प्रेमी ने आज तांई ? जलो जावतो रुकै नीं, जावै अर जरूर जावै ।

मृगतमायची ने लोगां कह्यो के एक रात ये दो ही जणां दूरा नीं रै ।

मृगतमायची बोल्यो, "दूरा नीं किस तरै रै, आज म्हारे साथै जला ने सिकार में ले जावूंला। देखां रात ने किस तरै आवै ?"

जला ने ले सिकार चाल्यो, रात पड़गी, आछो आंबा रो पेड़ देख, वींरे नीचै बिछायत कर बादसा सूतो, आपरे कनें जलाल ने सुवायो। आंबा री डाळ रे घोड़ा बांध दीधा।

चांदणी रात छिटक री, आंबा रा मोड़ री भीनी भीनी सुगंध आय री, मधरो मधरो पवन चाल रियो, चांदणी रात में तळाव रो ऊजळो पाणी अस्यो लाग रियो जांणै दूध रो कटोरो भरयो व्हे। मंझरात, झींगर बोल रिया, सियाळयां री, "हूकी हूकी" व्हेय री। कोचरी रैय रैय नै बोलती लगी माथा पै उडती निकळ जावै। झांय झांय रात कर गी।

मृगतमायची ने नींद आयगी, सब साथ वाळा सोयग्या, जला री आंख्यां में नींद नीं, वींरो मन बूबना में "वा गुललंजा म्हारी बाट देख री व्हेला। मिलवा रो वगत टळग्यो, वीं मानेतण रूसणों कर राख्यो व्हेला। डावरनैणी बूबना रा नैणां में आंसू भर रिया व्हेला, कर सोच री व्हेला। वा तनक मिजाजण नाराज व्हे री व्हेला, मन में ओळंबा देय री व्हेला। नाजकड़ी घबराय री व्हेला, बिछाणां पै पड़ी तड़फ री व्हेला काजळ रेखी बूबना रोय री व्हेला। वीं मीठा बोली ने भरोसो है म्हारा प्रेम पै जरूर बाट देख री व्हेला, नेत्रबांधी रे हाथ में रेसम डोर दे गोखड़ा में ऊभी कर राखी व्हेला।"

झिलती जोइ रा जला री आंख्यां आगै तसबीर सी मंडगी जांणै वा झाला देणी झाला दे दे वीं ने बुलाय री है।

जला ने दूहो याद आयग्यो, पैंदल तो पांच कोस दूरो व्हे नै आंपणी सायधण सूं जाय नीं मिलै। घोड़ा रो असवार दसकोस री दूरी पै न्यारो रात काढले तो वस जांण नात्रो कै तो लुगाई कुभारजा है कै मिनख नाजोगो है।

> पंच कोसां प्यादो रहे, दस कोसां असवार।
> के तो नार कुभारजा, कै रांडुल्यो भरतार।।

यो दूहो याद आवतां ही जलाल तो सूतो लगो उछळ नै ऊभो व्हेग्यो। चित्राम री फूतळी बूबना जसी तो मारूणी! म्हूं वीं पै पिराण निछरावळ करण्यो!! अतरा नजदीक रैतां थका रात न्यारी कटै ?

आंबा री डाळ रे बादसा रो अरबी घोड़ो बंध्यो हीज हो। घरा हेताळू जलो तो झट चढ़्यो, राना नीचै घोड़ो व्हे पछे घर कस्यो दूरो ? घोड़ा री रास ने थोड़ी ऊंची लेतां ही परवत पार।

यूं क्यूं मन में जांगजै, घोड़ां थी घर दूर।
टुक ऊंचै रासां लिये, तो आवै परबत चूर।।

अरबी घोड़ा री रास खैंची, घोड़ो उड़्यो। जलाल रा इत्तर री लपट दूरां सूं आई, बूबना बोली, "नेत्रबांधी, छींको नीचै उतार, जलालो बिलालो आयग्यो।"

छींका में बैठाय जला ने ऊपरै लीधो। बूबना ने लाग्यो अंधारा घर में उजाळो व्हेग्यो। जलो घड़ी दोय बातचीत कर पाछो घोड़ो दपटायो।

घोड़ा रे मूंडै झाग आयग्या, फुरणा बोलवा लागग्या, पसीना सूं झगाबोळ व्हेग्यो। पाछो आय घोड़ा ने डाळी रे बांध दीधो, आप सागी जणां बादसा रे कनें सोयग्या। मृगतमायची जाग्यो आपरा घोड़ा ने संभाळै तो पसीना सूं तर, काछा में पसीनो टपक रियो, धूळा सूं भरियो लगो। मृगतमायची ने वैम पड़्यो। पूछ्यो, "म्हारो घोड़ो अस्यो लागै जांणै चाल नै आयो व्हे।"

जलो झट बोल्यो, "बादसा सलामत, म्हारा घोड़ा ने ही देखावो, यूं ही लाग रियो है। खुर्रो कीधां बिनां परभाते घोड़ा यूं ही लागै। काले कस्या आपां घोड़ा ने थोड़ा दोड़ाया ? अरबी घोड़ो, अमीर जीव, घणां दिनां पछै ठांण सूं खुल्यो।"

मृगतमायची ने वैम तो पूरो व्हीयो पण मन ने समझाय लीधो। जलो कैवै जो ठीक है।

खलक री हलक कुण पकडै ? जला बूबना री चरचा चालवा लागी। मृगतमायची ने कापरी गलती पै पछतावो ही घणों नै यांरा पै रीस ही घणी। जला ने अठा सूं दूरो करदूं, या सोच जला ने बुलाय, गिरवरगढ़ री चढ़ाई रो बीड़ो झेलायो। हुकम दीधो,

"जोइयां रे साथै झगड़ो चाल रियो जो थां जांणै ही हो, मोटा मोटा उमराव भेज्या पण जोइया तावे नीं व्हीया, अठा सूं जावा वाळा कै तो मारचा गया कै भागनै पाछा आया। थां जावो गिरवरगढ़ ने तावे करो।"

जलाल बीड़ो झेल्यो, फोज री त्यारी कीधी। हथियार संभाळचा। नाळां, घुड़नाळां, गजनाळां, रामचंगियां जुजरवा, तोपां लारै लीधी। घोड़ा रे पाखर घाली। जिरह

वख्तर पैर, टोप लगाय, जलो सिलहपोस व्हे बादसा सूं मुजरो कर कूंच कीधो। मोरत सजाय दो रुस दूरा दीधा।

बूबना नेत्रवांधी ने कह्यो, "जलाल सा'ब भारी मूंम पै जाय रिया है। पाछा कुण जांणी कदी आवै। आपां चालां वांरे डेरै, एक नजर तो देख आवां। जलाल कदे ही दूरा नीं रैता, दस कोस व्हेता तो आय मिलता। आज घणां ही दो कोस दूरा है पण जंग रा मैदान कूंच करयोड़ा पाछा किस तरै फिरै। नेत्रबांधी, हमेसा वे आय आपां सूं मिलता, आज आपां चालां लसकरिया सूं मिल आवां।"

छींका सूं नीची उतर बूबना नेत्रवांधी ने साथ ले चाली। नेत्रवांधी आगै जाय जला ने खबर दीधी।

"जला रे म्हें तो राज रा डैरा निरखण आई रे जलाल"

जलो तो आणंद सूं उछळग्यो। वधाई में गळा री माळा उतार नेत्रवांधी ने देय दीधी। बूबना रो अस्यो नेह देख जला री छाती भरगी, हीमत देख आंजस सूं आंख्यां चमकगी।

दो घड़ी वातचीत कर बूबना सीख मांगी। पग आगै देतां पाछा पड़ै। अमरत पीवतां ही कदे तृप्ति व्हे? नीठ नीठ डेरा बारै नीकळी। गळगळी व्हे बोली,

सज्जन फळजो फूलजो, बड़ जिम विसतरजोह।
मासे बरसे जो मिलो, तो इण ही रंग रहजोह॥

जलाल भारी फोज ले गिरवरगढ़ पूग्यो, खबर लगाई गढ़ में सामान घणों, अन्न भरयो, पाणी रो टोटो नीं, जोहिया चाळीस हजार भेळा व्हीयोड़ा। बारा वरस घेरो लाग्यो रै तो वांने सोच नीं। जलाल फोज रो हमलो करै तो जोहियां रो गढ़ वांको, मोरचा अस्या जम्योड़ा के हमलो करवा वाळा पग एक आगो नीं दे सकै। जलाल तरकीव सूं काम लीधो। आपरा ठावा मिनख ने जोहियां कनें भेज्यो। वीं जाय जोहियां ने कह्यो, "जलाल सा'ब थां सूं झगड़ो करणो चावै नी। वादसा भेज्यो है, कांई करै आवणो पड़यो। वठै नीं अठै बैठया हां। थां म्हारी कानी रो कांई सोच करो मती।"

जोहियां रा आदमी आयनै देख्यो तो जला रा डेरा में हमला री कोई त्यारी नीं दीखी। जोहियां ने ही भरोसो आयग्यो। वूबना री वात वां पे लां ही सुण राखी ही और ही निस्चै व्हेग्यो कि जलाल ने वठा सूं टाळवा ने अठै भेज राख्यो है।

जलाल तो जोहियां रे अठै आवणो जावणो वड़ायो। कैवतो रवै, "हुकम है जो पड़्या हां अठै।"

यूं करता करतां जेठ मीनो आयग्यो। असाढ़ आयो, धमकनै वरस्यो। जोहियां सोची, वाजरी वाणी चावै। यूं गढ़ मे छाना मानां वैठ्या कांई फायदो। हमलो तो व्हे नी रियो है। चार हजार घोड़ा आदमी तो गढ़ में रिया, वाकी रा खेतां में वाजरी वावा ने परा गिया। जलाल जोहियां री पूरी खवर राखै।

वीं एक दिन अचाणक आपरी सारी फोज ने थटाभखर पाछा जावा रो हुकम दीधो, "वादसा रो हुकम आयग्यो है पाछा वुलाया है।"

कूंच रो नगारो वजाय पांच कोस दूरा जाय डेरो दीधो। गढ़ रा जोहिया जाण्यां, घणां राजी व्हीया, गढ़ रा दरवाजा खोल दीधा, आप आप रे हल्ले लाग्या। जोहियां ने विखरवा देय, जलो आपरी पूरी फोज ने सजाय एकदम रात ने गढ़ पै हमलो वोल दीधो, खटण जोहिया ने मार लीधो, गढ़ पै कब्जो कर लीधो। जलाल री आंण फिरगी। थटाभखर कासीद दोड़ायो। मृगतमायची घणीं राजी व्हीयो, जला ने वठा रो पूरो जावतो कर फोज पाछी लावा रो हुकम भेज्यो।

दूसरी वेगमां मृगतमायची रा कान भरवा लागी, "जलो आंवतां ही पे'लां वूवना कनें जावेला, आप सूं मुजरो करवाने पछै हाजर व्हेला, वीरे घरै पछै जावेला, वूवना सूं मिलवा ने पे'लां जावेला।"

मृगतमायची ने ही पूरी संका, जलाल वूवना सूं मिल नीं सकै ईं वास्ते तळाव में मे'ल हो जी मे वूवना ने भेज दीधी। मे'ल रे पूरा पैरा रो इन्तजाम कर दीधो।

वूवना मन में कह्यो, "कोई परवन्ध म्हंने जलाल सूं मिलवा ने नीं रोक सके। यो तळाव रो पाणी अर ये पैरावाळा कांई है जो लोह रा पींजरा में म्हंने घाल दो, छुर्यां री वाड़ करदो, म्हारो माथो काटलो पण जला विना म्हूं नी रैवूं।

कर लोह हंदा पींजरा, कर छुरियां दी वाड़।
जला विन हूं ना रहूं, भावे गरदन मार॥

तळाव री पाळ पै पैरावाळा वैठाय दीधा। वूवना पाणी रे वीचै मे'ल में रै।

जलो उमग्यो लगो मंजल चल्यो आवै।

"चाल घोड़ा उतावळो" कैवतो, गला घाटा चीरतो, नदी दाळा पार करतो, परवतां ने उलांघतो, जलो वूवना सूं मिलवा ने आगतो, घोड़ो दपटायां आवै। वूवना पलकां रा पगमंडा विछायां वाट देख री। जला ने लागै घोड़ा सूं गैलो क्यूं नीं कट रियो है, यो अतरो धीरै कांई चाल रियो है। वूवना ने दीखै ये दिन अतरा लांवा क्यूं

व्हेय रिया है, सांझ क्यूं नीं पड़ै।

जला ने गैला में खबर लागगी वूवना ने पाणी बीचै मे'लां में भेज दीवी है। पैरा रो पूरो परवन्ध कर राख्यो है। जलो कह्यो, म्हने पैरा चौकी वूवना सूं मिलवा ने रोक देला ? ये पैरा कांई है, सांपां री वाड करदे सिंघां ने आडा वैठाय दे, और तो और जमराज ने पैरा पै ऊभा करदे तो वूवना सूं मिल्यां विना नीं रैवूं।"

जलो घोड़ो दपटातो, दो घड़ी रात रा तळाव पै आयो देखै तो पैरा लाग रिया। जलो घोड़ा सूं उतर पैरावाळा कनें सूधो गियो।

"हवलदारजी, दो घड़ी वूवना सूं मिल आवा री इजाजत दो।"

"जलाल सा'व, माफ करो हुकम नीं।"

जलो वोल्यो, "वूवना सूं मिल्या विना म्हूं नीं रैवूं। चाहे जो व्हीजो। म्हैं म्हारो जीव पिराण वीं सारूं अरपण कर दीधो। जावा दो तो दो घड़ी हंस वात कर लूं नीं तो उठो, तरवार उठावो। मरग्यो तो ही अमर व्हे जावूंला। करो फैसलो एक वात रो।"

पैरावाळा देख्यो, जलाल रो हेत तो घणो गाढो। वादसा वूबना ने जबर दस्ती परणी, परण्यां पछै एक रात ही नी दीवी। वूवना जलाल पै जीव दे, जलो वूवना पै पिराण दे। जलाल कै तो जायनै मिलेला कै पिराण दे देला। आपां अस्या गाढ़ा हेत वाळां रे बीचै पड़ पराछत क्यूं लां। जलो आखर वादसा रो भाणेज है, ईं री मां वैठी है। जलाल ने मारां तो साम्ही आंपां पै आफत आय जावै तो कींने खवर। पैरा वाळा जलाल ने रोक्यो नीं जलो तो हो ज्यूं रो ज्यूं पाणी में कूद पड़्यो। मगर मच्छ पाणी में सरडाटा ले ज्यूं वूवना रा मे'लां साम्हो तिरयो।

वूवना तो नैण विछायां वैठी हीज ही, जला रा इत्तर री लपट वायरा रे लारे आई वूवना फड़फड़ाई, फोजां रो मांझी जलो आयो, वूवना जाणती जला ने, जलो अवेला अर जरूर आवेला। यो पाणी कांई है, वासदी रो तळाव भरयो व्हे तो वो नीं रुकै। नाव त्यार कराय राखी, जला ने लावा लेजावा सारूं। नेत्रवाधी ने कह्यो, "झट नाव खोल"। नाव ले जला रे साम्ही चाली।

तळाव मोटो, आधै आवतां आवतां जलो थाकग्यो, सांस भरग्यो, जांणी डूब्या। अतराक में तो नाव ले वूवना आयगी। हाथ पकड़ नाव में चढाय ले चाली।

जला अर वूवना रो हेत दिन दिन ओर ही गाढो व्हेतो जावै। ज्यूं मिले ज्यूं वत्तो वढै। एक दूजा में अतरा रंग गिया के एक रंग व्हेग्या, एक जीव व्हेग्या। कोई तागत नीं जो वां ने मिलवा सूं रोक सकै।

सोक्यां ने खटे नीं. वादसा आगै चुगली करती रै। अठीने वठीने चरचा ही चालै।

मृगतमायची घणों विचार में "जलो मरजावै तो पापो कटै ।"

एक दो तरकीवां कीधी पण भगवान ने राखणो जो जलो मरचो नीं। एक जणैं एकांत में वादसा ने सल्ला दीधी, "जलाल ने मारवा रो उपाय म्हूं बतावूं । घणों सोरो। कींरे ही माथै दोस नीं आवै अपणै आप मर जावै । यां रे दोवां रे ही हेत घणों, एक विदा दूजो नीं रै। म्हूं वतावूं ज्यूं करो।"

दूजै ही दिन मृगतमायची जला ने ले सूर री सिकार चाल्यो । वादसा तोत रच एक आदमी ने भेज्यो, वीं रोवतै लगै सहर में जाय खवर दीधी, सूर री सिकार करतां जलाल सा'व मारचा गिया। घायल सूर दांतळी सूं चीर दीधा।

सारा दरवार में रोवा कूटो मचग्यो । कफन री त्यारी करवा लाग्या । बूबना सुण्यो, जलो मरग्यो । अणचींत्यो आकास सूं बजर पड़चो । जलो मरग्यो नैं बूवना जीवती रैवै ? जला बिना बूवना कठे ? "हाय जला" कैवतां बूवना रो पिराण उडग्यो । हरम में हाहाकार व्हेग्यो ।

आदमी दोड़चा, सिकार मे जाय वादसा ने कह्यो "वठे जलाल सा'व रे फोत व्हेवा री खवर आई । खवर सुणतां ही वेगम सा'व खत्म व्हेग्या ।" जलो कनें ऊभो,सुणी वूवना मरगी, "म्हारे मरवा री खवर सुणतां ही बूबना मरगी । यो प्रेम !"

जलो तडाछ खाय नीचै पड़चो, "वूवना, थूं परी गी म्हू अठे कांई करूं ?" ये अवखंर निकळता निकळतां जला रो सांस निकळग्यो ।

दुनियां कह्यो प्रेमी व्हे तो अस्या व्हे । सांचा प्रेमी हा। दरसण करवा नें सहर भेळो व्हेग्यो । वांने मूंडा कैवा वाळा वांरा भगत व्हेग्या ।

मृगतमायची अबै समझ्यो वांरा प्रेम ने अर आंपणी गलती ने । वादसा हुकम दीधो, 'ये सांचा प्रेमी हा, यां ने एक साथै दफणावो ।"

वूवना अर जला ने एक कवर में दफणाया । वादसा फूल चढ़ाय वांरी कवर पै गोडा टेक खुदा सूं माफी मांगी, "परवर दिगार, म्हें जलाल अर बूवना रे वीचै आय गुनाह कीधो, माफ कर ।"

शब्दार्थ

अक्कां—आक
अगवाणी—स्वागत करवा ने साम्हा जावणो।
अड़वी तासा—एक तरै रो वाजो
अम्ह—म्हारी
अलिवंघ—एक डोरो जींने डाढी नीचे सूं ले पागड़ी माथै वांध दे जींसूं पाग पडणे रो डर नीं रै।
अहेड़े—सिकार
आड़े माळ—लम्बी चौड़ी जगां री सीयाळू खेती जीं ने कूवा सूं सींच नै पावा रो झंझट नीं व्हे। चोमासा रा पाणी सूं ही धान नीपजै।
ईसको—ईर्ष्या
एवड़ छेवड़—आसपास
ओड—एक जात जो माटी खोदवा रो काम करे।
अंवरां—कपड़ा
कडिग धींग—नगारा रा डंका रो वोल।
कत्थ—वात
कसूंवो—गळी लगी अमल
कर वरसणां—दातार
कवण—कुण
कळाया—विलाप
कळहळ—कोळाहळ
काळेर—काळो हिरण
कांकण डोरड़ा—व्याव रो मंगळ सूत्र।
किम—किस तरै
केसवाळी—घोड़ां रा गावड़ परला केस।
केसूड़ा—टेसू रा फूल
कोरणी आयगी—खुदगी
खड़ो—चालो
खमणी—क्षमासील
गदगद पोठ्यां—मोरां पै लाद नैं
गळडव्वे—कांधा पै पड़योड़ो कमर पै लटकतो चामड़ा रो पट्टा में तरवारां घाल्योड़ी
गनीम—सत्रु
गुललजां—फूलां जसी फूटरी
गैदन्तो—हाथी सा दांत वाळो सूर
घूमटा—गुम्वज
घोड़ा ने हरिया वांघ दीधा—घोड़ा ने फागुण मींने घापमा हरिया जौ चरावै, ठाणां सूं वारे नीं काढै, खुराक वढावै आराम दे।
घोड़ां रा पोड़—घोड़ां रे दोड़वारी आवाज।
घोड्यो—वखेड़ो।

चीतालंकी—चीता सी कमर वाळी
छेवरिया—सूर रा बच्चा
जमीत—फोज
जीण रो सिंघाड़ो—घोड़ा रा जींण रे टूंचको निकळ्यो व्हे जो ।
जोतदान—चित्तरां रो संग्रह
झींक लागी झटकेह—झटकां री झड़ी लाग री ।
टापर—सीयाळा में घोड़ा ने रात ने ओढावा रो कपड़ो ।
डागळै—छात पै
डांण—कर
ढल्यां—गुडियां
थोह—सूर रे रैवण री जगां
दरीखाना—सभा
धूंसा—नंगारो जो घोड़ा पै कस्यो जावै ।
धोरियो—रेत रो टीवो
निसाण—झंडा
नो दा'र बारा चीतरा—वीफरचोड़ा घणां नाराज व्हीयोड़ा
नौकरचा—सिकार में हाको देवण री नौकरी वाळा ।
परवानो—आज्ञा पत्र
पाखर मडी—घोड़ा पै जीण कस्या । पाखर घोड़ा रे पैरवा रा लोह रा कवच ने कंवे ।
पाखरिया—घोड़ा जां पै पाखर घली थकी व्हे ।
पाळा—पैदल
पाळो—ठंड
पोह फाट्यां—दिन उग्यां
बवड़ाय—अळगाकर
वत्तड़ियांह—वातां
वांवटचो—वांह
विड़द—जस गीत
भालो—तरकस
भूंई—भूमि
भूयांय—भुजंग
भोटपड़ी—जबरदस्त वार व्हेयरिया
मनचंगा—सुद्ध मन
मांगणी—जांचवा ने
मूंम—रणयात्रा
मूंहताजी—कामदार की एक पदवी
मंगरी—पहाड़ी
रत्तडियांह—रातां
रावळा—जनाना
रासवा—गधा
रीठ—झींक
रुकां—तरवारां
रोड्यां—टट्टूड़ा
लाख पसाव—एक मोटी इज्जत वाळो पुरस्कार जी में लाख रुपया रो माल व्हे ।
वागी—वाजी
सरणायां—सहनाई
सरभरा—खातरदारी
सिणगार चौकी—गढ़ में वण्योड़ी मोटी चोकी जीं पै सभा जुड़ै, उच्छव वगैरा व्हे ।

सुणांदा—सुणै

सुभराज—भाट, नगारची वगैरा मूजरो करे जीं ने सुभराज कैवे। सुभराज में रोजा रा बाप दादां रो नाम लेता लगा वंस रो बखांण करे।

सोव्रण—सोनो

संपाड़ो—स्नान

हमैं—अबै

हूंकार री कलंगी—हूंकार नाम रो एक पंछी व्हे। जीं री पाखां री कलंगी। वे पांख घणा कीमती व्हेता अर मुसकिल सूं मिलता। राज रा हुकम विना कोई या कलंगी पैर नीं सकतो।